हिन्दी दैनिक
प्रत्यूष नवबिहार
जोहार
रांची संस्करण
रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित
www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com
रांची • शुक्रवार • 19.09.2025 • वर्ष : 16 • अंक : 57 • पृष्ठ : 12 • आमंत्रण मूल्य : 3 रुपये 2 रुपये

एक नजर

प्रधानमंत्री ने नेपाल की प्रधानमंत्री सुशीला कार्की से की बातचीत

नयी दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को नेपाल की नवनियुक्त अंतरिम प्रधानमंत्री सुशीला कार्की के साथ बातचीत की। प्रधानमंत्री ने नेपाल में हाल के आंदोलन में हुई जनहानि पर शोक प्रगट किया। उन्होंने नेपाल में शांति और स्थिरता लाने के प्रयासों को तेज करने में भारत के सहयोग की बात दोहराई। उन्होंने अंतरिम प्रधानमंत्री कार्की और नेपाल की जनता को कल देश के राष्ट्रीय दिवस की शुभकामनाएं दीं। प्रधानमंत्री ने एक्स पर इसकी जानकारी देते हुए बताया, नेपाल की अंतरिम सरकार की प्रधानमंत्री सुशीला कार्की के साथ गर्मजोशी से बातचीत हुई। हाल ही में हुई दुखद जनहानि पर हार्दिक संवेदना व्यक्त की और शांति एवं स्थिरता बहाल करने के उनके प्रयासों के प्रति भारत के दृढ़ समर्थन की पुष्टि की। साथ ही, मैंने उन्हें और नेपाल की जनता को कल उनके राष्ट्रीय दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

कैबिनेट की बैठक 24 को

रांची : राज्य मंत्रिपरिद की बैठक 24 सितंबर बुधवार को दिन के तीन बजे से होगी। प्रोजेक्ट भवन स्थित कैबिनेट कक्ष में होनेवाली इस बैठक में कई महत्वपूर्ण विषयों पर निर्णय लिए जाने की संभावना है। दुर्गा पूजा से पहले यह कैबिनेट की अंतिम बैठक होगी। इसमें राज्य निर्वाचन आयुक्त, पेसा नियमावली सहित कई अन्य विषयों पर निर्णय संभव है।

ट्रक और कार के बीच टक्कर, चार की मौत

मुंबई : महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले के मलकापुर के पास नेशनल हाइवे पर गुरुवार को तड़के एक कार और एक ट्रक के बीच हुई जोरदार टक्कर में तीन महिलाओं सहित चार लोगों की मौत हो गई और 5 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। सभी को जिला अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती करवाया गया है। इस घटना की छानबीन मलकापुर पुलिस स्टेशन की टीम कर रही है। इस घटना की जांच कर रहे पुलिस अधिकारी ने गुरुवार को बताया कि आज तड़के भुसावल से मलकापुर की ओर जा रही कार अचानक अनियंत्रित होकर सामने जा रहे ट्रक से टकरा गई। इस घटना में कार चालक साजिद अजीज बागवान और 3 महिलाओं समेत कुल चार लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। तीनों मृतक महिलाओं की अभी तक पहचान नहीं हो पाई है। जबकि 5 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। गंभीर रूप से घायलों में संतोष तेजराव महाले (40), पंकज दिलीप गोपाल (22), दीपिका विश्वास (30) और टीना अजय पाटिल (45) के रूप में की गई है। एक घायल महिला की पहचान अभी तक नहीं हो पाई है। इसकी सूचना मिलते ही एमआईडीसी के पुलिस निरीक्षक हेमराज कोली और उनकी टीम घटनास्थल पर पहुंची। मलकापुर एमआईडीसी पुलिस ने मौका मुआयना किया और मामला दर्ज कर घटना की छानबीन शुरू कर दी है।

स्वस्थ नारी ही सशक्त परिवार और मजबूत समाज की होती है नींव : हेमन्त सोरेन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार और मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन सदर अस्पताल रांची में आयोजित "स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार" अभियान के राज्य स्तरीय शुभारंभ कार्यक्रम में शामिल हुए। इस मौके पर राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को जन्मदिन की शुभकामनाएं भी दी।

राज्यपाल ने अपने संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत ने पिछले एक दशक में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति की है। प्रधानमंत्री सदैव जनकल्याण को अपनी नीतियों का केंद्र बिंदु मानते हैं। इस अभियान के माध्यम से भी महिलाओं के स्वास्थ्य और परिवार के सशक्तिकरण को राष्ट्र निर्माण से जोड़ने पर और जोर दिया गया है। उन्होंने कहा कि स्वस्थ नारी ही सशक्त परिवार की आधारशिला है और सशक्त परिवार ही सशक्त भारत का निर्माण करता है। इस अभियान के अंतर्गत झारखण्ड में आयुष्मान आरोग्य मंदिरों से लेकर जिला अस्पतालों तक स्वास्थ्य जांच और जागरूकता शिविर आयोजित किए जाते हैं। राज्यपाल ने कहा कि इस अभियान की पूर्ण सफलता तभी संभव है, जब जनप्रतिनिधि, स्वास्थ्यकर्मी, पंचायत सदस्य, स्वयं सहायता समूह, आंगनबाड़ी सेविकाएं, सहिया दीदी, स्वयंसेवी संस्थाएं और मीडिया सक्रिय भागीदारी निभाएंगे।

हेमन्त सोरेन ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को जन्मदिन की शुभकामनाएं दी और कहा कि स्वस्थ नारी ही सशक्त परिवार और सशक्त समाज की नींव रखती है। महिलाओं की भूमिका समाज में अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। एक स्वस्थ नारी ही परिवार और समाज को सशक्त बना सकती है। हमारी सरकार महिलाओं के स्वास्थ्य और सशक्तिकरण को अपनी प्राथमिकता मानती है। महिलाओं के स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा और जागरूकता को लेकर सरकार निरंतर प्रयासरत है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जब महिलाएं स्वस्थ और सुरक्षित होंगी, तब परिवार मजबूत होगा और आने वाली पीढ़ी भी स्वस्थ और सशक्त बनेगी। हमारी सरकार महिलाओं के स्वास्थ्य, पोषण और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है, क्योंकि महिला ही परिवार और समाज की आधारशिला है। महिलाएं आज पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर समाज के हर क्षेत्र में अग्रसर हैं। महिलाएं आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक रूप से निरंतर आगे बढ़ रही हैं। उन्होंने कहा कि रोजगार और उद्यमिता के क्षेत्र में महिलाएं अपनी सक्रिय भागीदारी से आत्मनिर्भरता की नई मिसाल पेश कर रही हैं। स्वरोजगार योजनाओं, स्वयं सहायता समूहों और सरकारी नीतियों का लाभ उठाकर वे अपने परिवार की आय बढ़ाने के साथ-साथ समाज के आर्थिक विकास में भी योगदान दे रही हैं। सामाजिक क्षेत्र में महिलाएं जागरूकता, नेतृत्व और सहभागिता की भूमिका निभा रही हैं। पंचायतों से लेकर उच्च पदों तक उनकी उपस्थिति समाज को नई दिशा दे रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि जब महिलाएं सशक्त होंगी तभी समाज और राज्य मजबूत होगा। इसी उद्देश्य से सरकार ने महिलाओं के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार और सुरक्षा से जुड़ी विभिन्न योजनाएं लागू की हैं, जिनमें नियमित स्वास्थ्य परीक्षण, मातृत्व लाभ योजनाएं, पोषण आहार वितरण, किशोरियों के लिए स्वास्थ्य व स्वच्छता अभियान और सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करने के प्रयास शामिल हैं। उन्होंने कहा कि ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में महिला स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया जा रहा है, जिससे कि समय पर जांच और उपचार उपलब्ध कराया जा सके। शिक्षा के क्षेत्र में छात्रवृत्ति, निःशुल्क शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रमों के जरिए बेटियों को मुख्यधारा से जोड़ा जा रहा है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में मातृत्व लाभ योजनाएं, पोषण अभियान और निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण जैसी सुविधाएं दी जा रही हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज हमारी राज्य की बेटियां शिक्षा, स्वास्थ्य और खेलकूद के क्षेत्र में नई उंचाइयां छू रही हैं।

मुख्यमंत्री से मिले इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी के निदेशक

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से गुरुवार को मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, रांची के निदेशक प्रोफेसर राजीव श्रीवास्तव ने शिष्टाचार मुलाकात की। इस मौके पर उन्होंने इंस्टीट्यूट में संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों, कार्यक्रमों और गतिविधियों से मुख्यमंत्री को अवगत कराया।

सीडीएस अनिल चौहान पहुंचे रांची

अनिल चौहान ने राज्यपाल से की मुलाकात

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : देश के पहले और वर्तमान सीडीएस जनरल अनिल चौहान पहली बार रांची पहुंचे। एयरपोर्ट पर उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। एयरपोर्ट पर काफी संख्या में मौजूद पूर्व सैनिकों तथा सैन्य अधिकारियों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। जनरल अनिल चौहान का यह दौरा 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद हो रहा है, जिससे इसे विशेष रणनीतिक महत्व भी मिल रहा है। इस ऑपरेशन ने देश के सैन्य नेतृत्व की सुदृढ़ता को दर्शाया। सीडीएस का रांची आना एक मजबूत संदेश है। राजभवन में सीडीएस अनिल चौहान ने राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार से मुलाकात की।

राज्यपाल ने कहा कि उनका अनुभव, नेतृत्व और राष्ट्र सुरक्षा के प्रति दृष्टिकोण सदैव प्रेरणादायी है। जनरल चौहान का यह दौरा रांची के खेलगांव में आयोजित तीन दिवसीय डिफेंस एग्जीबिशन एंड सेमिनार के मद्देनजर है, जिसमें वे रक्षा क्षेत्र की नवीनतम तकनीकों, सैन्य रणनीतियों और युवाओं की भागीदारी जैसे विषयों पर संवाद करेंगे। यह पहली बार है जब झारखंड की धरती पर इतनी बड़ी रक्षा प्रदर्शनी आयोजित की जा रही है।

भारतीय वस्तुओं पर निर्यात शुल्क घटा सकता है अमेरिका : सीईए नागेश्वरन

एजेंसी

नयी दिल्ली : अमेरिका की ओर से भारत पर लगाए गए 50 फीसदी टैरिफ में बड़ी राहत मिल सकती है और रूसी तेल खरीद पर ट्रंप द्वारा लगाया गया एक्स्ट्रा 25 फीसदी टैरिफ हटाया जा सकता है। मुख्य आर्थिक सलाहकार वी. अनंथा नागेश्वरन ने गुरुवार ये उम्मीद जताई है। उन्होंने कहा है कि अमेरिका जल्द ही भारतीय वस्तुओं पर अतिरिक्त टैरिफ हटा सकता है और रेसिप्रोकल टैरिफ को भी घटाकर 10 से 15 फीसदी किया जा सकता है। इसके साथ ही सीईए ने भारत-यूएस ट्रेड डील के आगे बढ़ने का भी संकेत दिया है। 8-10 हफ्ते में निकल आएगा हल

कोलकाता में एक कार्यक्रम के दौरान बोलते हुए सीईए नागेश्वरन ने कहा कि उन्हें टैरिफ मसले का अगले 8 से 10 हफ्तों के भीतर समाधान होने की उम्मीद है। उन्होंने कहा, 'मुझे पूरा भरोसा है कि अगले कुछ महीनों में कम से कम 25 फीसदी के एक्स्ट्रा टैरिफ का समाधान जरूर निकल आएगा।' बिजनेस टुडे पर छपी रिपोर्ट के मुताबिक, नागेश्वरन ने आगे कहा कि दोनों देशों के बीच व्यापार समझौते को लेकर बातचीत में तेजी के संकेत मिल रहे हैं, जिससे करीब 50 अरब डॉलर मूल्य के भारतीय निर्यात पर दबाव कम हो सकता है।

गौरतलब है कि भारत पर पहले अमेरिकी की ओर से 25 फीसदी का रेसिप्रोकल टैरिफ लगाया गया था, लेकिन अगस्त में भारत की रूसी तेल खरीद को यूक्रेन युद्ध में पुतिन की आर्थिक मदद करने का जरिया करार देते हुए जुर्माने के रूप में 25 फीसदी का एक्स्ट्रा टैरिफ जुर्माने के तौर पर लगाया था। इसके बाद भारत पर कुल टैरिफ बढ़कर 50 फीसदी हो गया था।

वोट चोरी एक संगठित साजिश का हिस्सा, कांग्रेस समर्थक वोटर ही बन रहे निशाना : राहुल गांधी

एजेंसी

नयी दिल्ली : कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एवं लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने एक बार फिर 'वोट चोरी' का मुद्दा उठाते हुए चुनाव आयोग पर हमला बोला है। उन्होंने कर्नाटक के आलंद विधानसभा क्षेत्र में 6,018 मतदाताओं के नाम हटाए जाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि यह सब एक संगठित साजिश का हिस्सा है जिसमें कांग्रेस समर्थक वोटरों के नाम ही टारगेट किए जा रहे हैं। राहुल गांधी ने आज यहां कांग्रेस मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि मतदाता सूची से नाम काटने की प्रक्रिया बड़े पैमाने पर और सेंट्रलाइज तरीके से की जा रही है।

आलंद विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस समर्थक मतदाताओं को लक्षित कर उनके नाम मतदाता सूची से काटे गए। उन्होंने दावा किया कि अब तक 6,018 मतदाताओं के नाम हटाए जाने का मामला सामने आया है, हालांकि यह संख्या और भी बड़ी हो सकती है। उन्होंने कहा कि यह 'बोट चोरी' का मामला तब संयोगवश पकड़ा गया जब एक बूथ स्तरीय अधिकारी के रिश्तेदार का नाम सूची से गायब मिला। जब इसकी पड़ताल की गई तो सामने आया कि यह प्रक्रिया किसी तीसरे पक्ष द्वारा की जा रही है और इसका संचालन ऑटोमेटेड सॉफ्टवेयर से किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस प्रक्रिया में जिस व्यक्ति का नाम सूची से हटाया गया, तो जांच में उसके पड़ोसी का ही नाम सामने आया। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा कि बीएलओ ने जब पड़ोसी से पूछा तो उसने नाम हटाने से इनकार किया। इसके बाद जांच में यह तथ्य सामने आया कि सूची से नाम हटाने की प्रक्रिया ऑनलाइन ऑटोमेटेड प्रोसेस से किया गया और जिन मोबाइल नंबरों से यह कार्य हुआ, वह कर्नाटक के बाहर के थे। यह बेहद गंभीर सवाल है कि जिन नंबरों से मतदाता सूची से नाम हटाए गए, वे नंबर किसके हैं, कहां से ऑपरेट किए जा रहे हैं और उनके आईपी एड्रेस क्या हैं।

बिहार में दो-तिहाई से अधिक बहुमत वाली राजग सरकार बनाना है : अमित शाह

एजेंसी

पटना : केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने गुरुवार को पटना में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से मुलाकात के बाद डेहरी-ऑन-सोन में शाहाबाद और मगध प्रक्षेत्र के 10 जिलों के कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि आगामी बिहार विधानसभा चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) का लक्ष्य सरकार बनाना नहीं, बल्कि दो तिहाई बहुमत से सरकार बनाना है।

अमित शाह ने कहा कि 10 जिलों के सभी कार्यकर्ता संकल्प लें कि वो मोदी की नेतृत्व में बिहार में सरकार बनाएंगे। नीतीश की सरकार ने जो कुछ बिहार के लिए किया है। उसे घर-घर तक पहुंचाएंगे। इसके बाद अमित शाह ने वहां मौजूद लोगों से कहा कि आपकी आवाज राहुल गांधी तक जाना चाहिए। घुसपैठिये को वोट का अधिकार है क्या, घुसपैठियों को राशन मिलना चाहिए, उनको आयुष्मान कार्ड मिलना चाहिए, उनको वोट देने का अधिकार है क्या? अमित शाह के इन सवालों पर वहां मौजूद लोगों ने नहीं में जवाब दिया। ये आएंगे तो घुसपैठिये बढ़ाएंगे, राजग आएगा तो बिहार को बढ़ाएगा। दो तिहाई बहुमत से विजय करने का संकल्प लीजिए।

अमित शाह ने कहा कि राजग को इस बार शाहाबाद की 80 प्रतिशत सीटों पर जीत दर्ज करना है। उन्होंने बिहार का भविष्य नरेन्द्र मोदी से जोड़ने की अपील की। शाह ने कहा कि अन्य दलों में नेता चुनाव जीतते हैं। हमारी पार्टी में कार्यकर्ता चुनाव जीतते हैं और कार्यकर्ता ही नीचे से ऊपर तक पहुंचते हैं। भाजपा में एक बूथ का अध्यक्ष राष्ट्रीय अध्यक्ष भी बन सकता है। हम यहां पर जितनी मजबूती से संकल्प करेंगे, भाजपा उतनी ही मजबूत होगी, राजग मजबूत होगा और राजग जितना मजबूत होगा बिहार भी उतना ही खुशहाल बनेगा।

गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि बिहार का विकास और समृद्धि राजग का लक्ष्य है। यह चुनाव सरकार बनाने का नहीं है। यह चुनाव दो तिहाई से ज्यादा बहुमत के साथ सरकार बनाने का है। 10 जिलों के सभी कार्यकर्ता आज से संकल्पित होकर जाएं कि हम मोदी जी के नेतृत्व में बिहार में मजबूत राजग सरकार बनाएंगे। नीतीश कुमार और मोदी जी की सरकार ने जो कुछ बिहार की जनता के लिए किया है उसे उसे घर-घर तक लेकर जाएंगे और लोगों को बताएंगे।

अमित शाह ने कहा कि नरेन्द्र मोदी विश्व भर में एक मात्र ऐसे नेता हैं जिन्होंने लगातार 24 साल तक राज्य और देश के मुखिया के रूप में काम किया। मैं इस बात का गवाह हूं कि 24 सालों में एक भी छुट्टी उन्होंने नहीं ली। लगातार दिन रात काम किया है। यह बहुत बड़ी बात है। कुछ नेता छह माह में विदेश नहीं जाएं तो उन्हें रात में नींद नहीं आती है। आप समझ रहे हैं ना कि मैं किसके बारे में बात कर रहा हूं। अमित शाह ने कहा कि नरेन्द्र मोदी ने देश को पहले रखा, देश के बाद पार्टी को रखा, पार्टी के बाद कार्यकर्ता को रखा, खुद या अपने परिवार के लिए कुछ नहीं सोचा। अमित शाह ने कहा कि मोदी की सरकार में साल 2014 से 2024 में बिहार को 9 लाख 85 हजार करोड़ रुपये मिला। नीतीश कुमार की राजग सरकार ने 125 यूनिट बिजली फ्री कर दी। दिव्यांगों को पेंशन बढ़ाया। आशा वर्कर का मानदेय बढ़ाया। रसोई, रात्रि प्रहरी और शारीरिक शिक्षकों को लाभ दिया। राजग की सरकार ने जो काम किए, लालू जी पूरा जीवन में करें तो इतना नहीं कर सकते हैं।

शाह ने लालू पर सीधे हमला बोलते हुए कहा कि इन्होंने चारा घोटाला किया। लैंड फॉर जॉब स्कैम किया। जेल में घोटाला किया। इतने भ्रष्टाचार के आरोप जिसपर लगे हों वो कभी बिहार का भला कर सकता है क्या? एक और भ्रष्टाचार वाली सरकार है और दूसरी तरफ मोदी जी की सरकार है जिसपर एक भी भ्रष्टाचार के दाग नहीं है। बिहार को नरेन्द्र मोदी के साथ जोड़ दीजिए। यहीं रास्ता है बिहार को पूर्ण विकसित करने का।

सभा को प्रदेश अध्यक्ष डॉ. दिलीप जायसवाल ने भी संबोधित किया' मौके पर उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, मंत्री प्रेम कुमार, संतोष कुमार, विनोद तावड़े भी मौजूद थे।

छत्तीसगढ़ के सुकमा में मुठभेड़, पांच लाख की इनामी महिला नक्सली ढेर

एजेंसी

सुकमा : छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले में सुरक्षा बलों ने गुरुवार को मुठभेड़ में 5 लाख की इनामी महिला नक्सली ढेर कर दिया। सुरक्षाबलों को मुठभेड़ स्थल से 315 बोर की रायफल और भारी मात्रा में विस्फोटक सहित नक्सल सामग्री बरामद हुई है' पुलिस अधीक्षक सुकमा ने इसकी पुष्टि की है।

पुलिस अधीक्षक सुकमा किरण चव्हाण ने बताया कि सुकमा जिले के थाना गादीरस क्षेत्रांतर्गत गुफड़ी एवं परेमापारा के मध्य पश्चिमी क्षेत्र के जंगल की पहाड़ी में नक्सलियों की मौजूदगी की सूचना के आधार पर सुरक्षा बलों ने आज सुबह से ही सर्च ऑपरेशन शुरू किया था। उन्होंने बताया कि इस अभियान के दौरान डीआरजी के जवानों के साथ नक्सलियों की मुठभेड़ हुई। मुठभेड़ स्थल को सर्च करने पर एक महिला नक्सली का शव हथियार सहित बरामद हुआ। इसके अलावा बहुत बड़ी संख्या में विस्फोटक आदि सामग्री भी मिली है। उन्होंने बताया कि मारी गई महिला नक्सली 5 लाख इनामी एसीएम कैडर की कवूस्की पुग्गे (मलंगीर एरिया कमेटी) की सदस्य थी। वह 9 मामलों में वांछित थी। इसमें थाना अरनपुर के 7 मामले, थाना कुंआकोंडा का 01 मामला और थाना गादीरास का एक मामला शामिल है। उन्होंने बताया कि मुठभेड़ स्थल से 315 बोर रायफल 1 नग, 315 रायफल कारतूस 5 नग, वायरलेस सेट 1 नग, डेटोनेटर 8 नग, कोर्डेक्स वायर 10 मीटर लगभग, जिलेटिन रॉड 4 नग, पिट्ठू 1 नग, बारूद, रेडियो, बंडा 1 नग, नक्सली साहित्य तथा अन्य दैनिक उपयोगी सामग्री बरामद की गई है।

बस्तर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक सुन्दरराज पी. ने माओवादी कैडरों से अपील करते हुए कहा कि वे यह यथार्थ को स्वीकार करें कि नक्सलवाद समाप्ति के कगार पर है। अब समय आ गया है कि वे हिंसा का मार्ग छोड़ कर सरकार की पुनर्वास नीति का लाभ उठाते हुए मुख्यधारा से जुड़ें।

डीडीसी ने बरही प्रखंड में विकास कार्यों का किया निरीक्षण, लापरवाह कर्मियों पर कार्रवाई की चेतावनी

- करसो और खोड़ाहर पंचायत में अबुआ आवास टीसीबी व बागवानी कार्यों की की गई जांच
- रसोइया धमना के रोजगार सेवक से मांगा जाएगा स्पष्टीकरण
- सभी योजनाओं में तेजी लाने और समय पर भुगतान करने का निर्देश

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही : हजारीबाग उप विकास आयुक्त डीडीसी इस्तियाक अहमद ने गुरुवार को बरही प्रखंड का दौरा किया और प्रखंड में चल रहे विकास कार्यों का भौतिक निरीक्षण किया। प्रखंड कार्यालय में बीडीओ जयपाल महतो एवं उनके कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मियों के साथ विकास कार्यों की समीक्षा किया। समीक्षा के उपरांत डीडीसी ने विकास कार्यों की गति एवं भौतिक स्थिति की जानकारी लेने के लिए बीडीओ जयपाल महतो के साथ बरही के करसो और खोड़ाहर पंचायत में चल रहे विकास कार्यों का स्थल निरीक्षण किया। करसो पंचायत के डूमरडीह गांव में बबीता देवी और विनीता देवी के जमीन पर टीसीबी निर्माण का निरीक्षण किया। रविंद्र कुमार के जमीन पर आम बागवानी और रीता देवी का निमार्णाधीन अबुआ आवास की जांच की। उप विकास आयुक्त ने अबुआ आवास निर्माण के लिए 95 मानव दिवस का मनरेगा भुगतान का निर्देश दिया। डीडीसी ने विकास कार्यों में तेजी लाने के लिए बीडीओ जयपाल महतो को निर्देश देते हुए कहा कि सभी लोगों को समय पर मास्टर रोल का भुगतान करें और अबुआ आवास निर्माण में तेजी लाएं।

करसो पंचायत भवन का निरीक्षण के दौरान दीवार पर पंचायत सचिव और मुखिया का रोस्टर उपस्थिति नहीं लिखे जाने पर नाराजगी व्यक्त की। डीडीसी ने एक सप्ताह के अंदर दीवार में रोस्टर उपस्थित लेखन कर सूचित करने का निर्देश दिया। विकास कार्यों के निरीक्षण के बाद प्रखंड सभागार में बीडीओ, सभी प्रखंड कर्मी के साथ मनरेगा और अबुआ आवास को लेकर समीक्षा बैठक की। डीडीसी ने रसोइयाधमना के रोजगार सेवक के खराब प्रदर्शन को देखते हुए बीडीओ को रोजगार सेवक से स्पष्टीकरण मांगने का निर्देश दिया। समीक्षा बैठक में सभी प्रखंड कर्मियों को सख्त निर्देश दिया कि उपायुक्त विकास योजनाओं को धरातल पर क्रियान्वयन को लेकर गंभीर हैं। इसमें लापरवाही बरतने वाले कर्मियों पर कठोर कार्रवाई की जाएगी। मौके पर प्रखंड कार्यालय के कर्मी मौजूद रहे।

एक नजर

तेलोडीह में फुटबॉल टूर्नामेंट का भव्य आगाज

बरही : बरही प्रखंड के दुलमाहा पंचायत के तेलोडीह गांव में गुरुवार से शिव शक्ति क्लब की ओर से फुटबॉल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। इस टूर्नामेंट में कुल 18 टीमों ने भाग लिया। मैच का उद्घाटन जेएलकेएम के बरही विधानसभा पूर्व प्रत्याशी कृष्णा यादव, मुखिया नारायण यादव, पूर्व मुखिया प्रत्याशी कमल शंकर पंडित, उपमुखिया मनोज यादव ने फीता काट व कीक मार कर शुभारंभ किया। टूर्नामेंट का पहला खेल बधिया जवाड बनाम कोडरमा के अंबेडकर क्लब प्रतापपुर के बीच खेला गया। दोनों टीमों ने बेहतर खेल का प्रदर्शन करते हुए दर्शकों को मन को लुभाया। परंतु बढ़िया जवाड की टीम ने बेहतर प्रदर्शन करते हुए प्रतापपुर को एक गोल से पराजित किया वहीं दूसरा मैच बुंडू बनाम कोल्वा कला के बीच खेला गया। जिसमें कोल्वकला की टीम ने बुंडू टीम एक गोल से शिकस्त दी। चौरों टीमों ने खेल की भावना से बेहतर खेल का प्रदर्शन किया। सैकड़ों दर्शकों ने खेल का खूब लुत्फ उठाया। खेल में निर्याक की भूमिका गोपी राम तथा कोमेंटेटर के रूप में दीपक यादव ने भूमिका निभाई। वहीं खेल को सफल बनाने में अध्यक्ष विनोद यादव सचिव सुधीर कुमार, कोषाध्यक्ष संदीप यादव, शिक्षक राजेश यादव, सचिन कुमार,अशीष यादव, रामजी कुमार, रंजन यादव, राहुल यादव,धीरज यादव एवं अवधेश कुमार ने अहम भूमिका निभाई।

बरही के बारा टांड़ में धूमधाम से मनाया गया विश्वकर्मा पूजा

बरही : बरही 17 सितम्बर को सृष्टि के देवता भगवान विश्वकर्मा जी की पूजा भक्ति भाव के साथ मनाया गया। इस दौरान बरही के बारा टांड़ में भी स्थानीय लोगों के द्वारा भगवान विश्वकर्मा जी की प्रतिमा स्थापित कर पूजा अर्चना की गई। इस पूजा उत्सव कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि एनसीपी के जिला अध्यक्ष महेश ठाकुर मुख्य रूप से शामिल हुए। उन्होंने अन्य श्रद्धालुओं के साथ भक्ति पूर्वक पूजा अर्चना की और बरही वासियों की सुख समृद्धि की कामना की। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि भगवान विश्वकर्मा जी ने ही सृष्टि की रचना किए थे। उनके बिना सृष्टि संभव नहीं था। उनकी कृपा हम सबों पर बनी रहे। यही कामना है। मौके पर दीपेश ठाकुर, शुभम कुमार सहित कई लोग मौजूद रहे।

चौपारण में सड़क हादसा, दो घायल एक हजारीबाग रेफर

चौपारण : चतरा रोड स्थित रानिक मोड़ के पास गुरुवार को हुई सड़क दुर्घटना में दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना के बाद स्थानीय ग्रामीणों की मदद से दोनों घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, चौपारण लाया गया। यहाँ प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टरों ने एक घायल की स्थिति गंभीर देखते हुए हजारीबाग रेफर कर दिया। जानकारी के अनुसार, बाइक सवार रानिक से चौपारण की ओर आ रहा था। रानिक मोड़ के पास अचानक उसकी बाइक अनियंत्रित होकर गिर गई। हादसे में बाइक सवार असगर मियां, पिता ऐतराज मियां, ग्राम बेला और सड़क किनारे मौजूद छोटू सिंह, पिता अरविन्द सिंह, ग्राम रानिक घायल हो गए। डॉक्टरों ने गंभीर रूप से घायल असगर मियां को हजारीबाग रेफर किया है, जबकि छोटू सिंह का इलाज फिलहाल चौपारण सामुदायिक अस्पताल में चल रहा है। घटना की सूचना समाजसेवी बीरबल साहू ने स्वास्थ्य केंद्र प्रशासन को दी।

आंगो पंचायत भवन में आदि सेवा केन्द्र का हुआ उद्घाटन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बडकागांव : प्रखंड के सुदूरवर्ती पंचायत आंगों में आदि कर्मयोगी अभियान के तहत आदि सेवा केंद्र का उद्घाटन आंगो पंचायत के उप मुखिया लालो महतो की अध्यक्षता एवं ग्रामीणों की उपस्थिति में किया गया। आदि कर्मयोगी अभियान के तहत जिला उपायुक्त के आदेशानुसार प्रखंड द्वारा आदिवासी बहुल पांच पंचायतों को चिन्हित किया गया है। जिसमें आंगो, नापोखुर्द, गोंदलपुरा, पोटंगा, और गरसुला शामिल हैं। जिसमें आंगो पंचायत के बहुल आदिवासी गांव आंगो और बरतुआ शामिल हैं। जिसके अंतर्गत झिकझोर, फटरिया पानी, सिमराजरा और चेलंगदाग मुख्य रूप लाभान्वित होंगे। यह योजना धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत आदिवासी समुदाय के समग्र विकास एवं सशक्त बनाने तथा इस समुदाय के अंतिम पंक्ति तक योजनाओं के लाभ सुनिश्चित करने के उद्देश्य से लागू किया गया है। इस उद्घाटन कार्यक्रम में आंगो उपमुखिया लालो महतो, पंचायत सचिव मुकेश कुमार दास, रोजगार सेवक - शंभू रविदास, पंचायत सहायक - बिरेन्द्र कुमार महतो, शिबू कुमार, प्रज्ञा केंद्र संचालक - प्रदीप कुमार महतो सहित आंगनबाड़ी सेविका - सहायिका एवं ग्रामीण उपस्थित थे।

आदिवासी कुड़मी समाज की बैठक, रेल टेका अभियान को सफल बनाने का निर्णय

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : आदिवासी कुड़मी समाज प्रखंड अंतर्गत चेपाकला, डाडीकला पंचायत के लोग की चेपाकला बाजारटांड़ में बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता ललन कुमार, संचालन बिकास महतो ने किया। राय रेलवे स्टेशन में 20 सितंबर को रेल टेका अभियान को सफल बनाने का निर्णय लिया गया। अशोक महतो ने कहा की हमारी लड़ाई किसी समुदाय से नहीं है, हम अपने अधिकार के लिए संवैधानिक तरीके से लड़ रहे हैं। कुड़मी जाति अनुसूचित जाति में शामिल को लेकर वर्ष 1931 के सभी कागजात हैं। भूल से संविधान बनते समय वर्ष 1950 में बिना कोई नोटिफिकेशन के इसे सूची से बाहर कर दिया गया। विकास

महतो ने कहा कि इस बार हजारों की संख्या में लोग राय स्टेशन में अभियान को सफल बनाएंगे। केंद्र व राज्य सरकार हमारी मांगे पूरी करें। हले अलग र राज्य लेने के लिए लड़ाई लड़े, अब अपने हक के लिए लड़ेंगे। बैठक में मुख्य रूप से राजेश्वर महतो, मनोज कुमार, कालेश्वर महतो, दिनेश्वर महतो, सुनील महतो, राजेश महतो, देवनंदन महतो, रामेश्वर महतो, मोहन महतो, कालेश्वर महतो, अर्जुन महतो, संजय महतो, विजय महतो, अर्जुन महतो, महेंद्र महतो, भंडारी महतो, शिवराज महतो, विनोद महतो, राजकुमार महतो अन्य शामिल थे।

स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान से नारी स्वास्थ्य व्यवस्था होगा सुदृढ़ : एसडीओ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही : केंद्र सरकार के स्वास्थ्य विभाग के निदेशानुसार देश की नारी शक्ति और भावी पीढ़ी के लिए एक अत्यंत ही मानवीय पहल स्वस्थ नारी सशक्त परिवार और राष्ट्रीय पोषण माह अभियान का शुभारंभ हुआ। पीएम नरेंद्र मोदी ने मध्य प्रदेश के धार जिले से इस अभियान की विधिवत शुरूआत की। इसी कड़ी में बरही अनुमंडलीय अस्पताल के डीएस के निर्देशन में स्वस्थ नारी सशक्त परिवार और राष्ट्रीय पोषण माह अभियान का शुभारंभ हुआ। उदघाटन एसडीओ जोहान टुडु, विधायक प्रतिनिधि रमेश ठाकुर, भाजपा मंडल अध्यक्ष भगवान केशरी, मुखिया प्रतिनिधि मो ताज उद्दीन ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। इस महाअभियान के तहत 17 सितंबर से आगामी 02 अक्टूबर तक देशभर में एक लाख से अधिक स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए जाएंगे बरही अनुमंडलीय अस्पताल के सभी आयुष्मान आरोग्य मंदिरों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों और जिला अस्पतालों सहित अन्य सभी सरकारी अस्पतालों में मिशन मोड में स्वास्थ्य जांच परीक्षण, दवाई वितरण और आभा आईडी पंजीकरण का कार्य किया जाएगा। इस अवसर पर एसडीओ जोहान टुडु ने कहा कि यह अभियान नारी स्वास्थ्य के लिए काफी मददगार साबित होगा। विधायक प्रतिनिधि रमेश ठाकुर ने कहा कि पीएम मोदी जी ने नारी स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से इस अभियान को शुरू किया है। जो काबिले तारीफ है। उन्होंने आम जनता से अपील किया है कि इस अभियान से जुड़े और स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करें। मौके पर डॉक्टर इंद्रजीत कुमार, डॉक्टर प्रवीण कुमार, सुधांशु कुमार, बिजेंद्र कुमार, गौतम कुमार सहित कई स्वास्थ्यकर्मी मौजूद रहे।

मुखिया व पंसस प्रतिनिधि ने संयुक्त रूप से धोती साड़ी लूंगी का किया वितरण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही : बरही प्रखंड के दुलमाहा पंचायत अंतर्गत चमेली महिला मंडल में मुखिया नारायण यादव व पंसस प्रतिनिधि जितेन्द्र गिरि ने संयुक्त रूप से झारखंड सरकार के गरीब कल्याणकारी योजना सोना सोबरन के तहत 300 राशन कार्डधारियों के बीच धोती साड़ी लूंगी वितरण किया। इस मौके पर अधिक संख्या लाभुक शामिल हुए। मौके पर उपस्थित लाभुकों को सम्बोधित करते हुए मुखिया नारायण यादव ने कहा कि सरकार की ओर से चलाई जा रही योजनाओं का उद्देश्य ग्रामीण परिवारों को सहयोग और सम्मान देना है। पंसस प्रतिनिधि जितेन्द्र गिरि ने कहा कि धोती साड़ी का वितरण झारखंड सरकार द्वारा सोना सोबरन धोती साड़ी वितरण योजना के तहत किया जाता है, जिसका उद्देश्य पात्र परिवारों को सब्सिडी दर पर कपड़े उपलब्ध कराना है। इस योजना का लाभ राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत आने वाले राशन कार्डधारकों को मिलता है, जो वितरण जन वितरण प्रणाली दुकानों के माध्यम से वितरण किया जाता है। मौके पर बिसनी देवी, कलावती देवी, गौरव देवी, शांति देवी, उषा देवी, शिवशंकर भुईयां, विदवा देवी, मीना देवी, जसवा देवी, सावित्री देवी सहित सैकड़ों लाभूक मौजूद थे।

पीएम मोदी के 75वें जन्मदिन पर हजारीबाग में 'स्वस्थ नारी सशक्त परिवार' अभियान का शुभारंभ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के 75वें जन्मदिन के शुभ अवसर पर देश की नारी शक्ति और भावी पीढ़ी के लिए एक अत्यंत ही मानवीय पहल स्वस्थ नारी सशक्त परिवार और राष्ट्रीय पोषण माह अभियान का शुभारंभ हुआ। पीएम नरेंद्र मोदी ने मध्य प्रदेश के धार जिले से इस अभियान की विधिवत शुरूआत की। वहीं इस ऐतिहासिक कार्यक्रम का जिला स्तरीय अगाज बुधवार को हजारीबाग के मेडिकल कॉलेज अस्पताल परिसर में किया गया। इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में हजारीबाग के सांसद मनीष जायसवाल के निर्देश पर उनके प्रतिनिधि के रूप में सांसद मीडिया प्रतिनिधि रंजन चौधरी शामिल हुए। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में सदर विधायक प्रदीप प्रसाद और अन्य अतिथि के रूप में योगेंद्र प्रसाद, स्वास्थ्य विभाग के उपनिदेशक डॉ. अजय खलखो, हजारीबाग जिले के सिविल सर्जन डॉ.अशोक कुमार, हजारीबाग के मेडिकल कॉलेज अस्पताल के सुप्रिटेंडेंट डॉ. अनुकरण पूर्ति, डिप्टी सुप्रिटेंडेंट डॉ. अजय कुमार सिंह, इस कार्यक्रम के जिला नोडल पदाधिकारी सह जिला मलेरिया पदाधिकारी डॉ.कपिल मुनि प्रसाद, अपर मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. शशि जायसवाल, आरसीएच डॉ.रंजन सिन्हा, डीटीओ डॉ आर.के. जायसवाल ब्लड बैंक के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ.नीरज कुमार, मेडिकल ऑफिसर सह जेल के प्रभारी चिकित्सक डॉ. राहुल कुमार सहित अन्य सम्मानित अतिथियों के साथ सांसद प्रतिनिधि रंजन चौधरी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की। इस दौरान सभी ने प्रधानमंत्री जी के लाइव उद्बोधन का सामूहिक रूप से श्रवण करने के साथ-साथ, अभियान से संबंधित जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस महाअभियान के तहत 17 सितंबर से आगामी 02 अक्टूबर तक देशभर में एक लाख से अधिक स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए जाएंगे हजारीबाग जिले के सभी आयुष्मान आरोग्य मंदिरों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों और जिला अस्पतालों सहित अन्य सभी सरकारी अस्पतालों में मिशन मोड में स्वास्थ्य जांच परीक्षण, दवाई वितरण और आभा आईडी पंजीकरण का कार्य किया जाएगा।

संक्षिप्त खबरें

हजारीबाग प्रेस क्लब के नए भवन पहुंचे पूर्व सांसद यदुनाथ पांडेय

हजारीबाग : बरसात की रिमझिम फुहारों के बीच बुधवार को हजारीबाग के पूर्व सांसद एवं वरिष्ठ भाजपा नेता यदुनाथ पांडे हजारीबाग प्रेस क्लब के नवनिर्मित भवन पहुंचे। इस अवसर पर उन्होंने सभी पत्रकार बंधुओं को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह भवन पत्रकारिता की नयी दिशा और ऊँचाइयों का प्रतीक बनेगा। हजारीबाग प्रेस क्लब की ओर से उनका अंगवस्त्र और पौधा भेंट कर अभिनंदन किया गया। इस सम्मान को स्वीकार करते हुए उन्होंने कहा कि यह अतिथि देवो भवः की परंपरा का सर्वोत्तम उदाहरण है। स्वागत उपरांत पांडे ने पत्रकारों से आत्मीय संवाद किया और क्षेत्र की विभिन्न मुद्दों पर विस्तारपूर्वक वार्ता की। इस दौरान उन्होंने अपने बचपन की अनेक स्मृतियों को भी साझा किया। उन्होंने बताया कि हजारीबाग की मिट्टी और यहां का वातावरण उनके जीवन और व्यक्तित्व निर्माण में हमेशा प्रेरणास्रोत रहा है। उनके संस्मरण सुनकर उपस्थित पत्रकारों ने भी अतीत की कई यादों को जीवंत होते हुए महसूस किया। पत्रकारों को संबोधित करते हुए श्री पांडे ने कहा कि प्रेस समाज का आईना और लोकतंत्र की सबसे मजबूत कड़ी है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि हजारीबाग प्रेस क्लब का यह नया भवन पत्रकारों को और अधिक सशक्त बनाएगा तथा समाज के हित में निष्पक्ष और निर्भीक पत्रकारिता के मार्ग को मजबूत करेगा। कार्यक्रम के अंत में उन्होंने प्रेस क्लब के सभी पत्रकार बंधुओं को उनके सामूहिक प्रयास और उपलब्धि के लिए बधाई दी और उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं प्रेषित कीं। इसके बाद एक सामूहिक तस्वीर लिया गया जिन्हें यादें बनकर संजोग कर रखा जाएगा।

विधायक ने उपलब्ध कराया ट्रांसफार्मर जिप उपाध्यक्ष ने किया उद्घाटन

बरही : बरही विधायक मनोज कुमार यादव के पहल पर विजैया पंचायत के खुटवा टांड़ चौधरी टोला में नया ट्रांसफार्मर लगाया गया। जिसका उद्घाटन जिप उपाध्यक्ष किशुन यादव एवं बरही पूर्वी ओबीसी उपाध्यक्ष कैलाश यादव ने फीता काटकर किया। ज्ञात हो कि सात सितंबर को वज्रपात होने से चौधरी टोला सहित अन्य चार स्थानों में लगे ट्रांसफार्मर जल गया था। ग्रामीणों ने ट्रांसफार्मर की मांग विधायक से की थी। जिसके बाद ट्रांसफार्मर उपलब्ध कराया गया। बरही पूर्वी भाजपा उपाध्यक्ष कैलाश यादव ने विधायक से मांग किया है कि सात सितंबर को वज्रपात से जला खुटवा टांड़ यादव टोला, मोना टांड़, बेलहरा एवं ठाकुर टोला का ट्रांसफार्मर भी जल्द लगाया जाय। मौके पर चितरंजन यादव, तुलसी चौधरी, रवि भूषण यादव, रोहित यादव, किशुन चौधरी, भरत यादव, पवन यादव, रामावतार यादव, रामवंद्र चौधरी, बासुदेव चौधरी, बालेश्वर चौधरी, उमेश यादव, रामसहाय यादव आदि लोग मौजूद रहे।

बहुउद्देशीय भवन के केयर टेकर की संदिग्ध अवस्था में मौत, जांच में जुटी पुलिस

बरही : प्रखंड परिसर स्थित बहुउद्देशीय भवन के केयर टेकर संतोष कुमार की संदिग्ध अवस्था में मौत हो गई। शव को देखने से पता चल रहा है कि उनकी मौत दो दिन पहले ही हो गई थी। शव को पोस्टमार्टम के लिए बरही अनुमंडलीय अस्पताल लाया गया। जनकारी के मुताबिक संतोष कुमार बहुउद्देशीय भवन में केयर टेकर के तौर पर पिछले पांच वर्षो से कार्यरत थे। दो दिन छुट्टी रहने के कारण उनके बारे में जानकारी नहीं मिल पाई। जब गुरुवार को कार्यालय खुला और वे उपस्थिति बनाने नहीं आए तो उनकी खोजबीन की गई। खोजबीन के दौरान वे किचेन में गिरे पड़े मिले। उनके माथा पर चोट का निशान दिखा। फिलहाल पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। गौरतलब है कि संतोष कुमार बेहतर क्रिकेट कोच थे। अब तक सैकड़ों बच्चों को क्रिकेट सिखा चुके हैं। वे मृदुलभाषी व्यक्तित्व के धनी थे। लेकिन इस तरह से उनकी मौत होना संदेह पैदा कर रहा है। इधर थाना प्रभारी इंस्पेक्टर विनोद कुमार ने बताया कि प्रथम द्रष्टया फिसलकर गिरने से मौत होना लग रहा है। फिर भी हर पहलू की जांच की जा रही है।

फादर एटी थॉमस की पुण्यतिथि पर कल से दो दिवसीय फुटबॉल व खोखो प्रतियोगिता

बड़कागांव : तलसवार पंचायत के कोयलंग (लमकीटांड़) में फादर एटी थॉमस मेमोरियल स्कूल ग्राउंड में कल 20 सितंबर से दो दिवसीय फुटबॉल सह खोखो प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। यह टूर्नामेंट शहीद फादर एटी थॉमस के पुण्यतिथि के अवसर पर प्रत्येक वर्ष आयोजित होता है। प्रतियोगिता में बड़कागांव प्रखंड के लगभग 20 विद्यालयों के छात्र-छात्राएं भाग लेंगे। 20 सितंबर सुबह 7:00 बजे से खेल का शुभारंभ होगा एवं 21 सितंबर को समापन होगा। खेलकूद प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि विधायक रोशनलाल चौधरी, विशिष्ट अतिथि फादर सुशील ओसंगा (रख हजारीबाग), प्रमुख फुलवा देवी, मुखिया गीता देवी समेत कई गणमान्य मौजूद रहेंगे।

हाईवा की चपेट से बची लवली बस, बिजली पोल से टकराई, बड़ा हादसा टला

बड़कागांव : गुरुवार सुबह 8:00 बजे बरवाडीह भोक्ता स्थान के पास हाई स्पीड में हजारीबाग से आ रहा हाईवा ने बड़कागांव से हजारीबाग जा रही लवली बस को चकमा दे दिया जिसके कारण लवली बस सामने बिजली पोल में जा टकराया। बस मालिक पंकज ने बताया कि बस के अगला शीशा चकनाचूर हो गया। बड़ी हादसा की घटना होने से टल गया। घटना में बस का कंडक्टर को हाथ में चोट आई है पुलिस ने हाईवा को कब्जे में लेकर थाना ले गई। हाईवा टंडवा प्रखंड के सेरेंगदाग गांव का है।

रांची में बनेगा विश्वस्तरीय मेडिको सिटी एडीबी ने दी 2800 करोड़ की मंजूरी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड को स्वास्थ्य क्षेत्र में एक और सौगात मिली है। राजधानी रांची में विश्वस्तरीय मेडिको सिटी का निर्माण किया जाएगा। रिनपास के समीप विकसित होनेवाले इस महत्वाकांक्षी परियोजना के लिए एशियन डेवलपमेंट बैंक (एडीबी) ने 2800 करोड़ रुपए की वित्तीय सहायता को मंजूरी दे दी है। यह जानकारी राज्य के स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफान अंसारी ने दी। मंत्री ने परियोजना को लेकर प्रोजेक्ट भवन में गुरूवार को उच्चस्तरीय बैठक की। इस परियोजना के लिए जल्द टेंडर प्रक्रिया शुरू कर उन्?होंने कार्य को गति देने का निर्देश दिया। परियोजना को झारखंड की स्वास्थ्य व्यवस्था में क्रांतिकारी कदम बताया। उन्होंने कहा कि झारखंड को हेल्थ डेस्टिनेशन बनाने में यह परियोजना मील का पत्थर साबित होगा। अब झारखंड के लोगों को गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए बाहर नहीं जाना पड़ेगा। मंत्री ने कहा कि मेडिको सिटी में हृदय, किडनी, लीवर सहित जटिल रोगों का इलाज विशेषज्ञ डॉक्टरों और अत्याधुनिक तकनीक से संभव होगा। परियोजना के तहत आधुनिक मेडिको सिटी का निर्माण, नर्सिंग, फामेर्सी और पैरामेडिकल कॉलेज की स्थापना, क्षेत्रीय चिकित्सा केंद्र और सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक का विकास किया जाएगा। उन्होंने बताया कि मेडिको सिटी पूरी तरह ग्रीन बिल्डिंग तकनीक पर आधारित होगी। डिजिटल हेल्थ सिस्टम, टेलीमेडिसिन सुविधा, जिला स्तर पर स्वास्थ्य संस्थानों का आधुनिकीकरण और निजी क्षेत्र की भागीदारी इसकी प्रमुख विशेषताएं होंगी। यह परियोजना सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) की दिशा में भी ठोस योगदान देगी। वहीं अपर मुख्य सचिव अजय कुमार सिंह ने कहा कि मेडिको सिटी न केवल स्वास्थ्य सेवाओं को नई उंचाई देगी, बल्कि यह झारखंड के सामाजिक और आर्थिक विकास की धुरी भी बनेगी। बैठक में मंत्री इरफान अंसारी के अलावे स्वास्थ्य विभाग के अपर मुख्य सचिव अजय कुमार सिंह, झारखंड स्टेट हेल्थ सोसाइटी की कार्यकारी निदेशक डॉ नेहा अरोड़ा, एडीबी की प्रतिनिधि सोनालिनी खेत्रपाल सहित अन्य शामिल थे।

चुनाव आयोग की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न : पंकज मिश्र

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : जयप्रकाश जनता दल के राष्ट्रीय सचिव पंकज मिश्र ने केंद्रीय चुनाव आयोग पर अपनी विश्वसनीयता खुद घटाने का आरोप लगाया है। उन्होने कहा कि चुनाव आयोग की चुप्पी और विपक्ष का लगातार हमलावर रहना संवैधानिक संस्थानओं की कार्यशैली को संदेह के घेरे में लाकर खड़ा कर दिया है। जयप्रकाश जनता दल आयोग से सब कुछ स्पष्ट करने का आग्रह करती है। मिश्र ने कहा कि लोकतंत्र में सत्ता और विपक्ष की भूमिका बराबर की है। ऐसे में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी दूसरी बार आयोग पर वोट चोरी करने का आरोप लगा चुके हैं। मगर आयोग सब बेबुनियाद बात कह कर मामले को टाल रहा। जबकि आयोग पर गंभीर आरोप लगाया जा रहा है। सवाल आयोग से पूछा जा रहा और जवाब भाजपा की टरफ से आता है। यह गलत है और इससे आयोग की कमजोरी ही झलकती है। कांग्रेस को इतना एग्रेसिव होने का मौका कौन द रहा है। कौन है जिसके इशारे पर वोट जोडा और घटाया जा रहा। जबकि प्रक्रिया चुनाव आयोग के दायरे में है। जयप्रकाश जनता दल चुनाव आयोग से तत्काल उच्चस्तरीय जांच कमेटी गठित कर सभी मामलों की जांच कराने की अपेक्षा रखती है।

आरपीएफ ने 30 किलो गांजा के साथ दो आरोपी को किया गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने हटिया रेलवे स्टेशन से 30 किलो गांजा बरामद किया है। मामले में दो आरोपितों अभिषेक सिंह (31) और गोविंद कुमार(33) को गिरफ्तार किया है। दोनों आरोपित बिहार के बक्सर के रहने वाले है। आरपीएफ के एसआई साधना कुमारी ने गुरुवार को बताया कि कमांडेंट पवन कुमार के निदेर्शानुसार आरपीएफ सतर्क थी। इसी क्रम में हटिया आरपीएफ पोस्ट की अधिकारी तथा फ्लाइंग टीम स्टेशन पर जांच में तैनात थे। ट्रेन संख्या 15027 (मौर्या एक्सप्रेस) प्लेटफॉर्म नंबर 03 पर आई। जांच के दौरान कोच संख्या बी /01 में दो व्यक्ति संदिग्ध स्थिति में सोते पाए गए। पूछताछ करने पर उन्होंने अपने नाम अभिषेक सिंह और गोविंद कुमार बताया। दोनों ने स्वीकार किया कि उनके ट्रॉली बैग में भूरे प्लास्टिक में लिपटा गांजा रखा है। तुरंत उन्हें ट्रेन से उतार कर प्लेटफॉर्म पर लाया गया। इसकी जानकारी असिस्टेंट सिक्योरिटी कमिश्नर, आरपीएफ मूरी को दी गई। मौके पर असिस्टेंट सिक्योरिटी कमिश्नर आरपीएफ मूरी पहुंचे और उनके बैग की तलाशी ली गई। तलाशी में पाया गया कि अभिषेक सिंह के ट्रॉली बैग से आठ पैकेट और गोविंद कुमार के बैग से छह पैकेट गांजा बरामद हुआ। उन्होंने बताया कि असिस्टेंट सिक्योरिटी कमिश्नर आरपीएफ मूरी के निदेर्शानुसार सभी 14 पैकेटों की डीडी किट से जांच की गई, जिसमें गांजा पॉजिटिव पाया गया। बरामद गांजा का वजन करने पर 30 किलो पाया गया। पूछताछ में दोनों ने बताया कि उन्होंने यह गांजा राउरकेला से खरीदा था और रांची बस स्टैंड जाकर राकेश नामक व्यक्ति के कहने पर किसी अन्य व्यक्ति को देने जा रहे थे। सभी कानूनी औपचारिकताओं के बाद दोनों आरोपितों को बरामद गांजा सहित अन्य सामान के साथ जीआरपी हटिया को सौंप दिया गया।

रांची में झारखंड कैटरर्स एसोसिएशन की बैठक, कैटरर्स दिवस की तैयारियां पूरी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड कैटरर्स एसोसिएशन ने गुरुवार को होटल ग्रीन पार्क में कैटरर्स दिवस की तैयारियों के लिए सामूहिक बैठक की। संयोजक वकील साव के संचालन में हुई इस बैठक का उद्देश्य कैटरर्स को जीएसटी, फूड लाइसेंस और ट्रेड लाइसेंस के प्रति जागरूक करना था।अध्यक्ष कमल अग्रवाल ने बताया कि बैठक में कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा हुई। इसमें इंडियन ऑयल के कमर्शियल गैस के उपयोग से लागत बचत और सुरक्षा जागरूकता पर जोर दिया गया। सचिव अरुण सिंह ने बताया कि अब समय के साथ सरकारी नियमों का भी पालन करना जरूरी है, जिसके लिए झारखंड के सभी कैटरर्स के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गयी है, जो कैटरर्स दिवस के दिन 19 सितंबर को दिन में 11 बजे से रॉयल गार्डन बैंक्वेट हॉल में आयोजित की जाएगी। उन्होंने बताया कि फूड लाइसेंस, ट्रेड लाइसेंस, जीएसटी संबंधित अधिकारी विभिन्न विषयों पर जानकारी उपलब्ध कराएंगे। साथ ही जीएसटी पर सीए हर्ष अग्रवाल अपने विचार व्यक्त करेंगे ।इस अवसर पर झारखंड कैटरर्स एसोसिएशन के मीडिया प्रभारी राहुल कुमार कश्यप ने बताया की इस कैटरर्स दिवस पर कैटरर्स परिवार के लिए विशेष आयोजन किया जाएगा। बैठक में दीपेश, राकेश, रोशन, संजय, सपन, तपन, सुरेश, विकाश, पंकज, नवीन, अजय, रणजीत, गुड्डू और अन्य गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे।

रांची नगर निगम ने शुरू किया स्वच्छता ही सेवा अभियान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) के तहत स्वच्छता ही सेवा अभियान दिनांक 17 सितंबर से 02 अक्टूबर 2025 तक संचालित किया जा रहा है। इस अवसर पर रांची नगर निगम द्वारा शहरवासियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने एवं स्वच्छ शहर की दिशा में जनसहभागिता सुनिश्चित कराने हेतु विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं। रांची नगर निगम की टीम द्वारा विभिन्न वार्डों, शैक्षणिक में सफाई अभियान, स्वच्छता शपथ, जन-जागरूकता, श्रमदान, स्वच्छता शपथ, पेंटिंग एवं निबंध प्रतियोगिता, स्कूल-कॉलेजों में संवाद कार्यक्रम तथा सार्वजनिक स्थानों और पूजा पंडालों में विशेष सफाई अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में आज, निम्न गतिविधियां संचालित की गईः 1. स्कूल कॉलेज/सरकारी संस्थान में स्वच्छता शपथ। 2. 36 सामुदायिक/ पब्लिक शौचालय में विशेष सफाई अभियान। 3. विभिन्न स्कूल में निबंध प्रतियोगिता। 4. विभिन्न स्कूल में पेंटिंग प्रतियोगिता। 5. सभी वार्ड क्षेत्र में विशेष सफाई अभियान। 6. घर-घर जागरूकता अभियान। ची नगर निगम सभी सम्मानित नागरिकों से अपील किया है कि वे इस महाअभियान में सक्रिय भागीदारी निभाते हुए अपने शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाने में सहयोग करें।

विकास विरोधी है सरकार, झारखंड बन गया आतंकवादियों का सेफ जोन : अरुण सिंह

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री और सांसद अरुण सिंह ने राज्य सरकार और राहुल गांधी पर जमकर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि एक तरफ भारत सरकार नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गांव, गरीब किसान, आदिवासी, दलित, पिछड़े सभी को विकास की मुख्यधारा में जोड़ने का निरंतर प्रयास कर रही। वहीं राज्य की सरकार लूट खसोट, घोटाला, अवैध खनन, तुष्टीकरण को बढ़ावा दे रही। राज्य में विकास पूरी तरह ठप है, सड़के टूटी हुई है, बिजली व्यवस्था चरमराई है। अरुण सिंह गुरुवार को प्रदेश भाजपा कार्यालय में प्रेसवार्ता में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य में जंगलराज की स्थिति है, उग्रवाद फिर से बढ़ रहा। तुष्टीकरण की राजनीति को बढ़ावा देने के कारण राज्य में आईएसआई के एजेंट सुरक्षित पनाह पाते हैं। उन्होंने कहा कि अवैध उत्खनन , पत्थर माफिया का विरोध करने पर सूर्या हांसदा जैसे सामाजिक राजनीतिक कार्यकर्ता की हत्या हो रही। उन्होंने कहा कि झारखंड एक अनूठा राज्य है जहां घोटालों की फाइल गायब हो जाती है। राज्य में एक प्रकार से अफरातफरी का माहौल है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार की ओर से प्रचुर मात्रा में यूरिया खाद मिलने के बाद भी राज्य में यूरिया की कालाबाजारी हो रही। उन्होंने कहा कि युवा रोजगार के लिए दर दर भटक रहे, मंईयां सम्मान के नाम पर भी हेमंत सरकार बहनों को धोखा दे रही। उन्होंने कहा कि जल जीवन मिशन झारखंड में अभी तक अधूरा है। उन्होंने कहा कि हेमंत सरकार को जनता ने लूट खसोट के लिए वोट नहीं दिया बल्कि वादा निभाने के लिए दिया है लेकिन यह सरकार फिर एकबार जनता को धोखा दे रही। राहुल गांधी के बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए उन्होंने कहा कि राहुल गांधी अपरिपक्व हैं और खुद को बेताज बादशाह समझते हैं। उन्होंने कहा कि वे लगातार संवैधानिक संस्थाओं पर प्रहार कर रहे है। वे सर्वाधिक झूठ बोलने वाले व्यक्ति हैं। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी कांग्रेस पार्टी को धरातल से पाताल पर पहुंचाने के लिए आमदा हैं। उन्होंने कहा कि पार्टी से निकाले जाने के भय से कांग्रेस के लोग चुप रहते हैं। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी की जहां चुनाव जीतते हैं वहां वोटर लिस्ट, ईवीएम सब ठीक रहता है और जहां हारते हैं वहां खराब होता है,वोट की चोरी दिखती है। आखिर राहुल गांधी को समझाए कौन? उन्होंने कहा कि बिहार चुनाव में इंडी गठबंधन का सफाया होगा और एनडीए की फिर से मजबूत सरकार बनेगी। प्रेसवार्ता में प्रदेश महामंत्री मनोज कुमार सिंह, प्रदेश मीडिया प्रभारी शिवपूजन पाठक, प्रदेश प्रवक्ता अजय साह, प्रदेश सह मीडिया प्रभारी योगेंद्र प्रताप सिंह मौजूद थे।

एक नजर

पूर्व मंत्री रामजी लाल शारदा के पुत्र का आकस्मिक निधन

रांची : झारखंड के पहले विधि मंत्री और हटिया से तीन बार विधायक रहे रामजी लाल शारदा के इकलौते सुपुत्र मुकेश शारदा का निधन गुरूवार को हृदय गति रूक जाने से हो गई। यह जानकारी रोहित शारदा ने दी। उन्होंने बताया कि उनके भाई मुकेश शारदा सुबह 7.30 बजे ठीक-ठाक स्थिति में थे। मॉर्निंग वॉक और जिम के लिए निकले थे। साथियों ने पुराना हाईकोर्ट के पास उन्हें छोड़ दिया। मुकेश वहां से वह पैदल चलकर घर तक आए। लेकिन सीसीटीवी कैमरे में वे गिरे हुए पाए गए। रोहित शारदा ने बताया कि स्वर्गीय मुकेश का अंतिम संस्कार 19 सितंबर की सुबह 10 बजे अंतिम यात्रा डोरंडा स्थित निवास स्थान से निकलकर हरमू मुक्ति धाम पहुंचेगी, जहां उन्हें अंतिम विदाई दी जाएगी। मुकेश शारदा के निधन की सूचना पर केन्द्रीय राज्य रक्षा मंत्री सह रांची के सांसद संजय सेठ, भाजपा के पदाधिकारी सहित कई लोगों ने उनके आवास पहुंचकर संवेदना प्रकट की। रोहित शारदा ने बताया कि मुकेश शारदा काफी मिलनसार और सामाजिक प्रवृति के व्यक्ति थे। वे अपने पीछे धर्मपत्नी संगीता शारदा, माता उषा शारदा, बेटा गौरव शारदा और आगरा में बेटी वैभवी, दामाद सहित भरापूरा परिवार छोड गए।

होटल ब्लूज शिवालिक में डांडिया नाइट कार्यक्रम 20 सितंबर से शुरू

रांची : झारखंड की राजधानी रांची में आगामी 20 सितंबर को होटल ब्लूज शिवालिक में शाम छह बजे से 'डांडिया नाइट' का कार्यक्रम शुरू किया जाएगा। इसमें सुमधुर गानों पर नृत्य कार्यक्रम का आयोजन होगा। इसकी जानकारी होटल के संचालक अरविंद चौधरी ने गुरुवार को दी। अरविंद चौधरी ने बताया कि कार्यक्रम माउंट डिवाइन के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है। प्रतिभागियों में सर्वश्रेष्ठ परिधान वालों को ट्रॉफी देकर और बेहतरीन गरबा नृत्य करने वालों को डांडिया स्टीक, वेलकम ड्रिंक, स्नैक्स और रात्रि भोजन कराकर सम्मानित किया जाएगा। इसमें शामिल होने वालों में एक व्यक्ति को बतौर पास 999 रुपये, जोड़ी को 1499 रुपये और पारिवारिक पास के लिए 1999 रुपये देने होंगे। पारिवारिक पास पर चार व्यक्ति शामिल हो सकते हैं।

विस सचिवालय के उप सचिव को दी गई श्रद्धांजलि

रांची : झारखंड विधानसभा सभा सचिवालय में उप सचिव के पद पर कार्यरत पदाधिकारी कमलेश कुमार दीक्षित का 17 सितंबर देर रात आकस्मिक निधन हुआ। उनके पार्थिव शरीर को गुरूवार को झारखंड विधानसभा लाया गया। जहां झारखंड विधानसभा अध्यक्ष रबींद्रनाथ महतो सहित अन्य सदस्यों विधानसभा के पदाधिकारी और कर्मचारियों ने अंतिम दर्शन कर श्रद्धांजलि दी। मौके पर विधानसभा के प्रभारी सचिव माणिक लाल हेंब्रम और विधानसभा सचिवालय के अधिकारियों ने संबोधित किया। हेंब्रम ने अपने शोक संदेश में कहा कि कमलेश कुमार दीक्षित की कर्त्तव्यनिष्ठा, मृदुभाषी व्यवहार और कार्य कुशलता के लिए सभा सचिवालय परिवार उन्हें सदैव याद रखेगा। ईश्वर उनकी पुण्य आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें। परिजनों को दुख सहने का आत्मबल प्रदान करें। मौके पर विधानसभा परिसर में सबों ने मौन रखकर उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। जानकारी के अनुसार स्वर्गीय कमलेश कुमार दीक्षित का जन्म नौ फरवरी 1971 को ग्राम-जीतपूर, बेगुसराय, बिहार में हुआ था। उन्होंने एक सितंबर 1998 को बिहार विधानसभा में चतुर्थ लिपिक श्रेणी के पद पर अपनी सेवा की शुरूआत की थी।

संक्षिप्त खबरें

महिलाओं के जीवन संघर्ष गाथा पर आधारित दुखिया उपन्यास का विमोचन

रांची : राज्यपाल संतोष गंगवार से झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा (जेएलकेएम) के केंद्रीय उपाध्यक्ष देवेंद्र नाथ महतो ने बुधवार को राजभवन में मुलाकात की। इस दौरान दुखिया खोरठा उपन्यास का विमोचन किया गया। इस मौके पर राज्यपाल को रांची विश्वविद्यालय के खोरठा क्षेत्रीय एवं जनजातीय भाषा विभागाध्यक्ष तथा प्रख्यात शिक्षाविद् डॉ कुमारी शशि की कृति दुखिया खोरठा उपन्यास, चर्चित लेखक देवकुमार की अपनी कृति मैं हूं झारखंड और बिरहोर हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश भी भेंट किया गया। उपन्यास की लेखिका डॉ कुमारी शशि ने कहा कि दुखिया खोरठा उपन्यास महिलाओं के जीवन संघर्ष की सजीव गाथा है। इसमें एक ऐसी महिला की कहानी है, जिसे समाज ने बहिष्कृत किया, जिसके पास घर होते हुए भी घर नहीं था। माता-पिता होते हुए भी वह अनाथ जैसा जीवन जीती रही। फिर भी उसने संघर्ष करते हुए अपने सपनों को पूरा किया। राज्यपाल ने कहा कि दुखिया समाज में महिलाओं से जुड़े मुद्दों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सहायक साबित होगा। वहीं देवेंद्र नाथ महतो ने कहा कि साहित्य समाज का आईना है। आज भी 21वीं सदी में महिलाएं उपेक्षा, प्रताड़ना और संघर्ष का सामना कर रही हैं। दुखिया जैसी रचनाएं महिलाओं में क्रांति और जागरूकता जगाने का काम करेंगी। मौके पर लेखक अनंत महतो, सुमार महतो, छात्र नेता चंदन कुमार रजक सहित कई गणमान्य लोग मौजूद थे।

कांके में ठेका श्रमिकों ने समस्याओं को लेकर जताया आक्रोश

रांची : झारखंड की राजधानी रांची के शहर कांके में गुरुवार को इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ कोल मैनेजमेंट (आईआईसीएम) के श्रमिक संघ ने ठेका श्रमिकों की समस्याओं को लेकर बैठक आयोजित की। इसमें उन्होंने श्रमिकों की समस्याएं और उनकी मांगें पूरी नहीं होने पर प्रबंधन के खिलाफ आक्रोश जताया। बैठक की अध्यक्षता करते हुए संघ के अध्यक्ष अजय राय ने चेतावनी दी कि यदि 15 दिनों के भीतर श्रमिकों की लंबित मांगों का समाधान नहीं किया गया तो ठेका श्रमिक चरणबद्ध आंदोलन करेंगे। इसकी पूरी जिम्मेदारी आईआईसीएम प्रबंधन और प्रशासन की होगी। बैठक में समस्याओं के बाबत एक ज्ञापन पत्र केंद्रीय मंत्री, झारखंड के मुख्यमंत्री, चेयरमैन कोल इंडिया लिमिटेड और श्रम आयुक्त झारखंड को भेजा जाएगा। राय ने कहा कि कोल इंडिया लिमिटेड के निदेशक मंडल ने ठेका श्रमिकों को बीमा, आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधा देने का निर्णय लिया था, लेकिन आईआईसीएम प्रबंधन की उदासीनता के कारण इनका अब तक क्रियान्वयन नहीं हो सका है। श्रमिकों का ईएल, ग्रेच्युटी और बोनस पिछले दो महीने से बकाया है। अगस्त माह का वेतन भी अब तक जारी नहीं हुआ है। संघ ने आरोप लगाया कि प्रबंधन ने केवल कागजी घोषणाएं की हैं, जबकि बीमा, स्वास्थ्य, आवास और बच्चों की शिक्षा जैसी मूलभूत सुविधाएं अब तक श्रमिकों को नहीं मिली हैं। वहीं, 30 वर्षों से कामकर रहे कई श्रमिकों को स्थायी नहीं किया गया, जबकि कुछ को अधिकारियों की कृपा से मनमानी पदोन्नति दी गई है। इस मौके पर विजय शर्मा, धर्मेंद्र कुमार, मनोज सिंह, आलोक झा, वीर बहादुर सिंह, निर्मला देवी, पूनम तिर्की, मदाली कुजुर, राहिल, मदीना खातून, अनीता तिग्गा सहित बड़ी संख्या में श्रमिक मौजूद थे।

सम्मेलन ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर की गुरुजी को भारत रत्न देने की मांग

रांची : झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन ने झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री गुरुजी शिबू सोरेन को भारत रत्न से सम्मानित करने की मांग की है। इस संबंध में सम्मेलन के अध्यक्ष सुरेश चंद्र अग्रवाल और महामंत्री विनोद जैन ने गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर आग्रह किया है। पत्र में कहा गया है कि शिबू सोरेन का जीवन आदिवासी अस्मिता की रक्षा और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना के लिए निरंतर संघर्ष से भरा रहा। वे न केवल आदिवासी समाज, बल्कि वंचित और श्रमिक वर्ग के अधिकारों के लिए आजीवन संघर्षरत रहे। झारखंड राज्य के निर्माण में शिबू सोरेन की ऐतिहासिक भूमिका सर्वविदित है। उन्होंने सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण, जनजातीय संस्कृति और ग्रामीण जीवन के उत्थान में अमूल्य योगदान दिया। इसलिए गुरुजी को भारत रत्न से सम्मानित किया जाना चाहिए। सम्मेलन के अध्यक्ष सुरेश चंद्र अग्रवाल ने कहा कि यदि भारत सरकार शिबू सोरेन को भारत रत्न से अलंकृत करती है तो न केवल झारखंड बल्कि पूरे देश के आदिवासी समाज और लोकतंत्र के पक्षधर लोगों को गर्व और सम्मान की अनुभूति होगी। ऐसे में गुरुजी को भारत रत्न का सम्मान मिलना झारखंड के लिए सौभाग्य की बात होगी।

सीबीएसई नेशनल शूटिंग चैंपियनशिप प्रतियोगिता में रांची की सृष्टि प्रिया तृतीय स्थान पर

रांची : झारखंड की राजधानी रांची स्थित डीएवी पब्लिक स्कूल हेहल की छात्रा सृष्टि प्रिया ने सीबीएसई नेशनल शूटिंग चैंपियनशिप प्रतियोगिता 2025 में अंडर - 19 बालिका वर्ग पीप साइट में तृतीय स्थान हासिल करके अपने माता-पिता और विद्यालय को गौरवान्वित किया। इस प्रतियोगिता का आयोजन ग्रेटर नोएडा में हुआ। इस प्रतियोगिता में अंडर 17, अंडर 19, बालक और बालिकाओं ने भाग लिया। सृष्टि प्रिया ने 400 अंक में से 398 अंक हासिल कर शूटिंग में अपनी श्रेष्ठता को सिद्ध किया। अंडर- 19 पीप साइट बालक, अंडर-19पीप साइट बालिका और अंडर -17 बालक (टीम इवेंट) में चतुर्थ स्थान हासिल कर स्वयं को सिद्ध करने का प्रयास किया। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य विपिन राय ने कहा कि किसी भी प्रतिस्पर्धा में हार-जीत से अधिक मायने रखता है अपनी भागीदारी सुनिश्चित करना और उसे खेल भावना से खेलना। विद्यार्थियों के जीवन में पढ़ाई के साथ-साथ खेल भी आवश्यक है।

एक नजर

बीएसएल कूलिंग पोंड से अज्ञात शव बरामद

कोडरमा : बालीडीह ओपी थाना क्षेत्र अंतर्गत बीएसएल कूलिंग पोंड संख्या-1 से गुरुवार को एक अज्ञात व्यक्ति का शव बरामद किया गया। घटना की जानकारी उस समय मिली जब प्लांट ड्यूटी के लिए जा रहे कर्मचारियों ने डेम में शव तैरते हुए देखा और इसकी सूचना पांच नंबर गेट पर तैनात सीआईएसएफ जवानों को दी। सूचना मिलते ही बालीडीह ओपी पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और शव को गहरे पानी से बाहर निकाला। आवश्यक पंचनामा के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया। ओपी प्रभारी आनंद आजाद ने बताया कि प्रारंभिक जानकारी के अनुसार यह शव संभवत: तेनू बोकारो नहर से बहकर आया हो सकता है। फिलहाल मृतक की पहचान की कोशिश की जा रही है। उन्होंने यह भी कहा कि जांच के बाद ही स्पष्ट हो पाएगा कि मृतक कोई नौकरीपेशा व्यक्ति था अथवा किसी अन्य स्थान का निवासी। पुलिस ने पहचान के लिए आसपास के थानों को भी संदेश भेजा है।

सेक्टर 9 ए में नवविवाहिता की रहस्यमय मौत, दहेज उत्पीड़न की आशंका

बोकारो : स्टील सिटी के सेक्टर 9अ, स्ट्रीट संख्या-2 स्थित आवास संख्या-377 में बुधवार को नवविवाहित सुषमा कुमारी की रहस्यमय परिस्थितियों में मौत हो गई। सुषमा की हाल ही में 20 अप्रैल को शादी हुई थी। परिजनों का आरोप है कि विवाह के बाद से ही सुषमा पर दहेज, खासकर चार पहिया वाहन तथा रुपये लाने का दबाव डाला जा रहा था। परिवारजनों के अनुसार, मृतका की बड़ी बहन स्वीटी को सुबह करीब 11 बजे सुषमा के पति ऋतिक का फोन आया - जिसमें बताया गया कि सुषमा की मौत हो गई है। घर पहुंचने पर स्वीटी ने देखा कि सुषमा बेड पर अचेत अवस्था में पड़ी थी। परिजन उसे आनन-फानन में बोकारो जनरल हॉस्पिटल ले गए, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस जांच में जुटी है। हरला थाना प्रभारी अनिल कश्यप ने बताया कि प्रथम दृष्टया मामला आत्महत्या जैसा प्रतीत हो रहा है, लेकिन अनुसंधान के बाद ही स्पष्ट हो पाएगा कि यह आत्महत्या है या हत्या। घटना के समय पति ऋतिक घर में ही मौजूद था, जिसे पुलिस ने पूछताछ के लिए हिरासत में लिया है। पुलिस ने घटनास्थल के पास लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज भी जब्त कर ली है। मृतका के माता-पिता और बहन ने सुस्पष्ट रूप से दहेज प्रताड़ना और हत्या की आशंका जताई है। पुलिस सभी पहलुओं की बारीकी से जांच कर रही है।

पर्यावरण संरक्षण हेतु वृक्षारोपण समारोह का हुआ आयोजन

बोकारो : लाल बहादुर शास्त्री सेवा समिति एवं चित्रगुप्त महापरिवार बोकारो जिला द्वारा जैना मोड़ स्थित सैमफोड इंटरनेशनल अकादमी के प्रांगण में पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से वृक्षारोपण समारोह आयोजित किया गया। यह आयोजन विद्यालय प्रबंधन के निमंत्रण पर किया गया। समारोह के दौरान स्वर्गीय छवि रानी लाल एवं स्वर्गीय महादेवी सिन्हा की स्मृति में पौधरोपण किया गया। इस अवसर पर समिति के अरुण सिन्हा, भैया प्रीतम,रतनलाल, अर्पिता सिन्हा, प्रियदर्शनी, रेखा प्रसाद, ओमकार सिन्हा, ललेश सिन्हा, सुदीप सिन्हा, विजया लक्ष्मी सहित विद्यालय के निदेशक अरुण कुमार, विद्यालय के शिक्षक एवं नर्सिंग स्टाफ भी मौजूद रहे।

जनरल अस्पताल में राष्ट्रीय "स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान" का हुआ शुभारंभ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : बीएसएल के बोकारो जनरल अस्पताल में राष्ट्रीय "स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान" का शुभारंभ किया गया। इस अभियान का उद्घाटन अधिशासी निदेशक सुरेश रंगानी, अधिशासी निदेशक सुश्री राजश्री बनर्जी, अधिशासी निदेशक विकास मनवटी, अधिशासी निदेशक चित्तरंजन मिश्रा, अधिशासी निदेशक अनिष सेनगुप्ता, अधिशासी निदेशक प्रियरंजन, मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी एवं प्रभारी डॉ. बिभूति भूषण करुणामय, मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. आनंद कुमार, मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. अनिन्दा मंडल तथा मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. इंद्रनील चौधरी द्वारा पारंपरिक रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया। स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान का उद्देश्य महिलाओं के समग्र स्वास्थ्य, पोषण, मातृत्व और सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना है, ताकि सशक्त नारी के माध्यम से परिवार एवं समाज को भी सशक्त बनाया जा सके। इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों ने महिला स्वास्थ्य की प्राथमिकता पर बल देते हुए कहा कि स्वस्थ नारी ही सशक्त समाज की आधारशिला है। बोकारो जनरल अस्पताल द्वारा इस अभियान के अंतर्गत स्वास्थ्य जाँच शिविर, परामर्श सत्र एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, जो 02 अक्टूबर 2025 तक चलेंगे। इन कार्यक्रमों के अंतर्गत बीएसएल में कार्यरत महिलाओं एवं स्वास्थ्यकर्मियों को बड़ी संख्या में स्वास्थ्य जाँच और परामर्श की सेवाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं। इसके अतिरिक्त, डीएवी इस्पात विद्यालय समूह के स्कूलों में किशोरी छात्राओं के बीच मासिक धर्म स्वच्छता एवं पोषण संबंधी जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे। इसी अभियान के तहत दिनांक 01.10.2025 को बोकारो जनरल अस्पताल द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान का भी एक कार्यक्रम रखा गया है जिसमें बोकारो स्टील सिटी के आम जनों तथा समाज सेवी संस्थानों से अपील किया जा रहा है कि इस रक्त महादान में बड़ी संख्या में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें। बोकारो जनरल अस्पताल प्रशासन ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर पर प्रारंभ हुआ यह अभियान बीएसएल में कार्यरत महिलाओं और उनके परिवारों के स्वास्थ्य संवर्धन की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा।

जय झारखंड मजदूर समाज कार्यालय में धूमधाम से संपन्न हुआ श्री श्री विश्वकर्मा पूजा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : सखा सहयोग सुरक्षा समिति एवम जय झारखंड मजदूर समाज के संयुक्त तत्वावधान में समिति के संरक्षक सह महामंत्री एवम यूनियन के महामंत्री बी के चौधरी जी के नेतृत्व में जय झारखंड मजदूर समाज यूनियन कार्यालय सेक्टर - 9, श्री श्री विश्वकर्मा पूजा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री श्री विश्वकर्मा बाबा का पूजा अर्चना विधिवत रूप से धूमधाम के साथ मनाया गया, संध्या 7:00 बजे से साँस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, जिसे उपास्थित श्रद्धालुओं ने भरपुर लुत्फ उठाया। प्रत्येक बर्षों की भांति पूजा का मुख्य आकर्षण महाप्रसाद खिचड़ी का आयोजन आज को किया गया। जिसमें बोकारो स्टील प्लांट के गणमान्य पदाधिकारीयो, झारखंड मुक्ति मोर्चा के पदाधिकारियों, बोकारो स्टील प्लांट के कर्मचारियों एवं ठेकाकर्मी, महिलाओं, बच्चें इत्यादि ने महाप्रसाद खिचड़ी का ग्रहण किया। इस अवसर पर महामंत्री बी के चौधरी ने अपने संबोधन में कहा कि बोकारो स्टील प्लांट श्री श्री विश्वकर्मा बाबा के कृपा से नित्य दिन रिकार्ड उत्पादन करते हुए नाम रौशन करे, एवं सभी इस्पात कर्मी, ठेकाकर्मी,अधिकारी वर्ग सकुशल पूर्वक सुरक्षित घर वापसी करे, साथ ही साथ बोकारो नगरी शांति पूर्वक माहौल में रहे। संध्या 5:00 बजे रंग अबीर, गुलाल, ढोल नगाड़ों के साथ स्थानीय कुलिंग पौन्ड सेक्टर - 9 मे श्री श्री विश्वकर्मा बाबा का मूर्ति को विसर्जित किया गया।

पुलिस की बड़ी सफलता: हथियार और चोरी का ट्रैक्टर के साथ 6 अपराधी गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : पुलिस ने मंगलवार को एक बड़ी कार्रवाई करते हुए लूट और चोरी की घटनाओं में शामिल अंतरजिला गिरोह का भंडाफोड़ किया। पुलिस अधीक्षक हरविंदर सिंह को मिली गुप्त सूचना के आधार पर चन्द्रपुरा थाना क्षेत्र अंतर्गत न्यू पिपराडीह मिलन चौक पर वाहनों की चेकिंग की जा रही थी। इसी दौरान एक संदिग्ध मारुति सुजुकी टूर्स को रोकने का प्रयास किया गया। पुलिस को देखते ही गाड़ी सवार दो युवक भागने लगे, जिन्हें घेरकर दबोच लिया गया। तलाशी में एक आरोपी मुकेश यादव के पास से लोडेड रिवॉल्वर और जिंदा गोली, जबकि दूसरे आरोपी शंकर दास से धारदार भुजाली और मोबाइल फोन बरामद हुआ। पूछताछ में दोनों ने खुलासा किया कि वे चन्द्रपुरा रेलवे स्टेशन के पास यात्रियों को लूटने की योजना बना रहे थे। आगे की पूछताछ में यह भी सामने आया कि दोनों अपने अन्य साथियों उमेश दास, दिलीप महतो, छोटु विश्वकर्मा और राजेश करमाली के साथ मिलकर 22 जुलाई को मदनपुर गांव से एक ट्रैक्टर चोरी कर चुके थे, जिसे हजारीबाग जिले के औरिया गांव निवासी कबाड़ी प्रमोद साव को बेच दिया था। इस सुराग पर पुलिस ने छापेमारी कर चोरी का ट्रैक्टर बरामद कर लिया और सभी छह आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार अपराधियों में शामिल हैं मुकेश यादव, शंकर दास, दिलीप महतो, उमेश दास, राजेश करमाली और कबाड़ी प्रमोद साव। पुलिस ने अपराधियों के पास से एक रिवॉल्वर, एक जिन्दा गोली, एक धारदार भुजाली, तीन मोबाइल फोन, संदिग्ध कार और चोरी किया हुआ ट्रैक्टर ट्रॉली सहित बरामद किया है।

पुलिस मुख्यालय द्वारा आवंटित मोटरसाइकिल को हरी झंडी दिखाकर किया गया रवाना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा : पुलिस मुख्यालय, झारखण्ड रॉची द्वारा आवंटित 20 मोटरसाइकिल को अनुदीप सिंह पुलिस अधीक्षक कोडरमा द्वारा जिले में पुलिस व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाने के उद्देश्य से हरी झंडी दिखाकर थानो क लिए रवाना किया गया । इन मोटरसाइकिलों को विशेष रूप से विधि-व्यवस्था को बनाए रखने, गश्ती व्यवस्था को गति देने तथा अपराध पर शीघ्र नियंत्रण के उद्देश्य से उपलब्ध कराया गया है। मोटरसाइकिलों के मिलने से थाना में पुलिस बल की त्वरित उपलब्धता सुनिश्चित होगी और आपातकालीन घटनाओं पर समयबद्ध कार्रवाई संभव हो सकेगी । इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक ने उपस्थित पुलिस अधिकारियों एवं कर्मियों को संबोधित करते हुए कहा कि इन मोटरसाइकिलों का सदुपयोग कर जनता में सुरक्षा की भावना को और मजबूत करें तथा अपराधियों में कानून का भय उत्पन्न हो । उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि नियमित गश्ती दलों को इन मोटरसाइकिलों पर तैनात किया जाए और प्रत्येक थाना क्षेत्र में गश्ती मार्ग का निर्धारण कर उसका पालन सुनिश्चित किया जाए । पुलिस अधीक्षक महोदय,कोडरमा द्वारा सभी थाना प्रभारियों को निर्देश दिया गया कि इस मोटरसाइकिल का उपयोग लोक हित में तथा ट्रेफिक नियमों के पालन में किया जाएगा । विभिन्न थाना/ओ0पी0 में निम्न प्रकार मोटरसाइकिल वितरित की गई है:-

कोडरमा थाना- 04 मोटरसाइकिल
तिलैया थाना- 04 मोटरसाइकिल
चन्दवारा थाना- 02 मोटरसाइकिल
नवलशाही थाना- 02 मोटरसाइकिल
मरकच्चो थाना- 02 मोटरसाइकिल
जयनगर थाना- 02 मोटरसाइकिल
सतगावां थाना- 02 मोटरसाइकिल
डोमचांच थाना- 01 मोटरसाइकिल
तिलैया डैम ओ0पी0- 01 मोटरसाइकिल ।

अनुमंडल पदाधिकारी ने दुर्गा पूजा पंडालों का किया निरीक्षण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

झुमरीतिलैया : अनुमंडल पदाधिकारी रिया सिंह ने गुरुवार को नगर परिषद क्षेत्र स्थित अड्डी वाला दुर्गा पूजा समिति एवं बेलाटांड दुर्गा पूजा समिति का पूजा पंडालों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने पूजा समिति के पदाधिकारियों को कई दिशा-निर्देश दिए। एसडीओ ने कहा कि पूजा परिसर में स्वच्छता व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया जाए। पूरे पंडाल में समुचित लाइट की व्यवस्था हो ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो। साथ ही पंडाल परिसर की सुरक्षा को देखते हुए हर कोने में सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएं। उन्होंने समिति के लोगों को अधिक से अधिक वालंटियर लगाने की भी सलाह दी, ताकि भीड़-भाड़ के समय किसी भी प्रकार कि परेशानी न हो ।वही पूजा समिति के लोगो को सड़क से सटा के लगाए गए बास को भी हटाने को कहा गया । वहीं नगर प्रशासक अंकित गुप्ता ने पूजा समितियों से अपील किया कि पूजा पंडालों में साफ-सफाई नियमित रूप से की जाए ओर जगह जगह पर डस्टबिन अवश्य रखें ताकि श्रद्धालुओं को स्वच्छ वातावरण मिल सके। निरीक्षण के दौरान नगर प्रशासक अंकित गुप्ता, नगर प्रबंधक लेमांशु कुमार एवं नगर प्रबंधक रणधीर कुमार वर्मा मौजूद थे।

प्रेमी से पति की हत्या कराने वाली पत्नी सहित हत्यारा गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा : तिलैया डैम ओ0पी0 पुलिस को सूचना प्राप्त हुई कि जमकटी बरसोतियाआहर के निकट मैदान में एक शव पाया गया है । इस सूचना का सत्यापन एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु प्रभारी, तिलैया डैम ओ0पी0 दल-बल के साथ सूचना स्थल पर गये, जहॉ शव कि शिनाख्त गोवर्धन साव पिता- स्व0 शिबू साव उर्फ रामु साव, साकिन- चमगुदोखूर्द, थाना- जयनगर, जिला- कोडरमा के रूप में हुई । इसी बीच मृतक के भाई विजय साव ,पिता- स्व0 शिबू साव उर्फ रामु साव, साकिन- चमगुदोखूर्द, थाना- जयनगर, जिला- कोडरमा द्वारा यह लिखित आवेदन प्रभारी, तिलैया डैम ओ0पी0 को दिया गया कि उनके भाई गोवर्धन साव की हत्या अज्ञात लोगों द्वारा सर कुचल कर दी गयी है तथा उसका शव जमकटी बरसोतियाआहर के निकट मैदान में पाया गया है । वादी के उक्त आशय के लिखित आवेदन के आधार पर जयनगर (तिलैया डैम ओ0पी0) थाना कांड संख्या- 213/25 17.09.2025 धारा- 103(1) /238/3(5) बी0एन0एस0 दर्ज कर अनुसंधान प्रारंभ किया गया । कांड की गंभीरता को देखते हुए कांड का उद्भेदन, घटना में संलिप्त अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु पुलिस अधीक्षक महोदय,कोडरमा के द्वारा रतिभान सिंह, पुलिस उपाधीक्षक(मु0), कोडरमा के नेतृत्व में एक विशेष टीम का गठन किया गया । उक्त टीम के द्वारा तत्परतापूर्वक कार्रवाई करते हुए एवं तकनिकी साक्ष्यों तथा गुप्तचरों की सहायता से महज चार घंटो के अंदर कांड का उद्भेदन करते हुए घटना में संलिप्त कुल तीन लोगों की गिरफ्तारी की गयी, जिसमें से एक मृतक की पत्नी बबीता देवी है, जो अपने अपराध स्वीकारोक्ति बयान में बतायी कि वह अपने प्रेमी अजय पासवान जो उसी के घर के बगल का रहने वाला है, उससे एवं उसके एक चचेरे भाई नितीश कुमार पासवान द्वारा अपने पति की हत्या करवायी है, ताकि उसे अपने प्रेमी से मिलनें में कोई रूकावट नही रहें एवं अपने पति कि प्रतड़ना से मुक्ति मिल सके । इसी प्रकार गिरफ्तार अभियुक्त अजय पासवान द्वारा अपने अपराध स्वीकारोक्ति बयान में बताया गया कि वह अपनी प्रेमिका बबीता देवी के कहने पर कि उसके पति को रास्ते से हटा दो एवं इस काम में जो भी पैसा खर्च होगा वह मैं दुँगी तथा वह अपना बैक ऑफ इंडिया का ए0टी0एम0 कार्ड पिन कोड सहित दी। जिसके बाद दिनांक- 16.09.2025 को देर शाम में अपने चचेरे भाई नितीश कुमार पासवान के सहयोग से मृतक को मोटरसाइकिल पर बैठाकर जमकटी बरसोतियाआहर के निकट मैदान में ले गये, जहॉ उसे शराब पिलाये । जब वह शराब के नशे में धुत हो गया, तब उसके गले में गमछी लपेटकर एक छोर स्वयं पकड़े तथा दुसरा छोर उसका चचेरा भाई नितीश कुमार पासवान पकड़ा तथा गमछी को जोर से खींचकर उसका गला घोंट दिये। जब वह अचेत हो गया तब पास पड़े एक बड़े पत्थर को उठाकर उसके सर पर जोर से पटक दिया, जिससे उसका सर बुरी तरह कुचल गया तथा उसकी मृत्यु हो गई । जिसके बाद उसके पॉकेट से उसका मोबाइल निकल लिए तथा घटना में प्रयुक्त गमछी, पत्थर कुछ दुरी पर फेक दिये। जिसके बाद वहॉ से दोनो मोटरसाइकिल से अपने घर आ गये । घर आने के क्रम में मृतक का मोबाइल से सिम निकालकर अपने पास रख लिये तथा मोबाइल को रास्ते में तालाब में फेंक दियें ।

संक्षिप्त खबरें

दुर्गा पूजा को लेकर थाना परिसर में शांति समिति की हुई बैठक

जयनगर (कोडरमा) : आगामी दुर्गा पूजा पर्व को शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण माहौल में मनाने को लेकर गुरुवार को थाना परिसर में शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रमुख अंजू देवी ने की। इस मौके पर माइक इंस्पेक्टर सुजीत कुमार,बीडीओ गौतम कुमार एवं सीओ सारांश जैन,थाना प्रभारी बब्लू कुमार सिंह भी मौजूद रहे। अधिकारियों ने कहा कि दुर्गा पूजा आस्था और संस्कृति का प्रतीक है, जिसे शांतिपूर्ण तरीके से मनाना सबकी जिम्मेदारी है। बैठक में पूजा के दौरान विधि-व्यवस्था, पंडालों में सुरक्षा प्रबंधन, यातायात नियंत्रण, अवैध शराब बिक्री पर रोक, पेट्रोलिंग बढ़ाने सहित जुलूस के मार्ग पर विशेष ध्यान देने पर चर्चा की गई। इंस्पेक्टर सुजीत कुमार ने कहा कि पूजा समितियों को प्रशासन हर संभव सहयोग देगा। बीडीओ गौतम कुमार ने कहा कि प्रशासन की ओर से सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम रहेंगे और किसी भी तरह की अशांति फैलाने वालों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। थाना प्रभारी बब्लू कुमार सिंह ने कहा पूजा के दौरान प्रशासन पूरी तरह अलर्ट पर है उपद्रव मचाने वालों को बक्सा नहीं जाएगा,पूजा पंडाल में सीसीटीवी कैमरे लगाने सहित अन्य निर्देश दिया। सहित अन्य बैठक में प्रमुख अंजू देवी, उप प्रमुख राजनारायण सिंह, बीस सूत्री अध्यक्ष इस्लाम अंसारी, एसआई प्रतीत टोपनो, केडी प्रसाद, समसूदीन खान, अशोक सिंह, राजेंद्र यादव, पवन सिंह, किशोर साव, बाबू खान, राजकुमार यादव, अशोक यादव, रवि यादव, वसी अहमद, राम कुमार, कैलाश प्रसाद, अरमान खान, सरवर खान, बलराम कुमार, इंद्रदेव यादव, राजेंद्र दास, सुभाष यादव, दीपक वर्णवाल, दीपक कश्यप सहित बड़ी संख्या में गणमान्य लोग मौजूद रहे।

ज्योति कलश लेकर रथ पहुंचा कोडरमा विधायक नीरा यादव ने की पूजा

कोडरमा : अखिल विश्व गायत्री परिवार, शांतिकुंज, हरिद्वार के तत्वावधान में सिद्ध गायत्री पीठ शांति कुंज, हरिद्वार में जल रही अखंड ज्योति के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में ज्योति कलश रथ यात्रा पूरे भारत में जन जन तक पहुंच रही है। गुरुवार को ज्योति लेकर रथ कोडरमा पहुंची जहां कोडरमा विधायक डॉ नीरा यादव ने ज्योति और कलश का विधिवत पूजन किया। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति और जीवन में गायत्री मंत्र का बहुत महत्व और प्रभाव है। इस दौरान विधायक आवास पर हुए कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सुरेश कुमार वर्मा ने कहा कि हमारे भारतीय जीवन और संस्कृति में गायत्री मंत्र का बहुत बड़ा प्रभाव है। गायत्री मंत्र भारतीय अस्तित्व का प्राण है, जो जन जन को बौद्धिक चेतना प्रदान कर उसके मन और हृदय में वास्तविक शांति प्रदान करता है। वेदमाता गायत्री विश्व के कोटि कोटि आराधको के दैहिक, दैविक और भौतिक तापों को दूर करने का सशक्त साधन है। वहीं शीला बरनवाल ने कहा कि युगपुरुष आचार्य श्री राम जी ने शांतिकुंज, हरिद्वार की स्थापना की और वहां मां गायत्री एवं गायत्री मंत्र की उपासना करवायी। उन्होंने अपने पुरुषार्थ, त्याग और कठिन तपस्या से गायत्री मंत्र की साधना जन जन तक पहुंचाने और सभी को गायत्री परिवार से जोड़ने एवं सभी से मां गायत्री की उपासना करवाने का स्तुत्य तथा सराहनीय कार्य किया। इस अवसर पर यात्रा के नेतृत्वकर्ता अशोक बाबा, सुनीता बरनवाल, शिव कुमार बरनवाल, बिनोद कुमार मुन्ना, लखन कुमार, कुंती देवी, सुजाता देवी, मधु कुमारी, ललिता देवी, मधु देवी, वीना देवी, ममता बसंत, संजय सिंह, रंजीत सिंह आदि मौजूद रहे।

बोकारो मृत कर्मचारी आश्रित संघ की बैठक रोजगार को लेकर आंदोलन की चेतावनी

बोकारो : मृत कर्मचारी आश्रित संघ का साप्ताहिक बैठक टु-टैंक गार्डन में आयोजित किया गया। बैठक की अध्यक्षता सनी देओल ने की तथा संचालन सम्भु कुमार ने किया। इस दौरान संघ के अध्यक्ष ने संबोधित करते हुए कहा कि जब पूरे देश में औद्योगिक इकाइयों में विश्वकर्मा पूजा हर्षोल्लास से मनाई जा रही है, वहीं बोकारो स्टील प्लांट के दिवंगत कर्मचारियों के परिवार अब भी प्रबंधन की अनदेखी के कारण अंधकार में जीने को मजबूर हैं। अध्यक्ष ने कहा कि एनजेसीएस यूनियनों के समझौते के तहत आश्रित परिवारों के लिए दो विकल्प तय किए गए थे झ अनुकम्पा के तहत नियोजन या डीए बेसिक। अधिकांश परिजनों ने नियोजन को चुनते हुए प्रबंधन को लिखित आवेदन दिया था। तत्पश्चात 1961 के अप्रेंटिसशिप एक्ट के प्रावधानों के आधार पर आश्रित परिवारों को मेडिकल, आवास एवं प्रशिक्षण की सुविधा दी गई और कुशल प्रशिक्षु बनने के बाद इस्पात संयंत्र में नियुक्ति का आश्वासन भी दिया गया। लेकिन वर्षों बीत जाने के बाद भी आश्रितों को नौकरी देने के नाम पर केवल गुमराह किया जा रहा है। संघ ने आरोप लगाया कि उनकी चार सूत्री मांगों को लेकर बोकारो स्टील प्रबंधन से लगातार वार्ता हो रही है, लेकिन अभी तक कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आया है। आश्रित संघ ने चेतावनी दी कि यदि जल्द ही लिखित आश्वासन के साथ रोजगार संगत नियुक्ति नहीं दी गई तो आश्रित परिवार प्रशासनिक भवन के समक्ष कफन यात्रा निकालकर किसी भी समय आंदोलन के लिए बाध्य होंगे। बैठक में मुख्य रूप से सलाम एहसान, सोहन मांझी, अनिल कुमार, महावीर मांझी, श्रीकांत ओझा, शम्शूल अंसारी, शशिकांत कुमार, आशा कुमारी, मेमून निशा, बबीता कुमारी, फुलमनी कुमारी, मन्ना कुमारी, बासमती कुमारी सहित सैकड़ों संख्या में आश्रित भाई-बहन मौजूद रहे।

स्कूल में डांट पड़ने के डर से कुएं में कूदी दो छात्रा, ग्रामीणों ने शिक्षकों पर उठाए सवाल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सरिया : सरिया थाना क्षेत्र के चिरुवां गांव में गुरुवार दोपहर करीब 12 बजे एक दिल दहला देने वाली घटना ने पूरे इलाके को सदमे की चपेट में ले लिया। उत्क्रमित उच्च विद्यालय चिरुवां-कपिलो की आठवीं कक्षा की दो नाबालिग छात्राओं ने स्कूल में अनुपस्थिति के कारण डाँट-फटकार के डर से कुएँ में कूदकर अपनी जान दे दी। मृतक छात्राओं की पहचान चिरुवाँ निवासी तुफैल अहमद की 13 वर्षीय पुत्री जाहिदा खातून और मुख्तार अंसारी की 14 वर्षीय पुत्री गुलफसाँ प्रवीण के रूप में हुई है। घटना की सूचना मिलते ही ग्रामीणों की भारी भीड़ जमा हो गई और लोगों ने शिक्षकों की कार्यशैली पर गंभीर सवाल उठाए।

घटना का पूरा ब्योरा

स्कूल के प्रभारी प्रधानाध्यापक जयप्रकाश रविदास ने बताया कि दोनों छात्राएं प्रतिदिन की तरह सुबह नौ बजे प्रार्थना सभा में शामिल नहीं हुईं। उन्होंने अपना बैग कक्षा में रखा और कहीं चली गईं। लगभग आधे घंटे बाद तीन छात्राएं (जाहिदा, गुलफसाँ और शना प्रवीण) लौटीं। आईटीसी शिक्षक जागेश्वर प्रसाद ने

इसकी सूचना प्राचार्य को दी। पूछताछ पर छात्राओं ने गायब रहने का कारण नहीं बताया, जिसके बाद तीनों को घर भेज दिया गया और अभिभावकों को साथ लेकर आने को कहा गया। काफी देर बाद सहपाठी शना प्रवीण अपने अभिभावक के साथ स्कूल पहुंची, लेकिन अन्य दो छात्राएँ नहीं लौटीं। शना ने बताया कि रास्ते में तीनों आपस में चर्चा कर रही थीं कि अगर अभिभावकों को स्कूल ले गईं, तो अनुपस्थिति का कारण पता चलने पर घरवालों से डाँट पड़ेगी। इसी भय से जाहिदा और गुलफसां कुएं की ओर चली गईं और कूद पड़ीं। ग्रामीणों का मानना है कि शिक्षकों ने छात्राओं को डांटकर और शर्मिंदा करके अभिभावकों को बुलाने को कहा, जिसका बोझ नाबालिग बच्चियाँ नहीं झेल पाईं। एक ग्रामीण ने कहा, शिक्षक चाहते तो मोबाइल या नोटिस से सूचना दे सकते थे, ऐसी त्रासदी टल सकती थी। सहपाठी शना की जुबानीः डर गई थीं दोनों, चप्पल टूटने से मैं बच गई घटना में शामिल सहपाठी शना प्रवीण ने बताया, हिंदी और आईटीसी के शिक्षक हम तीनों से नाराज थे। उन्होंने अभिभावकों को बुलाने के लिए घर भेज दिया। रास्ते में जाहिदा और गुलफसां डर गईं। वे बोल रही थीं, 'स्कूल में तो डाँट सुन ही ली, अब घरवालों से भी सुननी पड़ेगी। कुएं पर जाकर बैठ जाएं।' संयोग से मेरी चप्पल टूट गई, इसलिए मैं उनके साथ नहीं गई और घर चली गई। अभिभावक को लेकर स्कूल पहुँची, जहां शिक्षकों ने शिकायत की। उन्होंने डाँटा भी। जब अन्य दो के बारे में पूछा, तो मैंने बातचीत बता दी।

संक्षिप्त खबरें

जल जमाव की समस्या का त्वरित समाधान, भाकपा- माले और प्रशासन के संयुक्त प्रयास से मिली राहत

सरिया : रांची–दुमका मुख्य मार्ग पर सरिया के बागोडीह चौक के समीप लंबे समय से चली आ रही जल जमाव की समस्या का गुरुवार को त्वरित समाधान किया गया। इस समस्या से आम जनता को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा था, और राहगीरों को हर समय दुर्घटना का डर सता रहा था। पूर्व विधायक कामरेड विनोद कुमार सिंह, अनुमंडल पदाधिकारी संतोष गुप्ता और प्रशासनिक अधिकारियों के संयुक्त प्रयास से दुर्गा पूजा को ध्यान में रखते हुए भू–स्वामियों से संवाद कर आवश्यक कदम उठाए गए, जिससे स्थानीय लोगों को तत्काल राहत मिली। भाकपा–माले राज्य कमिटी सदस्य कामरेड भोला मंडल ने सरिया नगर पंचायत प्रशासन पर सवाल उठाते हुए कहा कि जब जल जमाव की समस्या बनी हुई है, तो नगर पंचायत अधिकारी इसकी अनदेखी क्यों कर रहे हैं उन्होंने कहा कि नगरवासियों से टोल टैक्स और होल्डिंग टैक्स वसूला जा रहा है, लेकिन सुविधाओं से उन्हें वंचित रखा जा रहा है। उन्होंने सवाल उठाया कि जब जिला मुख्यालय में टोल टैक्स नहीं लिया जाता, तो सरिया में यह अन्यायपूर्ण वसूली क्यों भाकपा–माले ने इस अन्याय के खिलाफ मजबूती से लड़ने और जनता को न्याय दिलाने का संकल्प जताया। आर वाई ए जिला अध्यक्ष कामरेड सोनू पाण्डेय ने कहा कि जल जमाव से राहगीरों की परेशानी को देखते हुए तत्काल राहत तो दिलाई गई है, लेकिन यदि इसका स्थायी समाधान नहीं किया गया तो आर वाई ए सड़क पर उतरकर आंदोलन करेगी।

सरिया प्रखंड क्षेत्र में विश्वकर्मा पूजा हर्षोल्लास के साथ संपन्न

सरिया : विश्व के रचयिता शिल्पकार भगवान श्री विश्वकर्मा की पूजा सरिया प्रखंड क्षेत्र में हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। दो दिवसीय इस पूजा में बुधवार को लोगों द्वारा भगवान विश्वकर्मा की मूर्ति की स्थापना कर पूजा–अर्चना की गई। राजमिस्त्री,चालक,मैकेनिक टेक्नीशियन आदि लोगों ने अपने उपकरणों और मशीनों की पूजा कर कार्य स्थल की सुरक्षा और उन्नति की कामना की। पूजन उपरांत दिनभर प्रसाद वितरण का कार्यक्रम चला। वहीं गुरुवार को भगवान विश्वकर्मा की विधिवत पूजन,हवन,आरती के बाद देर शाम तक प्रतिमा का विसर्जन किया गया। पूजा के दौरान कहानी–कहानी लोग सामूहिक भोज का भी आयोजन किया लोगों को विश्वकर्मा पूजा की बधाई दी। सुख–समृद्धि, सामाजिक एकता व भाईचारे को बढ़ावा देने पर जोर दिया। सरिया प्रखंड क्षेत्र में झारखंड ऊर्जा संचरण निगम लिमिटेड, शक्ति उपकेंद्र सरिया, मोटर कामगार यूनियन,सिग्नल डिपार्मेंट, टैक्सी यूनियन, ट्रेक्शन विभाग,आई ओ डब्ल्यू सहित विभिन्न जगहों पर भगवान विश्वकर्मा की प्रतिमा स्थापित कर पूजा की गई जबकि अन्य जगहों पर भी लोगों ने अपने दैनिक उपयोग के कार्य में आने वाले हथियार औजार की पूजा की।

रूडसेट संस्थान में 10 दिवसीय मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण का किया गया शुभारंभ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिल्ली : सिल्ली श्री धर्मस्थल मंजूनाथेश्वर शिक्षण ट्रस्ट एवं केनरा बैंक द्वारा संचालित रुडसेट संस्थान, सिल्ली,में सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में 10 दिवसीय मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण का शुभारंभ तथा 13 दिवसीय बागवानी प्रशिक्षण का समापन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में देवाशीष कुमार चकी जे एस एल पी एस रांची, अभिषेक कुमार, प्रमोद कुमार उपस्थित रहे, कार्यक्रम की अध्यक्षता रुडसेट संस्थान सिल्ली के निदेशक श्री संजीत कुमार ने की। मुख्य अतिथि देवाशीष जी ने कहा कि ग्रामीण युवाओं और किसानों को आत्मनिर्भर बनाने में मशरूम उत्पादन एवं बागवानी जैसे प्रशिक्षण कार्यक्रम अहम भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षु सीखे गए तकनीकी ज्ञान को व्यवहार में उतारें और इसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाएं। अभिषेक जी ने अपने संबोधन में कहा कि JSLPS द्वारा युवाओं को कौशल विकास और स्वरोजगार से जोड़ने की दिशा में लगातार कार्य किया जा रहा है। ऐसे प्रशिक्षण से प्रतिभागियों को आर्थिक रूप से सशक्त बनने का अवसर मिलता है। वहीं, प्रमोद जी ने कहा कि बागवानी और मशरूम उत्पादन आज के समय में अतिरिक्त आमदनी का बड़ा साधन है। वैज्ञानिक पद्धति अपनाकर इसे रोजगार और व्यवसाय दोनों का रूप दिया जा सकता है। समारोह की अध्यक्षता कर रहे निदेशक श्री संजीत कुमार ने बताया कि रुडसेटी, सिल्ली में समय-समय पर विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इनका उद्देश्य है युवाओं और किसानों को आधुनिक तकनीकों से जोड़कर आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करना। समापन अवसर पर प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए। प्रशिक्षुओं ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि प्रशिक्षण से उन्हें न केवल तकनीकी जानकारी मिली, बल्कि स्वरोजगार के नए अवसरों के प्रति भी जागरूकता आई।

बेलडीह स्कूल से दगड़ीगोंडा तक सड़क तत्काल हो मरम्मत : शंभु दास

पटमदा : बिडरा पंचायत के अंतर्गत बेलडीह स्कूल से दगड़ीगोंडा तक की सड़क की जर्जर स्थिति में सुधार लाने की मांग ग्राम प्रधान शंभु दास ने प्रशासन से मरम्मत करवाने की मांग तत्काल की है। उन्होंने बताया कि इस सड़क के बदहाल होने के कारण ग्रामीणों को कुछ दूरी का रास्ता तक करने के चार पांच किमी की दूरी तक करनी पड़ती हैं।

ग्राम प्रधान ने किया लाइन होटल का उद्घाटन

पटमदा : बडाबाजार बंधवान मुख्य सड़क में कुमीर पंचायत भवन के सामने ग्राम प्रधान मृत्युंजय महतो ने महतो लाइन होटल का फीता काटकर उद्घाटन किया।जानकारी देते हुए लाइन होटल संचालन संतोष महतो ने बताया कि इस संस्थान के खुलने से आसपास के ग्राहकों सहित इस रूट में चलने वाली सभी ग्राहकों को बेहतर सेवा देने का प्रयास किया जाएगा।उद्घाटन समारोह में ग्राम प्रधान मृत्युंजय महतो,सनातन महतो,प्रदीप महतो,महेश्वर बेसरा,अमर सोरेन,प्रबोध महतो,संतोष महतो ,ग्राम प्रधान परीक्षित महतो आदि उपस्थित थे।

जनता दरबार में उपायुक्त ने सुनीं लोगों की समस्याएं

सिमडेगा : उपायुक्त सिमडेगा कंचन सिंह के नेतृत्व में जिले में साप्ताहिक जनता दरबार का आयोजन किया गया। इस दौरान शहरी क्षेत्र से लेकर ग्रामीण एवं सुदूरवर्ती इलाकों से बड़ी संख्या में लोग अपनी समस्याओं और शिकायतों के समाधान हेतु पहुंचे। जनता दरबार में भूमि विवाद, मंईया सम्मान योजना, आय प्रमाण पत्र निर्गत करने, जिला कोषागार सिमडेगा में चालान द्वारा जमा राशि की निकासी, भुगतान, प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ, राष्ट्रीय उच्च पथ–320ॠचौड़ीकरण में कम मुआवजा राशि मिलने, पंजी–क्कसुधार एवं अन्य विषयों से जुड़ी शिकायतें सामने आईं। उपस्थित आमजनों ने अपनी समस्याओं को विस्तार से रखा, जिसे उपायुक्त महोदया ने धैर्यपूर्वक सुना। उन्होंने संबंधित विभागीय अधिकारियों को मौके पर ही त्वरित कार्रवाई करने एवं आवश्यक दिशा–निर्देश दिए गए। इस दौरान अन्नु देवी अपने दिव्यांग पुत्र अभिमन्यु कुमार के साथ पहुंचीं और दिव्यांग प्रमाण पत्र निर्गत कराने की मांग रखी। उपायुक्त ने निर्देशदिया कि उनका प्रमाण पत्र यथाशीघ्र निर्गत किया जाएं। मौके पर जिला आपूर्ति पदाधिकारी उपस्थित रहे।

दुर्गा पूजा केंद्रीय समिति ने विसर्जन घाटों की परेशानियों से अवगत कराया उपायुक्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

जमशेदपुर : गुरुवार को जमशेदपुर दुर्गा पूजा केंद्रीय समिति की टीम महासचिव आशुतोष सिंह के नेतृत्व में जिले के वरीय अधिकारियों के साथ शहर के विभिन्न विसर्जन घाटों का दौरा किया विगत दिनों समिति के द्वारा दिए गए घाटों की समस्या को लेकर आज जिले के उपायुक्त महोदय ने विभिन्न घाटों का दौरा किया। पांडे घाट में साफ सफाई की मुकम्मल व्यवस्था साकची स्वर्णरेखा घाट में पुल के निर्माण के कारण होने वाली अशुविधाओं से भी समिति ने उपायुक्त महोदय को अवगत कराया , नदी के किनारे रखे गए बड़े-बड़े गडर स्वर्णरेखा घाट पर विसर्जन में प्रयोग की जाने वाली गाड़ियों के निकास के मार्ग को और अधिक चौड़ा करने पर सहमति व्यक्त की गई। सभी घाटों पर मुकम्मल लाइट एंबुलेंस एवं क्रेन की व्यवस्था पर भी केंद्रीय समिति ने आग्रह किया। बागबेड़ा बडौदा घाट के निमार्णाधीन पुल का निर्माण नहीं होने के कारण वैकल्पिक मार्ग का चयन कर उसे दुरुस्त करवाने हेतु उपायुक्त महोदय को समिति ने अवगत कराय। नदी का जलस्तर अधिक होने के कारण घाटों की चौड़ाई कम हो गई है इस पर भी चिंता व्यक्त की गई है। सभी समस्याओं को उपायुक्त महोदय ने गंभीरता से लिया एवं विभागीय अधिकारियों को इस पर तेजी से कार्य करने का निर्देश दिया। आज के दौरे में मुख्यरूप से महासचिव आशुतोष सिंह, संयोजक प्रमोद तिवारी, परमात्मा मिश्रा, पीके दास, राघवेंद्र मिश्रा अभिषेक कुमार,शंभू मुखी, रवि भुइंया, जितेंद्र कुमार, विजय वर्धा, संतोष कुमार,देवेंद्र सिंह ,मनवीर सिंह मुख्य रूप से मौजूद थे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75वें जन्मदिन पर भाजयुमो ने आयोजित किया रक्तदान शिविर

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

जमशेदपुर : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75वें जन्मदिवस के अवसर पर ‘सेवा पखवाड़ा’ के तहत भारतीय जनता युवा मोर्चा द्वारा राष्ट्रव्यापी रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसी क्रम में, बुधवार को भाजयुमो जमशेदपुर महानगर के तत्वावधान में एकदिवसीय महारक्तदान शिविर का आयोजन बिस्टुपुर स्थित जमशेदपुर ब्लड बैंक में किया गया। भाजयुमो जमशेदपुर महानगर अध्यक्ष नीतीश कुशवाहा के नेतृत्व में आयोजित रक्तदान शिविर में युवाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। सुबह 9 बजे से संध्या 5 बजे तक चले इस रक्तदान शिविर में 157 उत्साही युवाओं ने “नर सेवा-नारायण सेवा” एवं रक्तदान-महादान के आदर्श वाक्यों को चरितार्थ करते हुए मानवता की सेवा के लिए रक्तदान किया। इस अवसर पर सभी युवा रक्तदाताओं ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन को सेवा भाव से मनाया और जन्मदिन की शुभकामनाएं व्यक्त कीं। अथितियों ने रक्तदाताओं को भेंट, प्रशस्ति पत्र एवं पौधा प्रदान कर प्रोत्साहित किया। इससे पहले, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ दिनेशानंद गोस्वामी, जमशेदपुर के सांसद विद्युत वरण महतो, जमशेदपुर महानगर अध्यक्ष सुधांशु ओझा समेत वरीय नेताओं ने रक्तदान शिविर का विधिवत शुभारंभ किया। कार्यक्रम में पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ दिनेशानंद गोस्वामी ने सभी रक्तदाताओं और युवा मोर्चा की सराहना करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जीवन सेवा और समर्पण का प्रतीक है। सभी युवा साथियों ने रक्तदान के माध्यम से इस आदर्श वाक्य को साकार किया है। वहीं, सांसद विद्युत महतो ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर चल रहे सेवा और समर्पण अभियान में युवाओं की भागीदारी सराहनीय है। पहली बार रक्तदान कर रहे युवाओं का हौसलावर्धन करते हुए उन्होंने कहा कि युवा शक्ति राष्ट्र की शक्ति है। राष्ट्र व समाज के उत्थान में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। युवा वर्ग संगठित होकर समाज एवं देश निर्माण में आगे आएं। भाजपा जमशेदपुर महानगर अध्यक्ष सुधांशु ओझा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर चल रहे सेवा-पखवाड़ा अभियान के तहत भाजयुमो जमशेदपुर महानगर ने रक्तदान शिविर का आयोजन किया। इसमें युवाओं की अच्छी भागीदारी रही। आगामी दिनों में अभियान के तहत कई अन्य सेवा और सामाजिक कार्य किये जाएंगे। भाजयुमो जिलाध्यक्ष नीतीश कुशवाहा ने कहा कि रक्तदान महादान है, और सभी युवा सेवा पखवाड़ा के माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को देश के युवाओं पर अटूट विश्वास है, रक्तदान जैसे पुनीत कार्यों से युवा साथीगण पीएम नरेंद्र मोदी के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट कर समाज में सेवा भावना को और प्रगाढ़ किया। शिविर की सफलता के लिए उन्होंने जमशेदपुर ब्लड बैंक और सभी रक्तदाताओं एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

उपायुक्त–सह–जिला दण्डाधिकारी का कार्यालय, खूँटी।
(Email ID – tourismkhunti@gmail.com)
(जिला पर्यटन, कला संस्कृति, खेलकूद एवं युवाकार्य शाखा)

(अति अल्पकालीन निविदा)

दिनांक 29.08.2025 को उप विकास आयुक्त, खूँटी की अध्यक्षता में खूँटी जिलान्तर्गत अधिसूचित पर्यटन स्थलों के रख–रखाव प्रबंधन एवं साफ–सफाई हेतु सामग्री क्रय की बैठक में वांछित सामग्रियों का क्रय निविदा के माध्यम से किए जाने का निर्णय लिया गया है। तदनुसार सामग्री क्रय हेतु इच्छुक फर्म / प्रतिष्ठान से निम्नांकित शर्तों के अधीन प्रस्ताव आमंत्रित की जाती है।

संबंधित फर्म/प्रतिष्ठान अपना निविदा तकनीकि बीड (A) एवं वित्तीय बीड (B) 02 (दो) अलग–अलग लिफाफा में मुहर बंद कर तीसरे लिफाफा (C) में बंद कर निविदा दिनांक 06.10.2025 को पूर्वाह्न 11:00 बजे तक जिला खेल कार्यालय, खूँटी में जमा किया जा सकता है। गठित निविदा समिति के समक्ष दिनांक 06.10.2025 को उप विकास आयुक्त कार्यालय कक्ष, विकास भवन, खूँटी में खोला जायेगा। उक्त से संबंधित विस्तृत जानकारी जिला के वेबसाईट www.khunti.nic.in एवं जिला खेल कार्यालय, खूँटी के सूचना पट पर देखा जा सकता है।

ह०/–
जिला क्रीड़ा पदाधिकारी,
–सह–
जिला पर्यटन नोडल पदाधिकारी, खूँटी।

PR 362221 (District) 25-26 (D)

Deputy commissioner-cum- District Magistrate Office
District Planning Office, Koderma, Jharkhand
Ground Floor, DC Office Koderma- 825410
Email: dpokoderma@gmail.com Website: www.koderma.nic.in

Tender Reference No: ……………… **Date:** ………………

SHORT-TERM TENDER

In Reference to NITI AAYOG Letter No. A/8/2023-Administration (Part 1), the current deployment process of Aspirational Block Fellows will be transitioned from **contractual to outsourcing with effect from 1st April 2025**. In this regard, District Administration, Koderma Request for Proposal” for selection of agency for the deployment of aspirational block fellows for the blocks covered under the aspirational block programme.

	Information	Details
1	Name of the work	Selection of Agency for Deployment of Aspirational Block Fellows for Jainagar and Markacho Blocks, Koderma District
2	Date of Publication of Bid	**15.09.2025**
3	Earnest Money to be deposited	**Rs. 5,000** (In Favor of District Planning Officer, Koderma).
4	Last date and time of receipt of Bid	**Date: 23.09.2025 by 12:00 PM**
5	Date and time of opening of Bid	**Date: 23.09.2025 by 03:00 PM**
6	Technical Presentation	**Date: 23.09.2025 by 04:00 PM**
7	Bid submission Place	District Planning Office, Koderma
8	Bid Opening Place	Conference Hall Collectorate Building First Floor, Koderma- 825410
9	Contact Number	Email Id: dpokoderma@gmail.com;
11	Method of Selection	**Least Cost based Selection (LCS) Method** **Stage 1:** The compliance check of technical proposals and documents with respect to the Pre-Eligibility Criteria will be done in the first stage. **Stage 2:** The detailed technical scoring of the shortlisted bidders in pre-eligibility criteria will be done. The bidders scoring 50 or more than 50 marks in the technical scoring will be considered only for further financial bid evaluation. **Stage 3:** Agency submitting the least financial bid will be selected.

PR 362292 District (25-26)_D **Deputy Commissioner, Koderma**

ऊर्जा विभाग, झारखण्ड सरकार
विद्युत कार्यपालक अभियन्ता, विद्युत कार्य प्रमण्डल,
इंजीनियरिंग हॉस्टल नं0–2 धुर्वा, रॉंची

अति अल्पकालीन ई–प्रोक्योरमेंट सूचना

ई–निविदा प्रसंग सं0– **Energy/EWD/Ranchi/59/2025-26** दिनांक–18/09/2025

1.	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि (रूपये में)	परिमाण विपत्र का मूल्य	अग्रधन की राशि	कार्य समाप्ति की अवधि
I	योजना भवन, डोरण्डा, रॉंची के कमरा सं0 102, 119, 229A, 326, 323, 335, 307, 336, 205, 338 एवं 103 में 15 अदद् 1.5/2.0 टन क्षमता के वातानुकूलित संयंत्र के बदलीकरण का कार्य।	12,46,244=00	2,500=00	25,000=00	35 दिन
II	राजेन्द्र चौक डोरण्डा, रॉंची स्थित 12 अदद् A टाईप आवास, 04 अदद् B टाईप आवा एवं 02 अदद् C टाईप आवास में विद्युत अधिष्ठापन के विशेष मरम्मति एवं सर्विस केबल, मेन स्वीच, बसबार, फीडर पैनल के बदलीकरण एवं A,B,C टाईप आवासीय ब्लॉक के आउटर सुरक्षा लाईट के बदलीकरण का कार्य।	24,25,375=00	5,000=00	49,000=00	35 दिन
III	ए0 जी0 मोड, डोरण्डा, रॉंची स्थित बंगला सं0 8/19 में विद्युत अधिष्ठापन के विशेष मरम्मति एवं बगीचा लाईट, परिसर लाईट, गेट लाईट, सर्विस केबल एवं पैनल के बदलीकरण का कार्य।	17,90,826=00	5,000=00	36,000=00	35 दिन
IV	नेपाल हाउस, डोरण्डा, रॉंची के पीछे स्थित ऑफिसर्स फ्लैट सं0 D5/28 में बगीचा लाईट, गेट लाईट के बदलीकरण एवं कुछ कमरों में फॉल्स सिलिंग लाईट के वायरिंग एवं डेकोरोटिव फैन, इलेक्ट्रीक पैनल के अधिष्ठापन एव D7/12, D7/18 में विद्युत अधिष्ठापन के विशेष मरम्मति एवं गेट लाईट स्ट्रीट लाईट के अधिष्ठापन एवं D14/18 मे नवनिर्मिम कमरा में वायरिंग का कार्य, D8/12 में अप–डाउन लाईट के अधिष्ठापन का कार्य।	15,17,483=00	5,000=00	31,000=00	35 दिन
V	लाईन टैंक रोड, रॉंची स्थित आवास सं0–C-9/19 (नया) आवास सं0 B-1/4, नगरा टोली स्थित आवास सं0 B-3, आड्रे हाउस स्थित आवास सं0–c-4/1, c-4/2, C-7/2, C-2/5, B-17/24, कॉंके रोड रॉंची स्थित आवास सं0 C-4/10 एवं रातू रोड रॉंची स्थित आवास सं0 C-32 में विद्युत अधिष्ठापन के विशेष मरम्मति का कार्य।	12,99,072=00	2,500=00	26,000=00	35 दिन
VI	ए0 जी0 मोड, डोरण्डा, रॉंची स्थित बंगला सं0 4/19 के मुख्य भवन, आउट हाउस विद्युत अधिष्ठापन के विशेष मरम्मति का कार्य एवं बगीचा लाईट, कैम्पस लाईट, गेट लाईट, सर्विस केबल एवं पैनल के बदलीकरण का कार्य।	16,58,923=00	5,000=00	34,000=00	35 दिन
VII	ए0 जी0 मोड, डोरण्डा, रॉंची स्थित जज आवास सं0 14 के मुख्य भवन, आउट हाउस विद्युत अधिष्ठापन के विशेष मरम्मति का कार्य एवं परिसर लाईट, गेट लाईट, सर्विस केबल एवं पैनल के बदलीकरण एवं इन्वर्टर सेट बैटरी सहित के अधिष्ठापन का कार्य।	11,29,524=00	2,500=00	23,000=00	35 दिन
2.	वेबसाईट पर निविदा प्रकाशन की तिथि	**26.09.2025**			
3.	निविदा जमा करने की तिथि	27.09.2025 के 10.30 बजे पूर्वाह्न से 06.10.2025 के 2.00 बजे अपराह्न तक			
4.	निविदा खोलने की तिथि	07.10.2025 को 3.00 बजे अपराह्न में			
5.	निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पता	विद्युत कार्यपालक अभियन्ता, विद्युत कार्य प्रमण्डल, रॉंची।			
6.	निविदा खोलने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पता	विद्युत कार्यपालक अभियन्ता, विद्युत कार्य प्रमण्डल, रॉंची।			
7.	ई प्रोक्युरमेन्ट प्रकोष्ट का फोन नं0/ई0 मेल	0651–2490069/electricalexecutiveengineerewd@gmail.com			

Note :- Tender Fee and Earnest Money Deposit (EMD) are to be paid through online mode only as per instruction of IT Dept. Govt. of Jharkhand Letter no.-120 Dated- 03-10-2023.

निविदा से संबंधित विस्तृत जानकारी हेतु वेबसाईट http://jharkhandtenders.gov.in मे देखा जा सकता है।

विद्युत कार्यपालक अभियन्ता
विद्युत कार्य प्रमण्डल,रॉंची

PR 362297 Energy(25-26)#D

दिव्यांगजनों की पुकार सुनें

भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी शक्ति उसकी विविधता और समावेशिता मानी जाती है। संविधान ने हर नागरिक को समान अधिकार, गरिमा और अवसर की गारंटी दी है। परन्तु जब हम समाज के उस वर्ग की ओर देखते हैं, जिन्हें दिव्यांगजन कहा जाता है तो यह गारंटी अक्सर खोखली दिखाई देती है। देश की जनगणना और हालिया सर्वेक्षण इस बात की पुष्टि करते हैं कि करोड़ों दिव्यांगजन आज भी शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, यातायात, मीडिया और सार्वजनिक जीवन में हाशिए पर हैं। संवैधानिक प्रावधान और कानून मौजूद हैं परन्तु जमीनी स्तर पर उनकी स्थिति इस सच्चाई को बयान करती है कि वे अब भी अदृश्य नागरिकों की तरह जीवन जीने को विवश हैं। समस्या केवल भौतिक अवरोधों की नहीं बल्कि मानसिकता और दृष्टिकोण की भी है। समाज का बड़ा हिस्सा अब भी दिव्यांगता को दया, बोझ या त्रासदी की दृष्टि से देखता है। यह सोच दिव्यांगजनों की क्षमताओं और संभावनाओं को नकार देती है। उन्हें बराबरी का अवसर देने के बजाय या तो दया का पात्र बना दिया जाता है या हंसी का विषय। भारतीय सिनेमा और टेलीविजन ने भी लंबे समय तक इन्हीं रूढ़ियों को दोहराया है। हालांकि अब धीरे-धीरे बदलाव आ रहा है परन्तु यह बहुत धीमा और सीमित है। भारतीय न्यायपालिका ने कई बार दिव्यांगजनों की गरिमा और अधिकारों की रक्षा करते हुए महत्वपूर्ण निर्णय दिए हैं। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता या हास्य के नाम पर किसी भी समुदाय की गरिमा से समझौता नहीं किया जा सकता। हाल ही में दिए गए फैसलों में मीडिया और मनोरंजन उद्योग को चेताया गया कि वे दिव्यांगजनों को मजाक या दया का पात्र न बनाएं बल्कि उनके संवैधानिक अधिकारों का सम्मान करें। इसके बावजूद समाज में गहरे जमे पूर्वाग्रह अब भी मौजूद हैं। वास्तविक चुनौती केवल कानूनी संरक्षण से पूरी नहीं होती। समस्या यह है कि कानून और नीतियाँ लागू करने वाली संस्थाओं में पर्याप्त संवेदनशीलता और दृढ़ता का अभाव है। उदाहरण के लिए, दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 ने शिक्षा, रोजगार और सार्वजनिक जीवन में उनके लिए आरक्षण और सुविधाओं की गारंटी दी। परन्तु स्कूलों और कॉलेजों की इमारतें अब भी सीढ़ियों से भरी हैं, सरकारी दफ्तरों में व्हीलचेयर के लिए जगह नहीं है और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर अब भी दृष्टिबाधित या श्रवणबाधित लोगों के लिए आवश्यक विकल्प उपलब्ध नहीं कराए जाते। दिव्यांगजनों की सबसे बड़ी समस्या यह है कि उन्हें 'सक्षम नागरिक' के बजाय 'निर्भर नागरिक' मान लिया गया है। यह सोच उन्हें समाज की मुख्यधारा से दूर कर देती है। जबकि सच्चाई यह है कि अवसर और सुविधा मिलने पर दिव्यांगजन किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्टता साबित कर सकते हैं। खेल जगत में पैरा ओलंपिक खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ इसका प्रमाण हैं। शिक्षा और साहित्य से लेकर प्रशासन और विज्ञान तक दिव्यांगजनों ने अपनी क्षमता का लोहा मनवाया है। समस्या क्षमता की नहीं बल्कि अवसर और दृष्टिकोण की है। यदि समाज सचमुच समावेशी बनना चाहता है तो सबसे पहले उसकी सोच बदलनी होगी। दिव्यांगजनों को दया या सहानुभूति की आवश्यकता नहीं है, उन्हें बराबरी के अधिकार और अवसर चाहिए। स्कूलों में बचपन से ही बच्चों को यह सिखाना होगा कि विविधता ही समाज की ताकत है। मीडिया और सिनेमा को जिम्मेदारी लेनी होगी कि वे दिव्यांगता को केवल दुर्बलता के रूप में न दिखाएं बल्कि उसे साहस, आत्मविश्वास और मानवीय गरिमा से जोड़कर पेश करें। सार्वजनिक ढांचे को दिव्यांगजन की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाना सबसे महत्वपूर्ण कदम है। मेट्रो स्टेशन, रेलवे प्लेटफार्म, बस अड्डे, अस्पताल, सरकारी कार्यालय, पार्क और शैक्षणिक संस्थान तब तक समावेशी नहीं कहे जा सकते, जब तक वे हर व्यक्ति के लिए सुलभ न हों। तकनीकी प्रगति इस दिशा में बहुत मददगार हो सकती है। डिज़िटल ऐप्स में वॉइस असिस्टेंट, स्क्रीन रीडर और सांकेतिक भाषा की सुविधाएँ जोड़कर हम लाखों दिव्यांगजन को ऑनलाइन शिक्षा और रोजगार से जोड़ सकते हैं। समानता की इस लड़ाई में सरकार और समाज दोनों की साझा भूमिका है। सरकार को यह सुनिश्चित करना होगा कि दिव्यांगजन के लिए बनाए गए कानून केवल कागजी दस्तावेज बनकर न रह जाएँ। उनके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए स्वतंत्र निगरानी तंत्र बने।

सूडोकु नवताल- 7557

मध्यम

4	6		3		8	9		7
	1		9		6		5	4
						8		
	4		5				8	
2		5		4		6		1
	3				1		7	
		3						
5	9		7		2		6	
7		6	4		3		9	2

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -7556 का हल

5	7	2	3	8	4	1	9	6
8	6	1	9	2	5	7	3	4
3	9	4	1	6	7	5	8	2
2	5	7	4	1	3	8	6	9
4	8	6	5	9	2	3	7	1
1	3	9	6	7	8	4	2	5
6	2	3	7	4	1	9	5	8
9	4	5	8	3	6	2	1	7
7	1	8	2	5	9	6	4	3

मोदी-ट्रंप के सार्थक संवाद से क्या राह बदलेगी?

ललित गर्ग

नई दिल्ली में भारत-अमेरिकी व्यापार वार्ता की बाधाओं को दूर करने पर दोनों पक्षों के बीच सकारात्मक बातचीत के दौरान करीब तीन महीने बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को फोन करके जन्मदिन की बधाई देते हुए रूस-यूक्रेन युद्धविराम का समर्थन करने के लिए आभार जताना, दोनों देशों के बीच रिश्तों में आई तल्खी को कम करने की कोशिश मानी जानी चाहिए। मोदी और ट्रंप के बीच हुई इस बातचीत ने दोनों देशों के रिश्तों में नई आशा और सकारात्मकता का संचार किया है। क्योंकि अमेरिका के एकतरफा टैरिफ और कुछ तीखे बयानों के बावजूद भारत ने संयम बरता एवं तीखी प्रतिक्रिया की बजाय मसले के सुलझने का इंतजार करते हुए विवेक एवं समझदारी का परिचय दिया। भारत पर थोपे गए ट्रंप के 50 प्रतिशत टैरिफ को लेकर अमेरिका में साफ तौर पर दो विरोधी स्वर सुनाई पड़ रहे हैं। ऐसे माहौल में जरूरी हो गया है कि दोनों देशों के बीच शीर्ष स्तर पर संवाद जारी रहे। इसी बात को अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने स्वीकार करते हुए यह उम्मीद जताई थी कि आखिरकार अमेरिका और भारत साथ आएंगे, यही मौजूदा वक्त की सबसे बड़ी जरूरत है। मोदी एवं ट्रंप का ताजा संवाद इसी की निष्पत्ति बना है। यह संवाद मोदी के 75वें जन्मदिवस के अवसर पर हुआ और इसमें अतीत की कई कड़वाहटों को पीछे छोड़कर भविष्य की संभावनाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया।

दरअसल, दोनों नेताओं की बातचीत का बड़ा कारण शंघाई सहयोग संगठन की बैठक में रूस, चीन और भारत के शीर्ष नेताओं की गर्मजोशी भी बना, उससे ट्रंप की चिंताएं बढ़ी थी, इस बैठक के बाद ही पहली बार ट्रंप के रुख में नरमी के संकेत मिले थे। उसके बाद दस सितंबर को फिर ट्रंप ने कहा कि भारत-अमेरिका व्यापार वाताओं की बाधाओं को दूर करने पर बातचीत जारी है। ताजा वार्ता ने यह संदेश दिया कि भारत और अमेरिका के रिश्ते किसी एक घटना या परिस्थिति पर निर्भर नहीं, बल्कि दीर्घकालीन रणनीति और साझा हितों की नींव पर खड़े हैं।

आज की दुनिया में भारत और अमेरिका का रिश्ता केवल द्विपक्षीय ही नहीं, बल्कि वैश्विक परिदृश्य को भी प्रभावित करता है। अमेरिका जहां विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और सैन्य शक्ति है, वहीं भारत उभरती हुई आर्थिक ताकत और सबसे बड़ा लोकतंत्र है। दोनों की साझेदारी लोकतांत्रिक मूल्यों, पारदर्शिता और वैश्विक शांति की आकांक्षाओं पर आधारित है। हाल के वर्षों में कभी-कभी मतभेद जरूर सामने आए-जैसे व्यापार शुल्क, वीजा नीतियां, भारत-पाक सीजफायर और रक्षा समझौते इन मतभेदों के बावजूद रणनीतिक साझेदारी मजबूत होती रही है। भारत और अमेरिका के बीच व्यापारिक संबंध लंबे समय से चर्चा का विषय रहे हैं। कभी शुल्क वृद्धि को लेकर तनाव हुआ, तो कभी आयात-निर्यात की नीतियों को लेकर असहमति। किंतु ट्रंप-मोदी वार्ता के बाद एक बार फिर नए समझौते और अवसर सामने आ सकते हैं। अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है

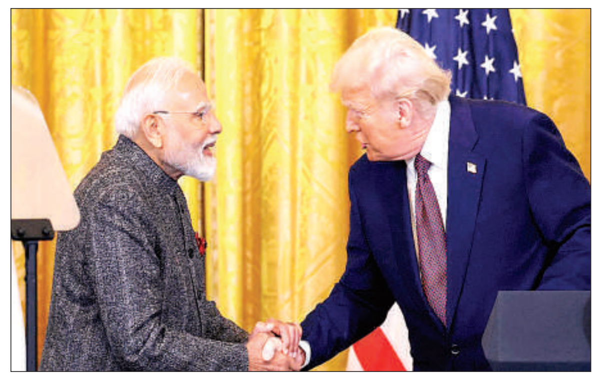

और आईटी, सेवा क्षेत्र, ऊर्जा और तकनीकी निवेश में दोनों के बीच गहरा सहयोग है। प्रधानमंत्री मोदी ने व्यापारिक अड़चनों को दूर करने पर जोर दिया है और ट्रंप ने भी व्यापार घाटे को कम करने के लिए सहयोग का संकेत दिया। यह संकेत आने वाले समय में द्विपक्षीय व्यापार को नई ऊंचाइयों पर ले जा सकते हैं।

भारत और अमेरिका का रक्षा सहयोग पिछले एक दशक में तेजी से बढ़ा है। अमेरिका ने भारत को महत्वपूर्ण रक्षा तकनीक उपलब्ध कराई है और संयुक्त सैन्य अभ्यासों से सुरक्षा साझेदारी मजबूत हुई है। एशिया-प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए भारत-अमेरिका का रक्षा सहयोग न केवल द्विपक्षीय है, बल्कि पूरे क्षेत्रीय संतुलन के लिए अहम है। चीनी मनमानी पर नियंत्रण के लिए अमेरिका को खासतौर पर भारतीय सहयोग की जरूरत है। इसी मकसद से क्वॉड का गठन किया गया, जिसे अमेरिकी सरकार ने तवज्जो भी दी। लेकिन, ट्रंप की टैरिफ पॉलिसी की वजह से क्वॉड के भविष्य पर सवाल उठने लगे हैं। वहीं, वॉशिंगटन में यह भी चिंता बनी कि पिछले दो दशकों में भारत-अमेरिका रिश्तों में जो प्रगति हुई थी, वह ट्रंप की महत्वाकांक्षाओं एवं अतिश्योक्तिपूर्ण हरकतों से पिछले कुछ दिनों में बेकार होती हुई दिख रही थी। लेकिन देर आये दुरस्त आये की कहावत के अनुसार दोनों शीर्ष नेताओं की बातचीत से अब अंधेरे छंटते हुए दिख रहे हैं। अमेरिका चाहता है कि भारत हिंद-प्रशांत क्षेत्र में संतुलन कायम रखने में और बड़ी भूमिका निभाए, वहीं भारत अपनी सामरिक स्वतंत्रता बनाए रखते हुए सहयोग को और गहरा करना चाहता है।

भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में अमेरिका एक अहम सहयोगी बन सकता है। अमेरिका से तरलीकृत प्राकृतिक गैस और कच्चे तेल का आयात बढ़ रहा है। यह न केवल ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करेगा, बल्कि भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था को भी नई गति देगा। तकनीकी क्षेत्र में भी दोनों देशों के बीच साझेदारी मजबूत है। सूचना प्रौद्योगिकी, साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष अनुसंधान और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्रों में सहयोग आने वाले दशकों के लिए गेम-चेंजर साबित हो सकता है। अमेरिका में बसे भारतीय मूल के लोग दोनों देशों के बीच सेतु का कार्य कर रहे हैं। चाहे राजनीति हो, शिक्षा, स्वास्थ्य या तकनीक - भारतीय - अमेरिकी समुदाय का योगदान उल्लेखनीय है। यह समुदाय भारत और अमेरिका के बीच रिश्तों को भावनात्मक और सांस्कृतिक आधार देता है। ट्रंप और मोदी की बातचीत में भारतीय प्रवासी समुदाय की प्रशंसा भी हुई, जिसने दोनों देशों के बीच विश्वास और निकटता को और बढ़ाया।

भारत और अमेरिका दोनों आतंकवाद से प्रभावित रहे हैं। 9/11 की घटना ने अमेरिका को और 26/11 ने भारत को गहरे जख्म दिए। यही कारण है कि आतंकवाद के खिलाफ दोनों का दृष्टिकोण काफी हद तक समान है। हाल की बातचीत में आतंकवाद को समाप्त करने और सुरक्षा सहयोग को बढ़ाने पर भी जोर दिया गया। अफगानिस्तान और मध्य-एशिया की परिस्थितियों को देखते हुए भारत और अमेरिका का सहयोग वैश्विक शांति और स्थिरता के लिए निर्णायक हो सकता है। ट्रंप और मोदी की बातचीत ने यह साबित किया है कि अतीत के मतभेद रिश्तों का अंत नहीं, बल्कि नए संवाद का अवसर बन सकते हैं। व्यापार, रक्षा, ऊर्जा, तकनीक और आतंकवाद जैसे क्षेत्रों में सहयोग दोनों देशों के लिए लाभकारी है। आज जब दुनिया वैश्विक महामारी, आर्थिक संकट, युद्ध की विभीषिका और भू-राजनीतिक अस्थिरता से जूझ रही है, भारत और अमेरिका की साझेदारी नई दिशा और स्थिरता का संकेत देती है।

भारत और अमेरिका के बीच व्यापार-वार्ता में बेशक व्यवधान आए हों, पर भारत और यूरोपीय संघ के बीच जिस गति से वार्ता हो रही है, उससे वर्ष के अंत तक दोनों में व्यापार समझौता होने की पूरी उम्मीद है। असल में दोनों देशों के बीच पांच दौर की व्यापार वार्ता हो चुकी है, लेकिन 50 फीसदी टैरिफ लगाए जाने के बाद छठे दौर की प्रस्तावित वार्ता रुक गई थी, जो बीते मंगलवार से फिर पटरी पर लौट आई है। दरअसल, ट्रंप प्रशासन चाहता है कि भारत अपने कृषि एवं डेयरी क्षेत्र को अमेरिकी कंपनियों के लिए पूरी तरह से खोले, लेकिन भारत के लिए यह संभव नहीं है, क्योंकि यह उसके किसानों व मछुआरों के हितों के खिलाफ है। भारत पहले ही कह चुका है कि वह किसानों, डेयरी उत्पादकों एवं एमएसएमई के हितों से कोई समझौता नहीं करेगा।

दोनों देशों के बीच पिछले एक दशक में द्विपक्षीय व्यापार लगभग दोगुना हो गया है और इसे 2030 तक 500 बिलियन डॉलर तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। लेकिन यह तभी संभव था, जब मौजूदा गतिरोध खत्म हो और इसके लिए बातचीत ही रास्ता है। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का महत्वपूर्ण हिस्सा बने रहने के लिए भारत दूसरे देशों के साथ भी मुक्त व्यापार समझौते कर रहा है। भले ही डोनाल्ड ट्रंप पर अधिक भरोसा नहीं कर सकते, लेकिन सवाल यह है कि अब उनकी तरफ से दिखाई जा रही नरमी को क्या एक संकेत माना जाए कि इससे कोई नई राह निकलेगी। अड़ियल रुख अपनाने के बजाय अमेरिका को भारतीय नजरिया समझने की जरूरत थी, अब अमेरिका भारत का नजरिया समझने को तत्पर हुआ है तो निश्चित ही इसके दूरगामी परिणाम आयेंगे।

नेपाल जनविद्रोह : ये तो होना ही था

निर्मल रानी

बिहार में दरभंगा-जयनगर के रास्ते 5 वर्ष पूर्व नेपाल जाने का अवसर मिला था। भारत नेपाल के सीमावर्ती नेपाली शहर जनकपुर के बीचोबीच देवी सीता को समर्पित हिन्दू-राजपूत वास्तुकला का एक प्रसिद्ध हिन्दू मन्दिर एवं ऐतिहासिक स्थल है जिसे राम जानकी मंदिर के नाम से जाना जाता है। मेरे नेपाल प्रवास के उस दौर में जयनगर से लेकर जनकपुर तक की पूरी सड़क पर अधिकांश क्षेत्र में सिर्फ मिटटी पड़ी हुई थी। केवल कहीं कहीं बजरी पड़ी दिखाई देती थी। डामर रोलर और काली सड़कों का तो कहीं दूर तक नामो निशान ही नहीं था। रास्ते में कहीं बस का पहिया जमीन में धंसा दिखाई दे रहा था तो कहीं थ्री व्हीलर उल्टी पड़ी थी। बसों का तो आलम यह था कि टूटे शीशे व खिड़कियां, टूटी कष्टदायक सीटें,गोया कबाड़खाने से लाकर बसें चलाई जा रही हों। जनकपुर जैसे प्रसिद्ध तीर्थस्थल व पर्यटन नगरी की शहर की सड़कों में गड्ढे,बदबूदार और रुकी हुई नालियां, शहर में खाने पीने का उपयुक्त होटल नहीं। जिस होटल में ठहरना हुआ उस होटल के प्रबंधक ने दोपहर करीब 12 बजे होटल में पहुँचने पर पहले ही बता दिया कि लाइट नहीं आ रही है रात 8 बजे आयेगी,रूम बुक कराना हो तो कराइये वरना तशरीफ ले जाइये। जब होटल प्रबंधक से नेपाल की इस दुर्दशा के बारे में पूछा तो उसने एक ही बात कही। 'भ्रष्टाचार तो भारत में भी है परन्तु वहां 50 प्रतिशत खाकर 50 प्रतिशत तो लगा ही देते होंगे। मगर हमारे नेपाल में तो 90 प्रतिशत खा जाते हैं केवल 10 प्रतिशत ही किसी योजना में लगाते हैं।' उसी दिन यह एहसास हो गया था कि एक न एक दिन पानी सिर से ऊपर होगा और आज नहीं तो कल इसी नेपाल में भ्रष्टाचार के विरुद्ध विद्रोह जरूर पनपेगा।

खैर, नेपाल में लंबे समय से चली आ रही राजनीतिक अस्थिरता, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद,आर्थिक असमानता, युवा बेरोजगारी के विरुद्ध आखिरकार जनविद्रोह फूट ही पड़ा। सोशल मीडिया पर लगाये गये प्रतिबंध यानी युवाओं की सत्ता विरोधी आवाज को दबाने का सरकारी प्रयास इस हिंसक जनविद्रोह का बहाना बना। 8 सितंबर 2025 को शुरू हुये इस जनविद्रोह में राजधानी काठमांडू सहित नेपाल के अन्य प्रमुख शहरों में हजारों युवा सड़कों पर उतर आए। आंदोलनकारियों ने सरकार की भ्रष्ट नीतियों के खिलाफ नारेबाजी की, जो जल्दी ही हिंसक हो गई। प्रदर्शनकारियों ने राजधानी काठमांडू स्थित संसद भवन,सरकारी प्रशासनिक मुख्यालय, सिंह दरबार, प्रधानमंत्री कार्यालय, मंत्रालयों और संसदीय कार्यालयों के परिसर, सुप्रीम कोर्ट भवन, राष्ट्रपति भवन, राष्ट्रपति राम चंद्र पौडेल के निवास, नेपाली कांग्रेस पार्टी मुख्यालय, कम्युनिस्ट पार्टी मुख्यालय, निवर्तमान प्रधानमंत्री ओली के पार्टी मुख्यालय, 5 सितारा हिल्टन होटल, नेपाल के सबसे बड़े मीडिया समूह कांतिपुर मीडिया हाउस, स्वास्थ्य एवं जनसंख्या मंत्रालय भवन तथा प्रांतीय विधानसभा भवन जैसी प्रमुख इमारतों को आग के हवाले कर दिया। काठमांडू की इन इमारतों के अलावा भी देशभर में अनेक सरकारी कार्यालयों, पुलिस स्टेशनों और नेताओं के घरों को निशाना बनाया गया। इस दौरान त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा अस्थायी रूप से बंद रहा, और गौतम बुद्ध अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा को भी क्षति पहुंची। इन्हीं हिंसक वारदातों में मृतकों की संख्या 51 पार कर गई। इनमें 21 प्रदर्शनकारी, नौ कैदी, तीन पुलिस अधिकारी और 18 अन्य शामिल हैं। प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली ने इस्तीफा दे दिया। सेना को कर्फ्यु लगाकर सड़कों पर तैनात किया गया। कई मंत्रियों व उद्योगपतियों के घर कार्यालय व संस्थान आग के हवाले कर दिये गये। नेपाल में चले इन विरोध प्रदर्शनों के बाद आंदोलनकारियों की सहमति से सुशीला कार्की को नेपाल की पहली महिला प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया।

इस आंदोलन की आग में भी शातिर राजनीतिज्ञ अपनी अपनी रोटियां सेकने की कोशिश करते दिखाई दिये। जहाँ तक राजनैतिक विश्लेषकों का सवाल है तो कोई इसे हिन्दू राष्ट्र का पक्षधर जन विद्रोह साबित करना चाह रहा है तो कोई इसे राजशाही की वापसी का संकेत बता रहा है। कोई इसमें अमेरिकी षड़यंत्र की गंध महसूस कर रहा है तो कोई इसे चीनी साजिश महसूस कर रहा है। परन्तु हकीकत यही है कि चाहे वह नेपाल में 240 वर्षों की पुरानी शाह वंश की राजशाही परंपरा रही हो या उसके बाद 28 मई, 2008 को स्थापित हुआ 17 वर्ष पुराना गणतंत्र। किसी भी दौर में नेपाल के समग्र विकास पर कोई भी काम नहीं हुआ। हद तो यह है कि सड़क बिजली पानी जैसी बुनियादी सुविधाओं पर भी नेपाल किसी जमाने में भारत पर ही पूरी तरह आश्रित रहा करता था। नेपाल का बेरोजगार आज बड़ी संख्या में भारत में काम करता व काम की तलाश में आता दिखाई देता है।

सही पूछिए तो राजधानी काठमांडू के सिवा किसी प्रान्त शहर या जिले का नाम भी भारत या अन्य देशों के आम लोग नहीं जानते। आम लोगों को यह भी नहीं पता कि नेपाल 7 अलग अलग प्रांतों में बंटा हुआ कुल 77 जिलों का देश है। इस अनभिज्ञता का कारण यही है कि राजशाही से लेकर गणतांत्रिक सरकारों तक ने केवल राजधानी काठमांडू के विकास व इसके सौंदर्यीकरण पर ही जोर दिया। प्रायः सभी अंतर्राष्ट्रीय आयोजन काठमांडू में ही हुआ करते थे। वैसे भी काठमांडू की प्रसिद्धि का कारण राजधानी होने के अतिरिक्त वहां का विश्व प्रसिद्ध पशुपतिनाथ मंदिर भी है। इसलिये नेपाल का कोई अन्य जिला या शहर न तो विकसित हो पाया न ही प्रसिद्धि प्राप्त कर सका। इसे पूरे नेपाल के प्रति शाह घराने से लेकर गणतांत्रिक व्यवस्था संचालित करने वाले सभी राजनैतिक दलों के राजनेताओं तक की उदासीनता नहीं तो और क्या कहें?

श्री लंका व बांग्लादेश के बाद अब नेपाल में भड़का विद्रोह दुनिया के हर उन भ्रष्ट व बेलगाम सत्ताधीशों के लिये चेतावनी है जोकि जनता के मतों के बल पर उन्हें सुनहरे सपने दिखाकर सत्ता में तो आ जाते हैं परन्तु उसके बाद जनसरोकारों की बात करने के बजाये अपने सगे सम्बन्धियों को फायदा पहुँचाने में जुट जाते हैं। जनता सब देखती व समझती है कि किस तरह सत्ता मिलते ही नंगे भूखे राजनेता करोड़पति व अरबपति बन जाते हैं। किस तरह उनका अहंकार चौथे आसमान पर पहुँच जाता है। जनता देखती है कि किसतरह जनसमस्याओं से ध्यान भटका कर व्यर्थ के भावनात्मक मुद्दे उछालकर उन्हें वरगलाया जाता है। और जब इसी जनता के सिर के ऊपर से पानी बहने लगता है फिर वही होता है जो नेपाल में हुआ। चूँकि नेपाल भी दशकों से भ्रष्टाचार,बेरोजगारी व भाईभतीजावाद का शिकार था इसलिये नेपाल में एक न एक दिन जनविद्रोह तो होना ही था।

मोदी युग : नारी शक्ति का उत्कर्ष काल

डॉ. शिवानी कटारा

भारत की आधी आबादी, जिसे लंबे समय तक घर की चौखट और सामाजिक परंपराओं में सीमित माना जाता था, आज प्रधानमंत्री नरेनद्र मोदी के नेतृत्व में नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रही है। बीते दशक में तस्वीर पूरी तरह बदली है- ऐसे कानून बने जिन्होंने महिलाओं को बराबरी और गरिमा का अधिकार दिया और ऐसी योजनाएँ आईं जिन्होंने मातृत्व को सुरक्षित कर बेटियों के सपनों को पंख दिए। यही वजह है कि आज नारी शक्ति केवल वोट नहीं, अब राष्ट्र की आवाज है। इसी यात्रा में साल 2023 का 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' स्त्री प्रतिनिधित्व को नई ऊँचाई देने वाली ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में अंकित हो गया है। इसके तहत लोकसभा और विधानसभाओं की एक-तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित की गई। यह बदलाव केवल आंकड़ों का नहीं बल्कि भारतीय लोकतंत्र की आत्मा में स्त्री शक्ति को प्रतिष्ठित करने का है।

मोदी सरकार ने महिलाओं की सुरक्षा और गरिमा सुनिश्चित करने के लिए 'मिशन शक्ति' की शुरूआत की। इसके अंतर्गत वन स्टॉप सेंटर, 247 महिला हेल्पलाइन और डिजिटल शिकायत पोर्टल जैसी सुविधाएँ उपलब्ध कराई गईं। हिंसा झेलने वाली महिलाएँ अब कानूनी, चिकित्सीय और मानसिक सहयोग एक ही स्थान पर पा रही हैं और यह भरोसा जगा है कि उनकी आवाज अब अनसुनी नहीं होगी। मुस्लिम महिलाओं को अन्यायपूर्ण परंपरा से मुक्त करने वाला 'तीन तलाक' विरोधी कानून इसी दिशा में बड़ा परिवर्तन साबित हुआ। वहीं, कामकाजी महिलाओं के लिए 'मातृत्व लाभ (संशोधन) अधिनियम, 2017' के अंतर्गत अवकाश 12 से बढ़ाकर 26 सप्ताह किया गया तथा बड़े संस्थानों में शिशु गृह (क्रेच) की सुविधा अनिवार्य की गई। इन पहलों ने महिलाओं को सुरक्षा और गरिमा के साथ कार्यक्षेत्र में सक्रिय योगदान का अवसर प्रदान किया।

मोदी सरकार की नीतियों में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' नारी सशक्तिकरण का मर्मस्थ स्त्रोत रहा है और हाल के आँकड़े इसकी गवाही देते हैं। 2014-15 में जहाँ 1000 लड़कों पर 918 लड़कियाँ थीं, 2023-24 में यह अनुपात बढ़कर 930 हुआ और माध्यमिक शिक्षा में लड़कियों की नामांकन दर 75.51% से बढ़कर 78% पहुँची। मार्च 2022 में 'कन्या शिक्षा प्रवेश उत्सव' से 1,00,786 बच्चियाँ स्कूल लौटीं। 2014-16 में मातृ मृत्यु दर 130 से घटकर 2018-20 में 97 रह गई और संस्थागत प्रसव 87% से बढ़कर 94% से अधिक हुआ- यह दर्शाता है कि सुरक्षित मातृत्व ही विकसित भारत की सच्ची पहचान है। राज्यों के अनुभव इस प्रगति को और भी सजीव बना देते हैं। उत्तर प्रदेश में गर्भवती महिलाओं में एनीमिया की दर 51% से घटकर 45.9% रह गई और गंभीर एनीमिया 2.1% से घटकर 1.7% पर आ गया- यह आँकड़े मातृ स्वास्थ्य सुधार की गवाही देते हैं।

इसी कड़ी में उज्ज्वला योजना के अंतर्गत 10.33 करोड़ गैस कनेक्शन दिए गए, जिनमें से 8.34 करोड़ परिवार सक्रिय उपयोगकर्ता हैं, जिससे माताओं और बच्चों को धुएँ से मुक्ति मिली। वहीं, स्वच्छ भारत मिशन के तहत बने करोड़ों शौचालयों ने ग्रामीण महिलाओं को खुले में शौच की विवशता से उबार कर उनकी गरिमा और स्वास्थ्य दोनों को संबल दिया। यह सब मिलकर नारी जीवन में सुरक्षा, सम्मान और स्वाभिमान की नई कहानी लिख रहे हैं।

आर्थिक स्वतंत्रता भी अब महिलाओं की शक्ति का दूसरा नाम बन चुकी है। मोदी सरकार के प्रयासों से 'स्टैंड अप इंडिया' और 'मुद्रा योजना' ने लाखों महिला उद्यमियों को कारोबार के लिए वित्तीय सहारा दिया, जबकि 'लाखपति दीदी' और 'ड्रोन दीदी' योजना ने ग्रामीण महिलाओं को तकनीक और स्वरोजगार से जोड़कर उन्हें स्वावलंबी भारत की नई पहचान बना दिया है। मुद्रा योजना में महिलाओं की हिस्सेदारी 68% है और 2016 से 2025 के बीच प्रति महिला औसत ऋण 62,679 रुपये तक पहुँचा। स्टैंड-अप इंडिया में 80% से अधिक ऋण महिलाओं को मिले। उत्तर प्रदेश में मनरेगा में उनकी भागीदारी 35% से बढ़कर 45.05% और श्रम-बल में 14% से बढ़कर 36% हुई। वाराणसी की 1.38 लाख ग्रामीण महिलाएँ स्व-सहायता समूहों से आत्मनिर्भर बनीं, जिनमें कई ड्रोन पायलटिंग, कृषि और डेयरी जैसे क्षेत्रों में सक्रिय हैं। यह दर्शाता है कि महिलाएँ अब केवल योजनाओं की भागीदार नहीं बल्कि अर्थव्यवस्था की सशक्त धुरी बन रही हैं।

डिजिटल इंडिया ने महिलाओं के जीवन में ऐतिहासिक बदलाव लाया है। शहरी भारत की महिलाएँ स्मार्टफोन और इंटरनेट के सहारे बैंकिंग, ई-कॉमर्स और डिजिटल भुगतान को सहज बना रही हैं, तो ग्रामीण भारत की 76% महिलाएँ मोबाइल का उपयोग कर रही हैं और आधी से अधिक अपने निजी फोन की स्वामिनी बन चुकी हैं। यही तकनीकी पहुँच उन्हें डिजिटल विपणन, पैकेजिंग और ई-कॉमर्स से जोड़कर आत्मनिर्भरता की राह पर अग्रसर कर रही है। साथ ही, महिला हेल्पलाइन 181, एनसीडब्ल्यू 247 और पावर लाइन-1090 सुरक्षा और न्याय की त्वरित पहुँच देकर उनके आत्मविश्वास को और गहरा कर रही हैं। मोदी सरकार का यह डिजिटल सशक्तिकरण महिलाओं को समय और दूरी की सीमाओं से आजाद कर अवसरों की नई दुनिया थमा रहा है और उन्हें नवोन्मेषी बना रहा है।

दैनिक पंचांग

19 सितम्बर 2025 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

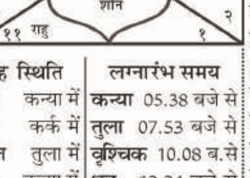

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य	कन्या में	कन्या	05.38 बजे से
चंद्र	कर्क में	तुला	07.53 बजे से
मंगल	तुला में	वृश्चिक	10.08 ब.से
बुध	कन्या में	धनु	12.24 बजे से
गुरु	मिथुन में	मकर	14.29 बजे से
शुक्र	सिंह में	कुंभ	16.15 बजे से
शनि	मीन में	मीन	17.48 बजे से
राहु	कुंभ में	मेष	19.19 बजे से
केतु	सिंह में	वृष	20.59 बजे से
		मिथुन	22.57 बजे से
राहुकाल 10.30 से 12.00 बजे तक		कर्क	01.10 बजे से
		सिंह	03.26 बजे से

शुक्रवार 2025 वर्ष का 262 वा दिन
दिशाशूल पश्चिम **ऋतु** शरद।
विक्रम संवत् 2082 **शक संवत्** 1947
मास आश्विन (दक्षिण भारत में भाद्रपद) **पक्ष** कृष्ण
तिथि त्रयोदशी 23.38 बजे को समाप्त।
नक्षत्र आश्लेषा 07.06 बजे को समाप्त।
योग सिद्ध 20.41 बजे को समाप्त।
करण गर 11.28 बजे तदनन्तर वणिज 23.38 बजे को समाप्त।
चन्द्रायु 24.8 घण्टे
रवि क्रान्ति उत्तर 01° 28'
सूर्य उत्तरायन **कलि अहर्गण** 1872472
जूलियन दिन 2460937.5
कलियुग संवत् 5126
कल्पारंभ संवत् 1972949123
सृष्टि ग्रहारंभ संवत् 1955885123
वीरनिर्वाण संवत् 2551
हिजरी सन् 1446
महीना रवि उलावल **तारीख** 26
विशेष त्रयोदशी श्राद्ध, प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्रि।

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
चर	05.55 से	07.23 बजे तक	रोग	05.38 से	07.1 बजे तक
लाभ	07.23 से	08.51 बजे तक	काल	07.11 से	08.43 बजे तक
अमृत	08.51 से	10.19 बजे तक	लाभ	08.43 से	10.15 बजे तक
काल	10.19 से	11.47 बजे तक	उद्वेग	10.15 से	11.47 बजे तक
शुभ	11.47 से	01.15 बजे तक	शुभ	11.47 से	01.19 बजे तक
रोग	01.15 से	02.43 बजे तक	अमृत	01.19 से	02.51 बजे तक
उद्वेग	02.43 से	04.10 बजे तक	चर	02.51 से	04.23 बजे तक
चर	04.10 से	05.38 बजे तक	रोग	04.23 से	05.55 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अतः आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। Jagrutidaur.com, Bangalore

पतरातू पुलिस ने पांडे गिरोह के सदस्य सुनील धोबी को गिरफ्तार कर जेल भेजा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पतरातू : जिला के पतरातू पुलिस ने पांडे गिरोह के एक सदस्य को गिरफ्तार करने में सफलता पाई है' इसकी जानकारी पतरातू के अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी गौरव गोस्वामी ने आज 17 सितंबर को अनुमंडल पुलिस कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर दिया है। पतरातू के अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी गौरव गोस्वामी ने जानकारी देते हुए बताया कि जिला के पुलिस अधीक्षक को गुप्त सूचना मिली कि भुरकुंडा थाना कांड संख्या 72/22 दिनांक 20-4-2022 धारा 385, 387, 435 भादवि एवं 27 आर्म्स एक्ट तथा पलामू के चैनपुर थाना कांड संख्या 03/25 दिनांक 6.1.2025 धारा 190,191(1), 191 (3), 322 ए, 109, 103 (1), 61(2), 112(2), बीएनएस एवं 27 आर्म्स एक्ट के अभियुक्त सुनील धोबी पिता कैलाश रजक, जयनगर थाना पतरातु, जिला रामगढ़ वर्तमान में जिला के पतरातू और भुरकुंडा मैं किसी अपराध को अंजाम देने के फिराक में है। उक्त सूचना के आधार पर जिला के पुलिस अधीक्षक ने पतरातू के अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी गौरव गोस्वामी के नेतृत्व में एक विशेष टीम का गठन किया' उक्त छापामारी दल ने एसडीपीओ पतरातू के नेतृत्व में तत्काल कार्रवाई करते हुए 16 सितंबर को सुनील धोबी को जयनगर से गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की। बताया गया कि सुनील धोबी पर रामगढ़ जिला के पतरातू पुलिस सर्किल क्षेत्र में 10 से अधिक मामले दर्ज है। इसका पुराना आपराधिक इतिहास रहा है' पुलिस के छापामारी दल में पतरातू थाना प्रभारी शिवलाल गुप्ता, भुरकुंडा ओपी प्रभारी निर्भय कुमार, शेर अली सहित अन्य पुलिसकर्मी शामिल थे।

एक नजर

सिल्ली थाना परिसर में दुर्गा पूजा को लेकर शांति समिति की हुई बैठक

सिल्ली : सिल्ली थाना प्रांगण में गुरुवार के दिन संध्या 4 बजे से डीआईजी सह पुलिस अधीक्षक चंदन सिंन्हा के निदेर्शानुसार दुर्गा पूजा पर्व को लेकर शांति समिति की बैठक संपन्न हुआ। बैठक में रांची जिला परिषद उपाध्यक्ष बिना चौधरी, सिल्ली अंचलाधिकारी अरुणिमा एक्का, प्रखंड विकास पदाधिकारी अनिल कुमार एवं प्रखंड प्रमुख जितेंद्र बड़ाईक ने उपस्थित लोगों को पूजा की अग्रिम शुभकामनाएं देते हुए कहा कि इस वर्ष त्योहार को पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाएं।बैठक को संबोधित करते हुए सिल्ली पुलिस निरीक्षक हंसे उरांव ने कहा कि दुर्गा पूजा शांतिपूर्ण और सौहाद्रपूर्ण माहौल में करने हेतु सड़क दुर्घटनाओं पर प्रभावी रोक एवं असामाजिक गतिविधियों को हर हाल में समाप्त किया जाएगा साथ ही आगे कहा कि सभी अधिकारी गण आपस में समन्वय स्थापित कर कार्य करें।दुर्गा पूजा के दौरान विधि व्यवस्था,यातायात व्यवस्था और सुरक्षा व्यवस्था को लेकर अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश भी दिए।वहीं थाना प्रभारी दिनेश ठाकुर ने कहा कि विधि व्यवस्था दुरुस्त करने हेतु पूजा के दौरान मोटरसाइकिल चेकिंग अभियान चलाया जाएगा ताकि असामाजिक तत्व की पहचान किया जा सके। सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने वालों पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी तथा सोशल मीडिया पर भी निगरानी रखी जाएगी एवं स्थानीय प्रशासन और पुलिस विभाग मिलकर हर संभव प्रयास करेंगे ताकि पूजा शांति, भक्ति और उल्लास के साथ संपन्न हो सके। पूजा समिति के प्रतिनिधियों ने सड़क पर प्रकाश व्यवस्था, स्वच्छता और सड़क से जुड़ी बातों पर अपने सुझाव दिए। मौके पर समाजसेवी, गणमान्य लोग और पूजा पंडाल के कमेटी के सदस्य मौजूद रहे।

दुरागड़ा गांव में आदि कर्मयोगी अभियान की बैठक

चौपारण : भारत सरकार द्वारा जनजातीय समुदाय के जीवन स्तर में सुधार लाने और ग्राम स्तर पर उनकी समस्याओं के समाधान पर विशेष ध्यान देने के उद्देश्य से चलाए जा रहे आदि कर्मयोगी अभियान के तहत गुरुवार को दैहर पंचायत के दुरागड़ा गांव में पहली बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता पंचायत के मुखिया ब्रमदेव भुइयाँ ने की। बैठक में आदि कर्मी शैलेन्द्र पासवान एवं मो० समदानी, आदि सहयोगी के रूप में मुखिया ब्रमदेव भुइयाँ, पंचायत समिति सदस्य मुकेश पासवान, बैंक मित्र नागेन्द्र कुमार, रोजगार सेवक अमजद अली, आंगनबाड़ी सेविका लकड़ा देवी, सहिया चमेली देवी, जन वितरण दुकानदार मनोज कुमार, कृषि मित्र अजय पासवान, जेएसएलपीएस कर्मी प्रमिला सिंह, वीएलई विकास कुमार समेत कई पदाधिकारी व प्रतिनिधि मौजूद रहे। इसके अलावा प्रमुख ग्रामीण प्रतिभागियों में महेश बिरहोर, सहदेव बिरहोर, महेन्द्र बिरहोर, गुड़िया देवी, पार्वती देवी, चिंतामन खैरवार, मोहन खैरवार और सोहरी देवी शामिल थे। वहीं मुखिया सहयोगी के रूप में नरेश सिंह, विक्रम कुमार, राहुल यादव और मन्नू कुशवाहा भी उपस्थित रहे। बैठक में जनजातीय समाज से जुड़ी विभिन्न समस्याओं और उनके समाधान पर चर्चा हुई। हालांकि, कार्यक्रम के दौरान किसी भी वनकर्मी की उपस्थिति नहीं रहने से ग्रामीणों में नाराजगी देखी गई, क्योंकि अधिकांश मामले वन विभाग से संबंधित बताए गए। मुखिया प्रतिनिधि नागेंद्र कुमार ने कहा कि वन विभाग की अनुपस्थिति ने ग्रामीणों की अपेक्षाओं पर प्रश्न खड़ा कर दिया है। उन्होंने संबंधित विभाग से भविष्य की बैठकों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने की मांग की।

बरकाकाना में दुर्गा पूजा की शांति व हर्षोल्लासपूर्ण आयोजन के लिए शांति समिति की हुई बैठक

रामगढ़ : बरकाकाना दुर्गा पूजा हर्षोल्लास व शांतिपूर्ण वातावरण में मनाए जाने को लेकर बरकाकाना ओपी परिसर में शांति समिति का बैठक आयोजित किया गया। बैठक का अध्यक्षता सहायक पुलिस अधीक्षक गौरव गोस्वामी व संचालन बरकाकाना ओपी प्रभारी उमाशंकर वर्मा द्वारा किया गया। बैठक में मुख्य रूप से क्षेत्र में होने वाले सभी दुर्गा पूजा कमेटी के लोगों से पूजा के संबंध में विस्तृत जानकारी लिया गया। इस दौरान सीसीएल दुर्गा पूजा समिति, गांधी मैदान पूजा समिति, चिल्ड्रन पार्क पूजा समिति व लोको कॉलोनी दुर्गा पूजा समिति के अध्यक्ष व सचिव उपस्थित रहे। मौके पर सुदर्शन महतो, हरि रत्नम, कार्यकारी वार्ड पार्षद गीता देवी, सनियारो बारला, विनोद तिवारी, प्रदीप शर्मा, संजय लाला, रणजीत राम, गोविंद बेदिया, पंचदेव करमाली, नागेंद्र मुंडा, मोहम्मद इकबाल अंसारी, अशोक पासवान नेपाल विश्वकर्मा, विनोद महतो, सहित कई लोगों उपस्थित थे।

चौपारण में ट्रेलर और ट्रक की जोरदार भिड़ंत, चालक फंसा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चौपारण : प्रखण्ड के जीटी रोड स्तिथ महुदी के पास गुरुवार को एक ट्रेलर और ट्रक के बीच जोरदार भिड़ंत हो गई। हादसे में ट्रेलर का चालक बुरी तरह से वाहन में फंस गया। सूचना मिलने पर बरही इंस्पेक्टर चंद्रशेखर प्रसाद, चौपारण थाना प्रभारी सरोज सिंह चौधरी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और चालक को निकालने का प्रयास शुरू किया। चालक के बुरी तरह से फंसे होने के कारण थाना प्रभारी सरोज सिंह चौधरी ने किरान व गैस कटर मंगवाया। काफी मशक्कत के बाद गैस कटर से वाहन का हिस्सा काटकर चालक को बाहर निकाला गया। घायल को तुरंत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने बेहतर इलाज के लिए हजारीबाग रेफर कर दिया। घायल चालक की पहचान मोहम्मद खान (35 वर्ष), ग्राम तहसील रणवीर नौगांव, जिला अलवर (राजस्थान) के रूप में हुई है। इधर हादसे के कारण जीटी रोड पर कुछ समय के लिए जाम की स्थिति उत्पन्न हो गई। प्रशासन ने तत्काल सड़क को वनवे कर यातायात बहाल कराया। इस दौरान कई छोटे वाहन चालक जबरन वनवे से जैसे तैसे निकलने लगे, जिससे स्थिति और बिगड़ गई। हालात को नियंत्रित करने के लिए इंस्पेक्टर चंद्रशेखर प्रसाद और थाना प्रभारी सरोज सिंह चौधरी खुद सड़क पर उतरकर वाहनों को नियंत्रित किया। गौरतलब है कि जीटी रोड पर सिक्स लेन निर्माण कार्य जारी है। इसके कारण प्रखण्ड के पिपरा व महुदी के पास पहले से ही वनवे की व्यवस्था की गई है। वनवे के कारण हल्की सी भी चूक के कारण बड़ा हादसा घटित होती है। इससे पहले भी उक्त स्थल में कई घटनाएं घटित हो चुकी है। जिसमें चालक की जान चली गई थी।

सांसद प्रतिनिधि धनंजय कुमार पुटूस ने एसपी को सौंपे साइबर अपराध रोकने के सुझाव

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : रामगढ़ जिला में बढ़ते साइबर अपराधों को देखते हुए सांसद प्रतिनिधि (मीडिया) एवं भाजपा नेता धनंजय कुमार पुटूस ने रामगढ़ एसपी को एक पत्र लिखकर साइबर अपराध पर अंकुश लगाने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिए। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में रामगढ़ जिला समेत पूरे प्रदेश में साइबर अपराध तेजी से बढ़ रहे हैं, जिससे आम जनता को आर्थिक और सामाजिक नुकसान का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे में प्रशासनिक स्तर पर ठोस कदम उठाना बेहद आवश्यक है। धनंजय कुमार पुटूस द्वारा दिए गए मुख्य सुझाव इस प्रकार हैंः 1. साइबर सेल का विस्तार- प्रत्येक थाने में साइबर सेल स्थापित कर मानव संसाधन और तकनीकी संसाधन की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। 2.जन- जागरूकता अभियान-साइबर अपराध रोकथाम हेतु स्कूल, कॉलेज, पंचायत स्तर पर जागरूकता अभियान चलाए जाएं और सोशल मीडिया के माध्यम से आम नागरिकों को सचेत किया जाए। 3. अंतर-जिला एवं अंतर-राज्य समन्वय -जटिल मामलों में त्वरित कार्रवाई हेतु अंतर-जिला एवं अंतर-राज्य स्तर पर समन्वय को सुदृढ़ किया जाए। 4. त्वरित शिकायत निवारण तंत्र- साइबर अपराध पीड़ितों की शिकायत दर्ज करने और समाधान हेतु 24×7 हेल्पलाइन एवं ऑनलाइन शिकायत पोर्टल को और अधिक प्रभावी बनाया जाए। उन्होंने विश्वास जताया कि इन सुझावों पर शीघ्र अमल होने से रामगढ़ जिला साइबर अपराध की चुनौतियों का सामना मजबूती से कर सकेगा और आम जनता को सुरक्षा का एहसास मिलेगा। धनंजय कुमार पुटूस ने कहा कि जनता की समस्याओं का समाधान और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना ही उनका मुख्य उद्देश्य है।

कबाड़ी चुनकर तीन बच्चों का पेट पाल रही मां का इलाज के अभाव में मौत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चौपारण : गरीबी और बेबसी के सहारे अपने तीन छोटे बच्चों का जीवन पाल रही बुल्लू देवी गुरुवार को जिंदगी की जंग हार गईं। बेला पंचायत के रूपिन निवासी बुल्लू देवी का पति लेखवा भुइयाँ कुछ वर्ष पूर्व ही चल बसे थे। पति के निधन के बाद वह अपने तीन बच्चों के साथ चौपारण चट्टी जीटी रोड किनारे रखे गए नवनिर्मित ओवर ब्रिज के लिए रखे गए बॉक्स गडर में आश्रय लेकर रह रही थीं। जीवनयापन के लिए वह कबाड़ चुनकर बच्चों का पेट पालती थीं। लेकिन कुछ दिन पूर्व अचानक उसकी तबीयत बिगड़ गई और उचित इलाज के अभाव में उनकी मौत हो गई। मृतका के पीछे तीन मासूम बेटे सोनू (10 वर्ष), कटरी (5 वर्ष) और लक्ष्मण (3 वर्ष) रह गए हैं। बड़ी बेटी की शादी इंगुनिया में हुई है। माँ की असामयिक मौत से परिवार पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा है। मौके पर पूर्व मुखिया शौकत खान (भुट्ट खान), स्थानीय दशरथ कैशरी, मरहेडी के बिनोद भुइंया आदि समाजसेवियों ने आपदा मित्र एम्बुलेंस की मदद से शव को अंतिम संस्कार के लिए भेजवाया। ग्रामीणों ने स्वास्थ्य व्यवस्था की लापरवाही पर नाराजगी जताते हुए कहा कि यदि समय पर इलाज उपलब्ध हो जाता तो बुल्लू देवी की जान बचाई जा सकती थी। उन्होंने प्रशासन से इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए ठोस कदम उठाने की मांग की है।

खाद्य सुरक्षा विभाग के द्वारा चलाया गया जांच अभियान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : आगामी त्योहारों को देखते हुए सुरक्षित और स्वस्थ भोजन सुनिश्चित करने के लिए खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा जाँच अभियान चलाया गया। अभिहित अधिकारी सह अपर मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी डॉ नवल कुमार एवं खाद्य सुरक्षा पदाधिकारी अदिति सिंह के द्वारा गोला स्थित विभिन्न खाद्य प्रतिष्ठानों का औचक निरीक्षण किया गया। काकू मिष्ठान, गृहस्थी स्टोर और अन्य का निरीक्षण किया गया एवं लीगल खाद्य नमूना जब्त किया गया। काकू मिष्ठान से पेड़ा का नमूना जब्त किया गया एवं गृहस्थी स्टोर से हल्दी का नमूना जप्त किया गया जिसे रासायनिक जाँच हेतु राज्य खाद्य जाँच प्रयोगशाला, राँची भेज दिया गया। खाना बनाने में साफ पानी का उपयोग करने, कर्मियों की स्वच्छता पर ध्यान देने, fssai मानक वाले खाद्य पदार्थ का प्रयोग करने, उचित लेबलिंग के साथ खाद्य सामाग्री की पेकिंग करने, synfthetic कलर का प्रयोग न करने और अनावश्यक रंगों के इस्तमाल से परहेज करने का निर्देश दिया गया।

कुड़मी समाज के रेल टेका-डहर छेका आंदोलन को आजसू का पूरा समर्थन : हरे लाल महतो

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सरायकेला : कुड़मी समाज की अनुसूचित जनजाति (एसटी) सूची में पुनः शामिल किए जाने की मांग को लेकर 20 सितंबर से झारखंड, पश्चिम बंगाल और ओडिशा में शुरू होने वाले अनिश्चितकालीन रेल टेका-डहर छेका आंदोलनह्वको आजसू पार्टी ने पूर्ण समर्थन देने का ऐलान किया है। पार्टी के केंद्रीय महासचिव हरे लाल महतो ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि कुड़मी समुदाय को सामाजिक न्याय दिलाने के लिए आजसू कार्यकर्ता सड़कों पर उतरेंगे, रेल चक्का जाम करेंगे। उन्होंने याद दिलाया कि झारखंड आंदोलनकारी स्व. एन.ई. होरो, स्व. रामदयाल मुंडा और गुरुजी शिबू सोरेन ने भी कुड़मी समुदाय को एसटी सूची में शामिल करने का समर्थन किया था। यही नहीं, रघुवर दास सरकार के समय 46 सांसद और विधायकों ने लिखित रूप से इसका समर्थन किया था, जिसमें हेमंत सोरेन और इरफान अंसारी भी शामिल थे। हरे लाल महतो ने बताया कि झारखंड के विभिन्न जिलों में वरिष्ठ नेताओं को प्रभारी बनाया गया है। बोकारो और गिरिडीह जिले की जिम्मेदारी गिरिडीह सांसद चंद्र प्रकाश चौधरी को सौंपी गई है। रामगढ़, हजारीबाग और चतरा में मांडू विधायक निर्मल महतो नेतृत्व करेंगे।बोकारो जिले में पूर्व विधायक डॉ. लंबोदर महतो की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। सरायकेला-खरसावां, पूर्वी सिंहभूम और पश्चिमी सिंहभूम जिलों में खुद हरे लाल महतो नेतृत्व करेंगे।रांची जिले में केंद्रीय नेतृत्व की देखरेख में पूरी टीम आंदोलन को आगे बढ़ाएगी।संथाल परगना में संजीव महतो को जिम्मेदारी दी गई है। उन्होंने कहा कि झारखंड के 24 जिलों के साथ-साथ बंगाल और ओडिशा में भी पार्टी ने प्रभारियों की नियुक्ति की है ताकि आंदोलन को व्यापक स्तर पर सफलता मिल सके। आजसू पार्टी की ओर से इस आंदोलन के तहत दो मुख्य मांगें रखी गई हैं, जिसमें कुड़मी जाति को अनुसूचित जनजाति (एसटी) सूची में पुनः शामिल किया जाए।कुड़मालि भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में जोड़ा जाए। हरे लाल महतो ने कहा कि 1931 से पहले कुड़मी समुदाय को आदिम जनजाति के रूप में मान्यता प्राप्त थी, लेकिन बाद में इसे एसटी सूची से हटाकर ओबीसी में डाल दिया गया। उन्होंने डॉ. नारायण उरांव की पुस्तक ₹आदिवासी अस्मिता और कुर्मी महतो₹ और 1913 एवं 1931 की सरकारी अधिसूचनाओं का हवाला देते हुए कहा कि इस समुदाय को ऐतिहासिक रूप से आदिवासी के रूप में सूचीबद्ध किया गया था। हरे लाल महतो ने जानकारी दी कि 20 सितंबर को सरायकेला-खरसावां जिले के कुकड़ू प्रखंड (नीमडीह थाना) क्षेत्र स्थित हैंसालौंग रेलवे स्टेशन पर लाखों की संख्या में कुड़मी समाज के लोग जुटकर आंदोलन की शुरूआत करेंगे।

संक्षिप्त खबरें

भदानीनगर सड़क हादसे में एक व्यक्ति की मौत, तीन स्कूली छात्राएं गंभीर रूप से घायल

रामगढ़ : रामगढ़ जिले के भदानीनगर चिकोर दुमहान गढ़ा स्थित सड़क दुघर्टना में एक व्यक्ति की मौत हो गई, वहीं तीन स्कूली छात्रा गंभीर रूप से घायल हो गए, जानकारी अनुसार आज दोपहर ज्ञान ज्योति विधालय में छुट्टी के बाद काशी प्रजापति अपने मोटरसाइकिल से अपनी बेटी पुनम कुमारी,संजू कुमारी और रिंकू कुमारी को एक ही मोटरसाइकिल पर बैठाकर घर की ओर जा रहे थे। इस बीच मोटरसाइकिल तेज रफ्तार के कारण चिकोर दुमहान गढ़ा के अनियंत्रित होकर पेड़ से जा टकराया, स्थानीय लोगों द्वारा तत्काल सभी घायल को भुरकुंडा सीसीएल अस्पताल लाया गया। जहां डॉक्टर अनूप टोप्पो सीएमओ ने इलाज के दौरान काशी प्रजापति को मृत घोषित कर दिया। वहीं घायल सभी छात्रों को रामगढ़ सदर अस्पताल भेजा गया।

राधा गोविन्द विश्वविद्यालय में फार्माकोविजिलेंस सप्ताह का हुआ आयोजन

रामगढ़ : राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखंड के फामेर्सी विभाग एवं राधा गोविंद फामेर्सी कॉलेज द्वारा फामाकीविजिलेंस सप्ताह का आयोजन किया गया । जिसका मुख्य उद्देश्य दवाओं के प्रतिकूल प्रभाव (प्रतिकूल दवा प्रतिक्रिया – एडीआर) के प्रति जागरूकता फैलाना है। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति बी. एन. साह, सचिव प्रियंका कुमारी,कुलपति प्रो. (डॉ.) रश्मि, कुलसचिव प्रो. (डॉ.) निर्मल कुमार मंडल, वित्त एवं लेखा पदाधिकारी डॉ संजय कुमार,परीक्षा नियंत्रक प्रो. (डॉ.) अशोक कुमार, प्रबंध समिति सदस्य अजय कुमार,राधा गोविंद फामेर्सी कॉलेज के प्राचार्य साई प्रकाश उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथियों के स्वागत भाषण से हुआ। कुलाधिपति बी. एन. साह ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि दवाओं के दुष्प्रभावों की जानकारी समय पर देना रोगी सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है। सचिव प्रियंका कुमारी ने कहा कि दवा का लाभ तभी उपयोगी है जब उसका जोखिम नियंत्रित हो। कुलपति प्रो. (डॉ.) रश्मि ने फामाकीविजिलेंस को स्वास्थ्य सुरक्षा से जोड़ते हुए छात्रों को सक्रिय भागीदारी हेतु प्रेरित किया। कुलसचिव एवं परीक्षा नियंत्रक ने विद्यार्थियों को समाज में जागरूकता फैलाने का सेतु बनने का आह्वान किया। राधा गोविंद फामेर्सी कॉलेज के प्राचार्य साई प्रकाश पाणिग्राही ने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों को दवाओं के प्रतिकूल प्रभाव रिपोर्टिंग हेतु प्रेरित करना है। आज के कार्यक्रम में पोस्टर प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता का थीम प्रतिकूल दवा प्रतिक्रिया रखा गया, जिसमें छात्रों ने विभिन्न प्रकार के आकर्षक व सूचनात्मक पोस्टर प्रस्तुत किए। इन पोस्टरों के माध्यम से छात्रों ने आमजन को दवाओं के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक किया और बताया कि हर व्यक्ति को दवाओं के प्रतिकूल प्रभाव की जानकारी संबंधित स्वास्थ्य केंद्र या डॉक्टर को अवश्य देनी चाहिए। मौके पर उपस्थित विभाग के शिक्षक जयिता रॉय, , सुरजीत बर्मन, अरूप गोस्वामी, , झरना पलेई, शम्भू प्रसाद सिंह, सुमित कुमार, रमा सोनी, सस्मिता बास्के, डॉ राहुल कुमार, राहुल दत्ता, स्नेहा मोहपात्रा, भाग्यश्री प्रभात, सुजाता कुमारी, प्रसन्ना ज्योति मल्ला, मलय स्वाइन, रंजन घोष, सूर्यनारायण, आलोक कुमार एवं बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएँ उपस्थित रहे। यह कार्यक्रम न केवल विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक अनुभव रहा, बल्कि समाज को भी स्वास्थ्य सुरक्षा की दिशा में प्रेरित करने वाला साबित हुआ।

शिल्पकार भगवान विश्वकर्मा का पूजा क्षेत्र में हर्षोल्लास के साथ हुआ संपन्न

बरकाकाना : शिल्पकार माने जाने वाले भगवान विश्वकर्मा का पूजा बरकाकाना व इसके आसपास के क्षेत्र में हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। क्षेत्र के विभिन्न संस्थाओं में शिल्पकार भगवान विश्वकर्मा की मूर्ति स्थापित कर विधिवत पूजा अर्चना किया गया। इस दौरान रेलवे के विभिन्न संस्थाओं के साथ सीसीएल वर्कशॉप में भी शिल्पकार भगवान विश्वकर्मा का मूर्ति स्थापित कर विधिवत पूजा अर्चना किया गया। केंद्रीय कार्यशाला बरकाकाना के पूजा आकर्षण का केंद्र बना रहा जहां विभिन्न शॉप में भव्य तरीके से भगवान विश्वकर्मा मूर्ति स्थापित किया गया। केंद्रीय कर्मशाला बरकाकाना के मुख्य द्वार पर लगने वाले मेले में भी लोगों की काफी भीड़ देखी गई। अहले सुबह से ही श्रद्धालुओं की भीड़ विभिन्न संस्थाओं में जाकर शिल्पकार भगवान विश्वकर्मा की पूजा अर्चना कर सुख समृद्धि का कामना किया गया। मान्यता के अनुसार भगवान विश्वकर्मा ब्रह्मा के मानस पुत्र है। उन्हें सृष्टि का प्रथम वास्तुकार माना जाता है।

चौपारण और पाण्डेयबारा में शिल्पकार भगवान विश्वकर्मा का धूमधाम से पूजन

चौपारण : बुधवार को चौपारण प्रखंड के आरापगार पाण्डेयबारा समेत पूरे इलाके में शिल्पकार देव शिल्पी भगवान विश्वकर्मा का पूजा–अर्चना धूमधाम से संपन्न हुआ। इस अवसर पर राष्ट्रीय राजमार्ग–2 किनारे स्थित विश्वकर्मा मंदिर में चैय परगना के हजारीबाग, चतरा एवं कोडरमा जिले से सैकड़ों बढ़ई–विश्वकर्मा समाज के लोग एकत्रित हुए। पूजन–अर्चना मुख्य पुजारी रामचलितर राणा द्वारा विधिवत संपन्न कराई गई। कार्यक्रम में बरही विधायक मनोज कुमार यादव, बरही डीएसपी अजीत कुमार विमल, झारखंड विश्वकर्मा समाज के प्रदेश अध्यक्ष विकास राणा, समाजसेवी विनोद विश्वकर्मा, सुखदेव शर्मा, यदु राणा समेत बड़ी संख्या में लोग उपस्थित हुए। मौके पर समाज के प्रबुद्धजनों ने एकजुट होकर समाज के विकास पर विचार–विमर्श किया। विधायक मनोज यादव ने कहा कि एकजुटता और सामूहिक प्रयास से ही समाज का सर्वांगीण विकास संभव है। इस दौरान समाज के लोगों ने आर्थिक सहयोग भी किया। पूजा आयोजन में समाज अध्यक्ष मिथिलेश्वर प्रसाद राणा, सचिव डोमन राणा, भीखन मिस्त्री, बीरेंद्र कुमार राणा, बालेश्वर राणा, राजकुमार राणा, प्रभु राणा, केदार राणा समेत दर्जनों पदाधिकारियों व सदस्यों का सराहनीय योगदान रहा। समाज के प्रबुद्ध लोगों ने मंदिर भू–दाता रामलखन सिंह व उनके भाई के वंशज राजेंद्र सिंह को बुके और अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया।

जनता दरबार का हुआ आयोजन, लोगों की समस्याओं से अधिकारियों की हुई रूबरू

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरहेट : प्रखंड परिसर में जनता दरबार सह परिसंपत्ति वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। वही जनता दरबार का उद्घाटन विधायक प्रतिनिधि पंकज मिश्रा, डीसी हेमंत सती, एसपी अमित कुमार सिंह, जीप अध्यक्षा मोनिका किस्कू, सांसद प्रतिनिधि संजीव सामु हेम्ब्रम ने सामुहिक द्वीप प्रज्वलित कर किया।तत्पश्चात लोगों की शिकायत बारी-बारी से सुनी गई तथा आवेदन लिया गया। इस दौरान विधायक प्रतिनिधि पंकज मिश्रा ने संबोधन करते हुए कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जन कल्याण कारी योजना का लाभ सभी को दे रहे है। बरहेट के लोगों को योजनाओ का लाभ मिल रहा है। छठ पर्व के बाद आगामी बरहेट प्रखंड के 22 पंचायत में जनता

दरबार का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर केंद्रीय सचिव पंकज मिश्रा ने कहा कि 22 पंचायत में गांव-गांव में ढोल बजाकर के सूचना देने के बाद जनता दरबार आयोजित होगी। इसके बाद सभी पंचायत में जनता दरबार होने के बाद प्रखंड मुख्यालय में बृहद जनता दरबार का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस जनता दरबार में मिले लोगों के आवेदनों का निष्पादन किया जाएगा तथा योजनाओं का लाभ सभी को मिले। इसके लिए जिला प्रशासन, प्रखंड प्रशासन काफी सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि बरहेट प्रखंड कार्यालय में प्रत्येक शुक्रवार को बरहेट बीडीओ, थाना प्रभारी के अलावा प्रखंड स्तर के सभी पदाधिकारी के साथ लोगों की समस्या को सुनने के लिए प्रखंड कार्यालय में पदाधिकारी उपस्थित रहेंगे।इसके साथ ही डीसी हेमंत सती ने कहा कि राज्य में सभी लोगों को समाजिक सुरक्षा का लाभ मिले। जनता दरबार में मिले आवेदनों का निष्पादन कर लोगो को योजनाओ का लाभ मिल रहा है। वहीं एसपी अमित कुमार सिंह ने कहा कि सरकार आपके साथ है सभी को न्याय मिले और पुलिस प्रशासन हमेशा आपके सहयोग के लिए रहती है। उन्होंने कहा कि कुछ कार्य में टेक्निकल इशू होने के कारण देरी होती है पर प्रशासन हमेशा न्याय दिलाने के लिए कृत संकल्प है। उन्होंने जनता दरबार के आयोजन पर लोगों को अपनी समस्या को रखने की बात कही। वहीं इससे पूर्व बीडीओ अंशु कुमार पांडे ने केंद्रीय सचिव पंकज मिश्रा, डीसी हेमंत सती, एसपी अमित कुमार सिंह, जिला परिषद अध्यक्ष मोनिका किस्कू, सांसद प्रतिनिधि संजीव सामू हेंब्रम, झामुमो युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष संजय गोस्वामी को बुके देकर सम्मानित किया। वही कार्यक्रम में काफी भीड़ देखी गई तथा लोग अपनी समस्याओं को जनता दरबार में लिखित रूप से आवेदन तथा फॉर्म भरकर दिया। सभी विभाग के स्टॉल लगाए गए थे। यथा संभव लोगों की समस्या का त्वरित समाधान करने का आदेश दिया गया। वही जेएसएलपीएस के 124 समूह 60 लाख रुपये का चेक दिया गया तथा सहायिका और सेविका के बीच नियुक्ति पत्र का वितरण, अंचल क्षेत्र के ग्राम प्रधानों को प्रधानी रसीद आबूआ आवास का गृह प्रवेश, बाल विकास परियोजना की और से दो बच्चों का अन्नप्रशन, महिलाओ की गोद भराई, सड़क दुर्घटना में मृतको के परिजन को एक लाख का चेक आदि दिया गया।

एक नजर

सिख समाज की 350वीं शहीदी शताब्दी जागृति यात्रा का जैन समाज ने किया भव्य स्वागत

झुमरीतिलैया : जैन समाज ने आज सिख समाज के 350 वीं शहीदी शताब्दी गुरु पर्व को समर्पित जागृति यात्रा का झुमरी तिलैया पहुंचने पर भव्य स्वागत किया झंडा चौक पर पुष्प वृष्टि एवं माल्यार्पण कर गुरु ग्रंथ साहब का नमन किया और आशीर्वाद प्राप्त किया यात्रा में शामिल सिख समाज के पदाधिकारी का दुपट्टा एवं माला पहनाकर स्वागत किया जागृति यात्रा में शामिल श्रद्धालु भक्त जनों के लिए जैन समाज के द्वारा पेयजल शरबत की व्यवस्था की गई मौके पर जैन समाज के मंत्री नरेंद्र झाझंरी एवं वार्ड पार्षद पिंकी जैन ने कहा कि सिख समाज के जागृति यात्रा का स्वागत कर जैन समाज अभिभूत है हम सभी शामिल होकर अपने आप को धन्य समझ रहे है गुरुवाणी और गुरु ग्रंथ साहिब के उपदेश को अपनाकर ही परिवार समाज और राष्ट्र का कल्याण हो सकता है सिख समाज एवं जैन समाज हमेशा धर्म संस्कृति को आगे बढ़ाने का काम करते हैं जरूरतमंदों की सेवा और त्याग की भावना सर्वोपरि होती है आपसी भाईचारा के साथ राष्ट्र निर्माण में सहयोग प्रदान करते हैं इस मौके पर जैन समाज के सह मंत्री राज छाबड़ा कोषाध्यक्ष सुरेंद्र काला पूर्व अध्यक्ष ललित सेठी सुशील छाबड़ा सुरेश पांडया लड्डू संजय छाबड़ा गड्डू मुकेश अजमेरा आनंद पांडया प्रतिक पांडया कैलाश गंगवाल जैन समाज के मीडिया प्रभारी नवीन जैन और राजकुमार अजमेरा मौजूद थे।

चेन्नई राधा इंजीनियरिंग वर्क्स में धूमधाम के साथ विश्वकर्मा पूजा

बोकारो : न्यू मधुबन वॉशरी परिसर में चेन्नई राधा इंजीनियरिंग वर्क्स की ओर से गुरुवार को विश्वकर्मा पूजा बड़ी धूमधाम और श्रद्धा के साथ मनाई गई। इस अवसर पर चेन्नई राधा इंजीनियरिंग वर्क्स के निदेशक वी.आर. रामू विशेष रूप से उपस्थित हुए। कार्यक्रम में बीसीसीएल के जीएम कुमार रंजीव, परियोजना पदाधिकारी राजेश कुमार समेत पूरी टीम एवं स्थानीय अधिकारीगण मौजूद रहे। पूजा-अर्चना के बाद कंपनी की ओर से सभी कर्मचारियों को उपहारस्वरूप कुकर और मिठाई भेंट की गई। साथ ही उत्कृष्ट कार्य करने वाले चार कर्मचारियों को विशेष सम्मान स्वरूप लगभग 10 हजार रुपये मूल्य का सोने का सिक्का प्रदान किया गया। इस पहल से कर्मचारियों में उत्साह एवं उत्सव का माहौल देखने को मिला। पूरे आयोजन के दौरान पूजा स्थल को आकर्षक ढंग से सजाया गया था और सभी ने मिलकर सामूहिक प्रसाद ग्रहण किया।

रेल रोको आंदोलन को सफल बनाने को लेकर चास में मशाल जुलूस,कल

बोकारो : कुड़मि जाति को अनुसूचित जनजाति की सूची में शामिल करने की मांग को लेकर 20 सितंबर को आदिवासी कुड़मी समाज द्वारा आहूत रेल रोको आंदोलन रेलटेका डहर छेका की सफलता सुनिश्चित करने के लिए गुरुवार की शाम चास में मशाल जुलूस निकाला गया। यह जुलूस योधाडीह मोड़ स्थित कुड़मी छात्रावास से शुरू होकर आईटीआई मोड़ होते हुए जगन्नाथ महतो चौक तक निकाला गया। मशाल जुलूस में बड़ी संख्या में समाज के लोग शामिल हुए और आंदोलन को सफल बनाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर जिप सदस्य राजेश महतो ने कहा कि 20 सितंबर को चंद्रपुरा रेलवे स्टेशन को जाम किया जाएगा। चास और चंदनकियारी प्रखंड से हजारों की संख्या में कुड़मी समाज के लोग आंदोलन में शामिल होंगे।

एसटी सूची से बाहर रखने के विरोध में कुड़मी समाज, आंदोलन को लेकर की अहम बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिले के राजमहल प्रखंड में आदिवासी कुड़मी समाज की एक जिला स्तरीय बैठक राजमहल के भैंसमारी मोड़ पर संपन्न हुई। इस बैठक की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष विजय कुमार महतो ने की। बैठक में मुख्य रूप से केंद्र सरकार द्वारा आदिवासी कुड़मी समाज को अनुसूचित जनजाति की सूची में शामिल नहीं किए जाने के विरोध में आगामी आंदोलन की रूपरेखा पर चर्चा की गई। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि साहेबगंज जिला के सैकड़ों कुड़मी समाज के समर्थक दिनांक 20 सितंबर 2025 को गोड्डा में आयोजित 'रेल टेको आंदोलन' में भाग लेंगे। आंदोलन के माध्यम से केंद्र सरकार के निर्णय का विरोध दर्ज कराया जाएगा और कुड़मी समाज को एसटी सूची में शामिल किए जाने की मांग दोहराई जाएगी। बैठक में समाज के कई प्रमुख सदस्य उपस्थित थे, जिनमें केदार महतो, नारायण महतो, प्रकाश महतो, शिव शंकर महतो, अर्जुन कुमार महतो, सरवीन महतो, पंकज महतो, नकुल महतो, खोखा महतो, तेजनारायण महतो और रविंद्र महतो शामिल हैं। सभी ने आंदोलन को सफल बनाने हेतु अपने-अपने क्षेत्रों में जनजागरूकता अभियान चलाने का संकल्प लिया। जिला अध्यक्ष विजय कुमार महतो ने कहा कि यह आंदोलन समाज के अधिकारों की रक्षा के लिए आवश्यक है और जब तक कुड़मी समाज को उनका संवैधानिक हक नहीं मिल जाता, तब तक यह संघर्ष जारी रहेगा।

स्वच्छता ही सेवा के तहत सफाई मित्र सुरक्षा शिविर का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : मालदा मंडल रेल अंतर्गत चल रहे स्वच्छता ही सेवा 2025 - स्वच्छोत्सव अभियान के तहत, पूर्व रेलवे, मालदा मंडल ने आज अपने क्षेत्राधिकार में सफाई मित्र सुरक्षा शिविर का आयोजन हुआ। यह पहल मंडल रेल प्रबंधक मालदा, मनीष कुमार गुप्ता के मार्गदर्शन और डॉ. अनुपा घोष, चीफ मेडिकल सुपरिंटेंडेंट/मालदा के नेतृत्व में सम्पन्न हुई। ये विशेष स्वास्थ्य शिविर मंडल रेलवे हॉस्पिटल, साहिबगंज हेल्थ यूनिट में आयोजित किए गए। इस पहल का उद्देश्य फ्रंटलाइन सफाई मित्रों की भलाई, सम्मान और सुरक्षा सुनिश्चित करना है, जो डिवीजन में स्वच्छता और स्वच्छता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मुख्य हेल्थ यूनिट, साहिबगंज में यह शिविर डॉ. जी.पी. सिंह, असिस्टेंट

डिविजनल मेडिकल ऑफिसर/ साहिबगंज हेल्थ यूनिट के नेतृत्व में आयोजित हुआ, जिसमें 24 सफाई मित्रों का सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण किया गया, जैसे ब्लड प्रेशर, शुगर लेवल और बीएमआई साथ ही, टीबी, त्वचा रोग, श्वसन संबंधी समस्याएं और व्यावसायिक स्वास्थ्य खतरों पर जागरूकता सत्र भी आयोजित किए गए, जिसमें सुरक्षित और रोकथाम वाले उपायों की जानकारी दी गई।

स्वास्थ्य शिविर के उद्देश्यः

सफाई मित्रों के लिए व्यापक स्वास्थ्य जांच आयोजित करना। व्यावसायिक स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाना। सफाई कार्य से संबंधित सामान्य स्वास्थ्य समस्याओं की पहचान करना। तत्काल चिकित्सा परामर्श और आवश्यक रेफरल प्रदान करना। सफाई कर्मियों में स्वास्थ्य और सुरक्षा प्रथाओं को बढ़ावा देना। ऐसे स्वास्थ्य जांच शिविर तिमाही आधार पर आयोजित किए जाएंगे, रेफर किए गए मामलों का फॉलो-अप सुनिश्चित किया जाएगा, और सफाई मित्रों में स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए नियमित संवेदनशीलता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

मोटरसाइकिल चोर को ग्रामीणों ने पड़कर पुलिस को किया सुपुर्द, भेजा जेल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिला के बरहरवा थाना क्षेत्र के रामनगर हटिया से मोटरसाइकिल चोरी करने के प्रयास के क्रम में बुधवार को रामनगर के ग्रामवासियों ने एक युवक को धर दबोचा। इसकी जानकारी बरहरवा थाना पुलिस को मिली। जानकारी मिलते ही बरहरवा थाना पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए सूचना का सत्यापन एवं आवश्यक कार्रवाई को लेकर घटनास्थल पर पहुंचे। जहां बरहरवा थाना पुलिस ने ग्रामीणों की सहयोग से उक्त बाइक चोर को गिरफ्तार कर थाना लाया। बाइक चोर की पहचान मिस्टर शेख पिता मैरुल शेख साकिम बालूग्राम, उधवा दियारा, थाना राधानगर निवासी के रूप में हुई है। वहीं बाइक चोर से पूछताछ के क्रम में बीतें दिन थाना क्षेत्र के तेतुलिया स्थित बड़ा पुलिया के पास से जेएच 18एच 2497 होंडा कंपनी के सीडी 125 मोटरसाइकिल अपने सहयोगी के साथ मिलकर चोरी करने को स्वीकार किया। इसके अलावें उन्होंने पूछताछ पर लिट्टीपाड़ा, अमड़ापाड़ा, हिरणपुर, दुगार्पुर, बरहेट, रांगा थाना क्षेत्र से सहयोगी के साथ मिलकर मोटरसाइकिल चोरी कर उक्त चोरी किए मोटरसाइकिल को मालदा साहिबगंज के आस-पास बेच देने की बात कही। बरहरवा पुलिस निरीक्षक संतोष कुमार राणा ने जानकारी देते हुए बताया पकड़े गए चोर के निशानदेही पर कुल चार मोटरसाइकिल बरामद की गई है। जिसमें काला रंग का तीन स्प्लेंडर प्लस एवं एक सीडी एच.एफ. प्लस मोटरसाइकिल शामिल है। मौके पर थाना प्रभारी सुमित कुमार सिंह, पुअनि अनिल कुमार यादव सहित अन्य मौजूद थें।

अग्रवाल प्रिमियम लीग में महिला टीम ने दिखाया दमखम, साकार फायर वड्र्स रही विजेता

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

झुमरी तिलैया : महाराजा अग्रसेन जयंती समारोह को लेकर अग्रवाल समाज के तत्वाधान में चल रहे अग्रवाल प्रिमियम लीग के अंतर्गत छः युवाओं और चार महिलाओं कि टीम जैनी स्पोर्ट्स विश्रामबाग में अपना दमखम दिखा रही हैं। महिला सस्कतीकरण के तहत पहली बार बहु - बेटीयों सिरकत कर रही है।मैच 11 -11 ओभर का हुआं। महिला टीम ने पहला मैच साकार फायर वड्र्स एवं टाटा मोटर्स चैंपियन के बीच खेला गया जिसमें साकार फायर वड्र्स ने 38 रनों से विजयी घोषित हुई ।जिसमें सोनीका कन्दोई ने 57 रन, तथा रीचा भोजनवाला ने 42 रन का योगदान दिया। जबाबी पारी खेलने उतरी टाटा मोटर्स चैंपियन कि और से प्रियंका अग्रवाल ने 26 रन और प्रिया चौधरी ने 22 रन का योगदान दिया। इस टीम ने

86 रन बनाकर आउट हो गई। साकार फायर वड्र्स टीम ने 124 रन बनाकर फाइनल में प्रवेश कर गई। जबकि दुसरा मैच सन्मार्ग वन्डर्स वुमन और कामधेनु क्वीन्स के बीच खेला गया। सन्मार्ग वुमन ने 7 विकेट से जीत हासिल किया। पहले बल्लेबाजी करते हुए कामधेनु टीम ने 6 विकेट खोकर 64 रन बनाए। और सन्मार्ग वुमन ने 7ओभर में ही 65 रन बनाकर जीत हासिल किया। फाइनल मैच साकार फायर वड्र्स एवं सन्मार्ग वुमन के बीच खेला गया जिसमें सन्मार्ग वुमन ने 67 रन बनाए जबकि साकार फायर वड्र्स ने बल्लेबाजी करने उतरी उसने 7ओभर में 68 रन बनाकर जीत हासिल किया।

मेगा महिला स्वास्थ्य और दृष्टि सुरक्षा अभियान में 1700 से अधिक मरीजों की हुई जांच

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिले में वूमेन डॉक्टर्स विंग, जिला प्रशासन साहिबगंज और जिला स्वास्थ्य समिति साहिबगंज के संयुक्त तत्वावधान में आज राजमहल के अनुमंडलीय अस्पताल में मेगा महिला स्वास्थ्य अभियान और दृष्टि सुरक्षा अभियान का सफल आयोजन किया गया। इस महत्वपूर्ण आयोजन का शुभारंभ उपायुक्त, साहिबगंज, हेमंत द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि विधायक, राजमहल विधानसभा, मो. ताजउद्दीन साथ ही पुलिस अधीक्षक अमित कुमार सिंह, सिविल सर्जन रामदेव पासवान, वूमेन डॉक्टर विंग (आईएमए झारखंड) की अध्यक्षा डॉ. भारती कश्यप सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। ज्ञात हो कि वूमेन

डॉक्टर विंग पिछले 12 वर्षों से झारखंड के दूरस्थ क्षेत्रों में स्वास्थ्य अभियान चला रही है। इसका उद्देश्य 'पर्टिकुलरली वल्नरेबल ट्राइबल ग्रुप्स' (पी वी टी जी) और अन्य वंचित समुदायों तक स्वास्थ्य सुविधाएं पहुँचाना है। इस अवसर पर, सिविल सर्जन, साहिबगंज ने बताया, आज का यह शिविर ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस कार्यक्रम में मरीजों के लिए मौके पर ही आयुष्मान कार्ड बनाने की सुविधा भी उपलब्ध थी, जिससे उन्हें भविष्य में भी स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ मिल सकेगा। वूमेन डॉक्टर विंग की अध्यक्ष, डॉ. भारती कश्यप ने कहा कि स्वास्थ्य सुविधा से वंचित स्थानीय लोग, जिनमें दृष्टि खो रहे छोटे बच्चे भी शामिल हैं, हमारी प्राथमिकता हैं। हम उन तक पहुँचने का प्रयास कर रहे हैं, क्योंकि वे हम तक नहीं पहुँच पाते। दृष्टि सुरक्षा अभियान के तहत अभी तक हम लोगों ने सरकारी स्कूलों में पढने वाले 20 लाख बच्चों की आँखों का जाँच किया है और जरुरत मंद बच्चों को चश्मा एवं ऑपरेशन कर उन्हें वापस स्कूल भेजा है। आज हम यहां पर मोतियाबिंद, कॉर्निया की खराबी या रेटिना की समस्या से पीड़ित मरीजों की पहचान कर रहे है और इन्हें रांची स्थित नाभा की मान्यता प्राप्त कश्यप मेमोरियल आई हॉस्पिटल में निःशुल्क ऑपरेशन की सुविधा दी जाएगी। इस मेगा महिला स्वास्थ्य अभियान के तहत, हम लोग जननांग सूजन से पीड़ित महिलाओं का दवा और डिजिटल वीडियो कॉल्पोस्कोप की सहायता क्रायो उपचार कर उनको चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करते हैं। झारखंड सरकार के साथ मिलकर 2021 में हमने झारखंड मॉडल बनाया था, जिसके तहत 5 लाख से अधिक महिलाओं की स्क्रीनिंग हो चुकी है जरूरत मंदों का दवा से एवं क्रायो उपचार से इलाज किया है। उपायुक्त, साहिबगंज, हेमंत सती ने बताया कि आज साहिबगंज के राजमहल अनुमंडलीय अस्पताल में मेगा महिला स्वास्थ्य अभियान और दृष्टि सुरक्षा अभियान जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम के सफल आयोजन पर मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है।

संक्षिप्त खबरें

पुलिस व मंथन संस्था के संयुक्त प्रयास से नाबालिक का बाल विवाह होने से रुकवाया

साहिबगंज : जिरवाबाड़ी थाना क्षेत्र अंतर्गत मंथन संस्था के जिला समन्वयक, चाइल्ड हेल्पलाइन एवं जिरवाबाड़ी थाना प्रभारी शशि सिंह की मदद से गुरुवार को एक बाल विवाह होने से रुकवाया गया। बोरियो प्रखंड अंतर्गत सोतीचौकी पांगड़ो, बड़ा मदनसाही गांव में एक नाबालिक लड़की का बाल विवाह होने से रुकवाया गया। इससे पूर्व इसकी सूचना प्रखंड विकास पदाधिकारी बोरियो नागेश्वर कुमार को दी गई। प्रखंड विकास पदाधिकारी के निदेर्शानुसार टीम गठित कर जिरवाबाड़ी पुलिस की मदद से उक्त नाबालिक के घर पहुंच कर कागजात की जांच पड़ताल किए गए, जिसमें बालिका नाबालिक 15 वर्ष की पाई गई। इसके बाद नाबालिक को उसके परिवार वालों के साथ साहिबगंज लाया गया और बाल कल्याण समिति के समक्ष प्रस्तुत कर अग्रिम कार्रवाई की गई।हालांकि घर वाले विवाह से इनकार कर रहे थे,लेकिन अंत मे परिवार वालो ने बाल कल्याण समिति के समक्ष बाल विवाह की बात को स्वीकार किया है।

अस्पताल में गर्भवती महिला की मौत, परिजनों ने अस्पताल पर लगाया लापरवाही का आरोप

साहिबगंज : शहर में बीते रात्रि नगर थाना क्षेत्र स्थित सूर्या सुपर स्पेशलिस्टी अस्पताल में एक प्रसुता की मौत के बाद हंगामा मच गया। मिली जानकारी के अनुसार मृतक की पहचान नगर थाना अंतर्गत बायसी स्थान निवासी रिंकी कुमारी उम्र 32 वर्ष के रूप में हुई है। रिंकी कुमारी को सोमवार को प्रसव के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया था उसने जुड़वा बच्चा को जन्म दिया था। जिसमें एक बेटा और एक बेटी हुआ था हालांकि इस संदर्भ में परिजनों के अनुसार आईवीएफ तकनीकी से गर्भवती हुई थी और इसके लिए लगभग 8 लाख रुपया वसूली थे। मृतक के भैसूर रंजन यादव ने आरोप लगाया कि अस्पताल में योग्य डॉक्टर नहीं है और झोलाछाप चिकित्सकों के भरोसे मरीजों का इलाज किया जा रहा है उनका कहना था कि दोपहर करीब 2:00 बजे ही रिंकी की मौत हो गई थी लेकिन परिजनों को उससे मिलने नहीं दिया और शाम तक अतिरिक्त पैसे की मांग की गई। उन्होंने बताया कि इलाज के लिए भैंस बेचनी पड़ी जमीन तक गिरवी रख दिया। वही अस्पताल में हंगामा को देखते हुए अस्पताल प्रबंधक डॉक्टर विजय कुमार ने इसकी सूचना नगर थाना प्रभारी अमित कुमार गुप्ता को दी। हंगामा की सूचना मिलते ही अनुमंडल पदाधिकारी अमर जॉन आइंद, एसडीपीओ किशोर तिर्की, नगर थाना प्रभारी अमित गुप्ता, जिला परिषद उपाध्यक्ष सुनील यादव सहित भारी संख्या मे पुलिस अपने बदल के साथ घटनास्थल पहुंचकर मामले की जानकारी लेते हुए कानूनी कार्रवाई की प्रक्रिया शुरू कर दिया गया।

न्यायालय के आदेश पर, मुफ्फसिल थाना की पुलिस ने आरोपी के घर में की कुर्की जप्ती

साहिबगंज : मुफ्फसिल थाना क्षेत्र अंतर्गत आरोपी के घर में सदर प्रखंड बीडियो-सह-सीओ बासुकीनाथ टुडू व थाना प्रभारी अनीश कुमार पांडे की मौजूदगी में मुफस्सिल थाना की पुलिस ने कुर्की जप्ती किया। जहां अभियुक्त के खिलाफ कांड संख्या-103/24 दिनांक 19 दिसंबर 2024, धारा 103(1)/ 109(1)/ 117(2)/ 118(1)/ 118(2)/ 191(2) /191(3)/190/ 352 के प्राथमिक अभियुक्त दिलीप रजक पिता रामबिलास रजक, सचिन रजक, आशीष रजक दोनो का पिता दिलीप रजक, विमला मसोमात पति स्व रामबिलास रजक, बबिता देवी पति दिलीप रजक एवं स्वाति कुमारी पिता दिलीप रजक सभी का ग्राम हाजीपुर दियरा, थाना- मुफ्फसिल, जिला- साहिबगंज के घर पर पुलिस ने कुर्की जप्ती की कार्रवाई माननीय न्यायालय के आदेशानुसार किया गया।

हरिणचरा पुल के नीचे खाई में गिरी स्कूटी, एक की मौत, दो घायल

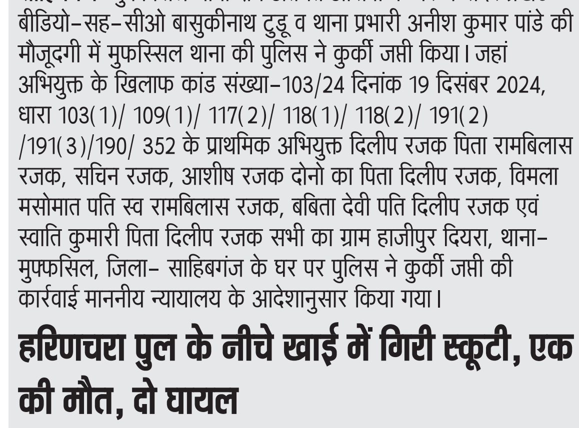

साहिबगंज : जिला के बोरियो-साहिबगंज मुख्य पथ के हरिणचरा पुल के नीचे बुधवार को संतुलन को देने से एक स्कूटी पुल के नीचे खाई में गिर गया। स्कूटी में सवार तीन युवक में से दो युवक खाई में गिर पड़े। तीसरा युवक पुल के ऊपर ही लटक गया। मिली जानकारी के अनुसार रसूलपुर दहला साहिबगंज के आरिफ मो. 26 वर्ष, एलसी रोड साहिबगंज के चांद मो. 24 वर्ष, एवं मो. सुल्तान 22 वर्ष स्कूटी पर सवार होकर बोरियो से साहिबगंज की ओर आ रहे थे। तीनों युवक कुछ सामान खरीद कर तीनपहाड़ से साहिबगंज घर लौट रहे थे। बोरियो के हरिणचरा पुल के पास रखे ईट एवं पिलर से स्कूटी टकरा गया। संतुलन खो देने से स्कूटी पर सवार तीन में से दो युवक पुल के नीचे खाई में गिरकर बुरी तरह घायल हो गया। पुल से नीचे खाई में गिरने से आरिफ मो. एवं चांद मो. बुरी तरह घायल हो गया। दोनों घायलों को इलाज के लिए बोरियो सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया। जहां मौके पर उपस्थित चिकित्सकों ने दोनों घायलों का प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर स्थिति को देखते हुए बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल साहिबगंज रेफर कर दिया गया। इलाज के क्रम में मो. आरिफ की मौत हो गई। बोरियो थाना प्रभारी रोहित कुमार ने बताया कि दुर्घटना की मामले की छानबीन की जा रही है और मृत युवक का पोस्टमार्टम करा कर परिजनों को शव को सौंप दिया गया है। दुर्घटना की प्राथमिकी दर्ज नहीं हुई है। वहीं परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल था।

बिहार में बेरोजगार ग्रेजुएट युवाओं को हर महीने 1000 मिलेंगे 2 साल तक मदद देगी सरकार

बिहार। में सरकार बेरोजगार ग्रेजुएट युवाओं को हर महीने 1000 रुपए देगी। ये पैसे 2 साल तक युवाओं के खाते में डाले जाएंगे। CM नीतीश कुमार ने अपने का अकाउंट से इसकी जानकारी दी है। बिहार के युवक और युवती जो ग्रेजुएट हैं और जिनकी उम्र 20-25 के बीच है और वो नौकरी या रोजगार के लिए कोशिश कर रहे हैं। ऐसे युवाओं को बिहार सरकार हर महीने 1000 रुपए 2 साल तक देगी नीतीश कुमार ने इसका ऐलान करते हुए पर लिखा- 'नवंबर 2005 में नई सरकार बनने के बाद से ही अधिक से अधिक युवाओं को सरकारी नौकरी और रोजगार देना। सशक्त और सक्षम बनाना हम लोगों की प्राथमिकता रही है। आपको पता है कि अगले 5 साल में एक करोड़ युवाओं को सरकारी नौकरी और रोजगार देने का लक्ष्य रखा गया है। आने वाले समय में सरकारी और निजी क्षेत्रों में बड़ी संख्या में नौकरी और रोजगार के नए अवसर दिए जाएंगे। स्वयं सहायता भत्ता योजना- पहले सिर्फ 12वीं पास के लिए थी, अब ग्रेजुएट के लिए भी होगी मुख्यमंत्री निश्चय स्वयं सहायता भत्ता योजना (MNSSBY) की शुरूआत 2 अक्टूबर 2016 को की थी। इस योजना का उद्देश्य उन इंटर पास बेरोजगार युवाओं को आर्थिक सहारा देना है, जिन्होंने पढ़ाई पूरी कर ली है, लेकिन अभी नौकरी या रोजगार नहीं पा सके हैं। योजना के तहत राज्य के 20 से 25 साल के युवक-युवतियों को, जो कम से कम इंटरमीडिएट (12वीं) पास हों और आगे पढ़ाई न कर रहे हों, सरकार 1,000 प्रति माह की आर्थिक सहायता प्रदान करती है। यह भत्ता अधिकतम 2 साल (24 महीने) तक मिलता है। सिर्फ आर्थिक सहायता ही नहीं, बल्कि लाभार्थियों को भाषा, कंप्यूटर और संवाद कौशल का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। अब सरकार ने घोषणा की है कि अब इस योजना का लाभ कला, विज्ञान और वाणिज्य ग्रेजुएट बेरोजगार युवाओं को भी मिलेगा। पहले सिर्फ इंटर पास को।मिलता था। अब तक 7 लाख 61 हजार के करीब बेरोजगार युवाओं ने योजना से फायदा लिया है। इससे पहले CM नीतीश कुमार ने क्रेडिट कार्ड योजना के तहत दिए जाने वाले लोन पर अब ब्याज नहीं लेने का फैसला किया था। साथ ही 2 लाख रुपए तक के शिक्षा ऋण को 60 मासिक किस्तों (5 साल) में वापस करने का नियम था, जिसे अब बढ़ाकर अधिकतम 84 मासिक

किस्तों (7 साल) में और 2 लाख से ऊपर ऋण राशि को 84 मासिक (7 साल) किस्तों से बढ़ाकर अधिकतम 120 मासिक (10 साल) किस्तों में वापस करने का प्रावधान किया था।' इस ऐलान के बाद फिलहाल बिहार के 4 लाख छात्रों को फायदा होगा। चुनाव से पहले नीतीश सरकार ने महिलाओं के लिए कई घोषणाएं की है। इनमें मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना भी शामिल है। जिसमें सरकार आर्थिक सहायता के रूप में सभी परिवारों की एक महिला को अपनी पसंद के रोजगार के लिए 10 हजार रुपए की राशि पहली किस्त के तौर पर देगी। महिलाओं द्वारा रोजगार शुरू करने के 6 महीने के बाद उसका आकलन करते हुए जरूरत के अनुसार 2 लाख रुपए तक की अतिरिक्त सहायता दी जा सकेगी। 29 अगस्त को अपने पोस्ट के जरिए नीतीश कुमार ने इसकी जानकारी दी थी। उद्योग के लिए बिहार सरकार मुफ्त में जमीन देगी नीतीश सरकार बिहार में उद्योग और निवेश को बढावा देने के लिए नए औद्योगिक पैकेज 2025 के तहत मुफ्त में जमीन देगी। 100 करोड़ से अधिक का निवेश करने वाली और 1000 से अधिक डायरेक्ट रोजगार देने वाली औद्योगिक इकाइयों को 10 एकड़ तक मुफ्त जमीन आवंटित की जाएगी। वहीं 1000 करोड़ से अधिक के निवेश करने वाली इकाइयों को 25 एकड़ तक भूमि दी जाएगी। 26 अगस्त को अपने पोस्ट के जरिए नीतीश कुमार ने इसकी जानकारी दी थी। बिहार में शिक्षक भर्ती में डोमिसाइल लागू नीतीश सरकार ने ऐलान किया है कि शिक्षक भर्ती में डोमिसाइल लागू किया जाएगा। ये व्यवस्था TRE-4 से ही लागू की जाएगी। नीतीश कुमार ने इसका ऐलान करते हुए पर लिखा था- 'नवम्बर 2005 में सरकार बनने के बाद से ही हम लोग शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए लगातार काम कर रहे हैं। 'शिक्षा व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण हेतु बड़ी संख्या में शिक्षकों की नियुक्ति की गई है। शिक्षकों की बहाली में बिहार के निवासियों (DOMICILE) को प्राथमिकता देने हेतु शिक्षा विभाग को संबंधित नियम में आवश्यक संशोधन करने का निर्देश दिया गया है।' 'यह TRE-4 से ही लागू किया जाएगा। वर्ष 2025 में TRE-4 एवं वर्ष 2026 में TRE-5 का आयोजन किया जाएगा। TRE-5 के आयोजन के पूर्व STET का आयोजन करने का भी निदेश दिया गया है। नीतीश सरकार ने बिहार में आशा और ममता कार्यकताओं का मानदेय बढ़ा दिया है। मुख्यमंत्री ने ऐलान करते हुए कहा था- आशा कार्यकताओं को अब 1 हजार रुपए की जगह 3 हजार रुपए प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी। साथ ही ममता कार्यकताओं को प्रति प्रसव 300 रुपए की जगह 600 रुपए की प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी। इससे उनका मनोबल और बढ़ेगा तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं और मजबूत होंगी। सरकार के इस फैसले से बिहार में 1 लाख आशा कार्यकताओं, 5 हजार आशा फैसिलिटेटर और 5 हजार से अधिक ममता कार्यकताओं को लाभ मिलेगा। जानकारी के मुताबिक, बिहार में करीब 1 लाख आशा कार्यकर्ता हैं। ऐसे में अगर एक आशा कार्यकर्ता के परिवार में 5 सदस्य होंगे, तो सरकार ने करीब 5 लाख परिवारों को सिर्फ टारगेट किया है बिहार में 125 यूनिट बिजली फ्री मिलेग बिहार के लोगों को 125 यूनिट बिजली मुफ्त में मिलेगी। साथ ही अगले तीन वर्षों में घरेलू उपभोक्ताओं को सौर ऊर्जा का भी लाभ मिलेगा। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गुरुवार को पर इसका ऐलान किया CM ने पर बताया- 'हम लोग शुरू से ही सस्ती दरों पर सभी को बिजली उपलब्ध करा रहे हैं। अब हमने तय कर दिया है कि 1 अगस्त, 2025 से,यानी जुलाई माह के बिल से ही राज्य के सभी घरेलू उपभोक्ताओं को 125 यूनिट तक बिजली का कोई पैसा नहीं देना पड़ेगा। 5 साल में 1 करोड़ नौकरियां और रोजगार देगी सरकार बिहार सरकार ने फैसला किया है कि आने वाले 5

पंचाने नदी में नहाते समय दो युवक डूबे करियाना गांव के पास हादसा

नालंदा। जिले के सिलाव थाना क्षेत्र के करियाना गांव के पास पंचाने नदी में नहाने के दौरान दो युवक डूब गए। यह घटना पंचाने नदी फाटक के समीप हुई। दोनों युवकों के शवों की तलाश जारी है। डूबे हुए युवकों की पहचान करियाना गांव निवासी 24 वर्षीय फैसल आलम (पिता असलम) और 20 वर्षीय अनस (पिता मोहम्मद अशरफ) के रूप में हुई है। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय लोग और प्रशासन सक्रिय हो गए। सिलाव थानाध्यक्ष मुरली मनोहर आजाद दलबल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और ग्रामीणों के सहयोग से तत्काल शवों की खोजबीन शुरू कर दी गई।थानाध्यक्ष ने बताया कि घटना की जानकारी वरीय पदाधिकारियों को दे दी गई है। साथ ही, राज्य आपदा प्रतिक्रिया कोष (SDRF) की टीम को भी बुलाया जा रहा है ताकि तलाशी अभियान में तेजी लाई जा सके।

बॉलीवुड सिंगर के साथ पप्पू यादव ने गाना गाया

पूर्णिया। एयरपोर्ट से हवाई सेवा शुरू होने की खुशी में संगीत संध्या कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें सांसद पप्पू यादव भी सिंगर के साथ गीत गुनगुनाने लगे। मंच से सिंगर 'एक प्यार का नगमा है' गाना गा रही थी। पप्पू यादव ऑडियंस में माइक लेकर बैठे थे। उन्होंने भी सिंगर के साथ गुनगुनाना शुरू कर दिया। सांसद पप्पू यादव की ओर से कला भवन परिसर में आयोजित कार्यक्रम में बॉलीवुड सिंगर अल्तमश फरीदी, आसिफ फरीदी, ऐश्वर्या पंडित और फेमस डांसर माही-मनीषा शामिल हुईं। सिंगर्स के एक से बढ़कर एक गानों ने ऐसा समां बांधा कि न सिर्फ दर्शक दीर्घा में बैठे लोग बल्कि खुद सांसद पप्पू यादव भी सुर से सुर मिलाने को मजबूर हो गए। माइक लेकर गुनगुनाते नजर आए। डांसर माही-मनीषा के परफॉर्मेंस ने लोगों का मन

मोह लिया। कार्यक्रम में दर्शकों का ऐसा सैलाब उमड़ा कि कुछ ही मिनटों में कुर्सियां भर गईं। बैठने की जगह कम पर गई। कुछ लोग खड़े होकर कार्यक्रम का लुत्फ उठाते रहे। कई लोग टेंट के ऊपर और कला भवन की छत पर चढ़ गए। संगीत संध्या कार्यक्रम रात 12:30 बजे तक चला। 4 घंटे से भी अधिक समय तक चले कार्यक्रम को लेकर कला भवन और आसपास के इलाकों में उत्सवी माहौल रहा। बॉलीवुड सिंगर अल्तमश फरीदी, आसिफ फरीदी, मशहूर गायिका ऐश्वर्या पंडित के एक से बढ़कर एक गाने और डांसर माही और मनीषा ने मंच पर आते ही समां बांध दिया। हर परफॉर्मेंस पर तालियों की गड़गड़ाहट होती रही। इसे देखकर बॉलीवुड सिंगर्स ने कहा पूर्णिया की जनता जैसी दीवानगी कहीं और नहीं देखी। यहां के सांसद जितने प्यारे हैं, उतनी ही प्यारी यहां की जनता है। हमें पूर्णिया से प्यार हो गया। कार्यक्रम के बीच सांसद पप्पू यादव ने लोगों से कहा, पूर्णिया एयरपोर्ट का सपना अब पूरा हो चुका है। ये सिर्फ उद्घाटन नहीं, हमारी जीत का जश्न है। जिस धरती पर हर कदम संघर्ष की कहानी रही, वहीं से उड़ान भरने लगी है। धीरे-धीरे सारे सपने पूरे होंगे। अब मेरा अगला संकल्प है पटना की तरह पूर्णिया में मेट्रो सेवा लाकर रहूंगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 15 सितंबर को पूर्णिया एयरपोर्ट का उद्घाटन किया था। कोलकाता के बाद ये पूर्वी भारत का और बिहार का सबसे बड़ा एयरपोर्ट है। इसका रनवे 2800 मीटर लंबा है, जिससे बड़े विमानों के टेकऑफ और लैंड करने में भी परेशानी नहीं होगी। पूर्णिया एयरपोर्ट में 4 हजार स्क्वायर मीटर में बना टर्मिनल भवन सभी हाईटेक सुविधाओं से लैस है। एयरपोर्ट और टर्मिनल का डिजाइन हाईटेक तरीके से बना है।

कांग्रेस की प्रदेश इलेक्शन कमिटी की पहली बैठक

पटना। बिहार विधानसभा चुनाव को देखते हुए कांग्रेस पार्टी ने अपनी चुनावी तैयारियां तेज कर दी है। आज कांग्रेस मुख्यालय सदाकत आश्रम में 1 बजे प्रदेश इलेक्शन कमिटी (PEC) की बैठक है। इस बैठक में विधानसभा चुनाव के लिए उम्मीदवारों के चयन को लेकर चर्चा होगी। इस बैठक में सभी 39 सदस्य शामिल होंगे। वहीं, पूर्णिया सांसद पप्पू यादव भी मौजूद रहेंगे। मंगलवार को पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने बिहार इलेक्शन कमेटी की घोषणा की थी। प्रदेश अध्यक्ष राजेश राम इलेक्शन कमेटी के सदस्य इस प्रदेश इलेक्शन कमेटी में बिहार कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राजेश राम, विधानमंडल दल के नेता शकील अहमद खान, विधान परिषद में कांग्रेस दल के नेता मदन मोहन झा सदस्य होंगे। वहीं, स्थायी आमंत्रित सदस्यों को भी जगह मिली है। इस समिति में स्थायी आमंत्रित सदस्यों के तौर पर बिहार के सभी MP, MLA, विधान पार्षद, कांग्रेस वर्किंग कमेटी (CWC) के मेंबर, AICC सेक्रेटरी, ठरवक और यूथ कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष को भी जगह मिली है। प्रदेश इलेक्शन कमिटी के अन्य मेंबर प्रदेश इलेक्शन कमिटी के अन्य सदस्यों में जितेंद्र गुप्ता, शकील ओ जमान अंसारी, संजीव प्रसाद टोनी, मोतीलाल शर्मा, कपिल देव प्रसाद यादव, अंशुल अविजीत, ब्रजेश कुमार पांडे, जमाल अहमद भल्लू, मंजू राम, आजमी बारी, नागेंद्र कुमार विकल, कैलाश पाल, राजेश राठौर, निर्मलेंदु वर्मा, कैसर अली खान, प्रभात कुमार सिंह, कमलदेव नारायण शुक्ला, कुमार आशीष का नाम शामिल है। इनके साथ ही जमोत्री ममता निषाद, शकील उर रहमान, संतोष कुमार श्रीवास्तव, विश्वनाथ सराफ, रमेश प्रसाद यादव, शशि रंजन, सुबोध मंडल, नदीम अख्तर अंसारी, नीतू निषाद, फौजिया राणा, राम शंकर कुमार पान, उदय मांझी, रेखा सोरेन, तारक चौधरी, विश्वनाथ बैठा, सुनील कुमार पटेल, साधना रजक और खुशबू कुमारी का नाम शामिल है।

कांग्रेस चला रही एक महीने का हस्ताक्षर अभियान इसके अलावा कांग्रेस ने बिहार में जनता से सीधे जुड़ने के लिए एक महीने का जनसंपर्क हस्ताक्षर अभियान शुरू किया है। इस अभियान का नाम वोट चोर, गद्दी छोड़ हस्ताक्षर अभियान है, जो 15 अक्टूबर तक चलेगी। इसके तहत पार्टी घर-घर जाकर 5 करोड़ हस्ताक्षर इकट्ठा करने का लक्ष्य लेकर चल रही है। इन हस्ताक्षरों को बाद में चुनाव आयोग और राष्ट्रपति को सौंपा जाएगा।

इस अभियान का मकसद बिहार में कथित वोट की हेराफेरी और सत्ताधारी गठबंधन की नीतियों के खिलाफ जनता की आवाज को बुलंद करना है।

फिल्म जॉली LLB 3 पर पटना हाईकोर्ट में सुनवाई

पटना। अभिनेता अक्षय कुमार और अरशद वारसी स्टारर जॉली LLB 3 रिलीज से पहले ही सुर्खियों और विवादों में आ गई है। फिल्म के एक कोर्टरूम सीन में अक्षय और अरशद की कॉमेडी लोगों को अपनी ओर खींच रही है। दूसरी तरफ इस सीन को लेकर पटना हाईकोर्ट में जनहित याचिका दाखिल की गई है। याचिकाकर्ता नीरज कुमार ने कोर्ट रूम के अंदर के इस सीन पर आपत्ति जताई है। जिस पर आज सुबह 11 बजे एक्टिंग चीफ जस्टिस के कोर्ट में सुनवाई होनी है।

प्रोफेशन को डिश रेस्पेक्ट और डिमीन करता है याचिकाकता याचिकाकर्ता और पटना हाईकोर्ट के एडवोकेट नीरज कुमार का कहना है कि, इस फिल्म में बहुत सारे आपत्तिजनक सीन और इमेज दिखाए गए हैं, जो हमारे प्रोफेशन को डिश रेस्पेक्ट करता है, डिमीन करता है।

क्योंकि हमारा प्रोफेशन बहुत सीरियस प्रोफेशन है। हम जो सोसाइटी के लिए वर्क करते हैं, वो काफी सीरियस नेचर ऑफ वर्क है। जुडीशियल के लिए काम करना और फंडामेंटल राइट्स को प्रोटेक्ट करना ,अप होल्डिंग राइट एंड जस्टिस, ये हमारा वर्क है। इसमें अक्षय कुमार, अरशद वारसी के साथ सौरभ शुक्ला, हुमा कुरैशी, अमृता राव, सीमा विश्वास और गजराज राव भी अहम किरदारों में नजर आएंगे।

तेजस्वी बोले- बीजेपी के लोग हिंदू-मुस्लिम कर रहे

बेगूसराय। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव की बिहार अधिकार यात्रा का आज तीसरा दिन है। वो बेगूसराय के मटिहानी विधानसभा क्षेत्र के रमजानपुर चौक होते हुए तेजस्वी साहेबपुर कमाल पहुंचे और सभा को संबोधित किया। तेजस्वी ने कहा कि, ये यात्रा बिहार को बेहतर बनाने की यात्रा है। ये यात्रा महिलाओं के मान-सम्मान की है। पढ़ाई, दवाई और सिंचाई वाली सरकार बिहार को चाहिए। इस पर सरकार को बदलना है। आप लोग तैयार रहिए। तेजस्वी ने कहा कि, बिना घूस दिए कोई काम नहीं हो रहा है। बेहतर बिहार बनाने के लिए आप लोग यहां आए हैं। आपका बहुत-बहुत आभार है। तेजस्वी ने साढ़े 17 महीने में 3.50 लाख रोजगार दिया है। सरकार बनने के बाद सबके हाथ में रोजगार होगा। इधर, केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने तेजस्वी पर सियासी वार किया है। उन्होंने कहा है कि, तेजस्वी यादव बेचारे हैं। इनको पता ही नहीं चला की राहुल गांधी ने इन्हें लूट लिया। ये बेचारे उनके पीछे-पीछे लगे रहे। ये अपना शक्ति प्रदर्शन कर रहे हैं। बताना चाह रहे हैं कि मैं अकेले भी कर सकता हूं। ये बात सही कि कांग्रेस का कोई अस्तिव है नहीं, ये आरजेडी के अस्तिव पर खड़े हैं। दोनों के झगड़े के बीच हमारा क्या योगदान है। गाना है ना तेरे अंगने में मेरा क्या काम है।' 'बिहार अधिकार यात्रा' के दूसरे दिन बुधवार को बाहुबली पूर्वी विधायक अनंत सिंह के गढ़ मोकामा पहुंचे थे। यहां उन्होंने अनंत सिंह का नाम लिए बिना हमला किया। उन्होंने कहा, 'यहां लोग बंदूक बांट रहे हैं, लेकिन हम कलम बांट रहे हैं। कलम की ताकत को समझिए। तेजस्वी आएगा तो आपके बच्चे का भविष्य बेहतर करेगा।' तेजस्वी ने मोकामा में घोड़े की सवारी भी की। तेजस्वी यादव ने कहा कि, शराबबंदी केवल कहने को है। हर जगह शराब चालू है। कौन तस्करी कर रहा है। पुलिस प्रशासन और सरकार मिलकर शराब बिकवा रही है।

संक्षिप्त डायरी

एलडीसी के लिए बनाए गए 8 परीक्षा केंद्र

नालंदा। बिहार लोक सेवा आयोग की निम्न वर्गीय लिपिक प्रतियोगिता परीक्षा को लेकर नालंदा जिला प्रशासन ने सख्त सुरक्षा इंतजाम किए हैं। जिला दंडाधिकारी नालंदा के आदेश के अनुसार, 20 सितंबर को होने वाली परीक्षा के दौरान भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 के तहत सभी परीक्षा केंद्रों के 500 गज के दायरे में निषेधाज्ञा लागू की गई है। बिहार पीएससी की यह वस्तुनिष्ठ प्रतियोगिता परीक्षा 20 सितंबर (शनिवार) को दो पालियों में आयोजित की जाएगी। प्रथम पाली सुबह 10 बजे से दोपहर 12.15 बजे तक और द्वितीय पाली दोपहर 2 बजे से शाम 4.15 बजे तक संपन्न होगी। बिहारशरीफ अनुमंडल मुख्यालय में कुल आठ परीक्षा केंद्र स्थापित किए गए हैं। परीक्षा केंद्रों में पीएलसाहू +2 उच्च विद्यालय सोहसराय, कन्या उच्च विद्यालय सोहसराय, आवासीय मॉडल मध्य विद्यालय भैंसासुर, राजकीय कन्या मध्य विद्यालय कमरूद्दीनगंज, बिहार टाउन उच्च विद्यालय, आदर्श +2 उच्च विद्यालय मणिराम अखाड़ा रोड, जवाहर कन्या +2 उच्च विद्यालय झींगनगर और एसएस बालिका +2 उच्च विद्यालय बिहारशरीफ शामिल है। केंद्र के 500 गज के दायरे में 5 या इससे ज्यादा लोग नहीं जुटेंगे अनुमंडल दंडाधिकारी काजले वैभव नितिन के आदेश के अनुसार, परीक्षा केंद्रों के 500 गज की परिधि में 5 या अधिक व्यक्तियों का एकत्र होना पूर्णतः निषिद्ध है। इसके अलावा शस्त्र लेकर चलना, अनाधिकृत आवाजाही, लाठी, भाला, गडासा जैसे घातक हथियार और लाइसेंसी आग्नेयास्त्र भी प्रतिबंधित रहेंगे। परीक्षार्थियों के लिए भी सख्त निर्देश जारी किए गए हैं। उन्हें लेखन सामग्री के अतिरिक्त किसी भी आपत्तिजनक सामग्री, विशेषकर मोबाइल फोन, परीक्षा केंद्र में ले जाने की मनाही है। व्यवसायिक प्रतिष्ठान भी रहेंगे बंद परीक्षा की निष्पक्षता के लिए सभी परीक्षा केंद्रों के 500 गज की परिधि में स्थित फोटो स्टेट शॉप, साइबर कैफे और कोचिंग संस्थान सुबह 9 बजे से परीक्षा समाप्ति तक बंद रहेंगे। इसके साथ ही लाउडस्पीकर और ध्वनि विस्तारक यंत्रों के प्रयोग पर भी पूर्ण रोक लगाई गई है। सुरक्षा व्यवस्था के विशेष इंतजाम परीक्षा को कदाचार मुक्त और शांतिपूर्ण संपन्न कराने के लिए सभी परीक्षा केंद्रों पर दंडाधिकारी, पुलिस पदाधिकारी और सशस्त्र पुलिस बल की स्टेटिक तैनाती की गई है। इसके अतिरिक्त गश्ती दलों का गठन भी किया गया है जो दंडाधिकारी और पुलिस पदाधिकारियों के साथ मिलकर निरंतर निगरानी करेंगे। यह आदेश परीक्षा कार्य में संलग्न पुलिस पदाधिकारी, दंडाधिकारी, शवयात्रा और ऐसे व्यक्ति जो लाठी के बिना नहीं चल सकते, पर लागू नहीं होगा। निषेधाज्ञा का यह आदेश 19 सितंबर से लेकर 20 सितंबर को परीक्षा समाप्ति तक प्रभावी रहेगा।

गिरियक में पचाने नदी में दो युवक डूबे

नालंदा। जिले के गिरियक थाना क्षेत्र अंतर्गत पचाने नदी डैम में नहाने के दौरान दो युवक डूब गए। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय प्रशासन और एसडीआरएफ की टीम मौके पर पहुंची और उनकी तलाश शुरू कर दी। बताया गया कि कुल आठ युवक नदी में नहाने गए थे। पानी में उतरते ही वे डूबने लगे। इस दौरान छह युवक किसी तरह अपनी जान बचाने में सफल रहे, लेकिन दो युवक नदी की गहराई में समा गए। डूबने वाले युवकों की पहचान फैसल आलम (19 वर्ष, पिता असलम आलम मलिक) और अनस आलम (23 वर्ष, पिता मोहम्मद अशरफ आलम) के रूप में हुई है। अनस आलम बड़े भाई थे, जबकि फैसल आलम तीसरे नंबर के भाई थे। घटना की जानकारी मिलते ही गिरियक थाना अध्यक्ष श्रीकांत कुमार, राजगीर थाना अध्यक्ष रमण कुमार, सिलाव थाना अध्यक्ष मुरली मनोहर आजाद, सिलाव अंचलाधिकारी आकाश दीप सिन्हा, गिरियक अंचलाधिकारी सन्नी कुमार सहित पुलिस बल मौके पर पहुंचा। नालंदा के जिलाधिकारी कुंदन कुमार और आरक्षी अधीक्षक भारत सोनी भी स्थिति पर लगातार नजर बनाए हुए हैं।पटना से एसडीआरएफ की टीम को बुलाया गया, जो लगभग शाम 05:00 बजे घटनास्थल पर पहुंची। टीम द्वारा नदी में शव की तलाश जारी रहा है।

नालंदा के 40 हजार श्रमिकों को योजना का लाभ

नालंदा। विश्वकर्मा पूजा पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पटना में आयोजित राज्य के श्रमिकों को एक बड़ी सौगात देते हुए 802 करोड़ 46 लाख की राशि का वितरण किया है। साथ ही प्रशिक्षित युवाओं के लिए मुख्यमंत्री प्रतिज्ञा योजना का वेब पोर्टल भी लॉन्च किया गया। बिहार भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड के अंतर्गत चलाई जा रही वस्त्र सहायता योजना के तहत राज्य के 16,04,929 निबंधित निर्माण श्रमिकों के बैंक खातों में प्रति श्रमिक 5000 की दर से राशि का सीधा हस्तांतरण किया गया। नालंदा के बिहार शरीफ स्तिथ हरदेव भवन सभागार में भी कार्यक्रम आयोजित की गई और पटना से सीधा प्रसारण से अधिकारी और कर्मी जुड़े रहे। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इस अवसर पर कहा कि विश्वकर्मा पूजा पर निर्माण श्रमिकों को यह सहायता राशि प्रदान करना सरकार की प्राथमिकता है। यह योजना श्रमिकों के कल्याण और उनके जीवन स्तर में सुधार के लिए शुरू की गई है। नालंदा जिले के आंकड़ों के अनुसार, जिले में कुल 40,274 निबंधित निर्माण श्रमिकों को इस योजना का लाभ मिला है। जिले में कुल 20 करोड़ 13 लाख 70 हजार रुपए का भुगतान किया गया। जिले के प्रमुख प्रखंडों में वितरण की स्थिति देखें तो चंडी प्रखंड में सर्वाधिक 3,402 श्रमिकों को लाभ मिला, जबकि इस्लामपुर प्रखंड में 3,171 और नूरसराय प्रखंड में 2,996 श्रमिकों को राशि प्राप्त हुई। बिहार शरीफ प्रखंड में 2,900, बेन प्रखंड में 2,518 और सिलाव प्रखंड में 2,607 श्रमिकों को योजना का लाभ मिला। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने राज्य के प्रशिक्षित युवाओं के लिए एक महत्वपूर्ण पहल की शुरूआत करते हुए मुख्यमंत्री प्रतिज्ञा योजना के वेब पोर्टल का शुभारंभ किया। इस योजना के तहत प्रशिक्षित युवाओं को टरटए, सार्वजनिक उपक्रमों और सरकारी संस्थानों में इंटर्नशिप के अवसर प्रदान किए जाएंगे। यह पोर्टल युवाओं को न केवल रोजगार के अवसर प्रदान करेगा बल्कि उन्हें आर्थिक सहायता भी मुहैया कराएगा। इससे राज्य के शिक्षित युवाओं को अपने कौशल को निखारने और व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने का मौका मिलेगा। इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में नालंदा जिले के जिला पदाधिकारी, उप विकास आयुक्त, श्रम अधीक्षक और श्रम विभाग के विभिन्न पदाधिकारी उपस्थित थे। विभिन्न क्षेत्रों से आए निर्माण श्रमिक भी बड़ी संख्या में इस समारोह में शामिल हुए।

आयुर्वेद से भगाएं ऑस्टियोआर्थराइटिस

इस हालत में किसी भी गतिविधि के बाद या आराम की लंबी अवधि के बाद जोड़ों का लचीलापन कम हो जाता है और वो सख्त हो जाते हैं और दर्ददायक बनते हैं। ऑस्टियोआर्थराइटिस के लिए एलोपैथिक उपचार के अलावा, कुछ आयुर्वेदिक इलाज भी उपलब्ध हैं। आयुर्वेद कहता है कि शरीर में तीन जीव-ऊर्जा या दोष होते हैं, जो हमारे शरीर के विभिन्न कार्यों को नियंत्रित करते हैं। वात, कफ और पित्त यह उनके नाम हैं। जब एक व्यक्ति किसी भी प्रकार की बीमारी से ग्रस्त होता है, तब यह इन दोषों में असंतुलन की वजह से होता है।

ऑस्टियोआर्थराइटिस वात दोष में एक असंतुलन के कारण होता है और इसलिए ऑस्टियोआर्थराइटिस के लिए आयुर्वेदिक इलाज में इस दोष को संतुलित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे व्यक्ति को दर्द से राहत मिलने में आसानी होती है।

ये हैं जड़ीबूटी

- **गुग्गुल** : ऊतकों को मजबूत बनाता है।
- **त्रिफला** : विषैले तत्वों को शरीर से साफ करना।
- **अश्वगंधा** : शरीर और मन को आराम और तंत्रिका तंत्र को उत्तेजना देना।
- **कॅस्टर (एरंडी)** : इस तेल को दर्द होने वाले क्षेत्र में लगाने के साथ ही इसका सेवन भी लिया जा सकता है, क्योंकि यह एक प्रभावी औषधि है।
- **बाला** : शरीर में रक्त परिसंचरण को बढ़ाने के लिए, दर्द को कम करने के लिए, नसों को ठीक करता है एवं शरीर में ऊतकों का विकास होता है।
- **शालाकी** : अपने सूजन विरोधी गुणों के लिए और शरीर की हड्डियों के करीब के ऊतकों की मरम्मत करने में सक्षम होने के गुण के लिए उपयोगी है।

आयुर्वेद में ऑस्टियोआर्थराइटिस को संधिवात के रूप में जाना जाता है, जो जोड़ों का विकार है। इसका मतलब है कि हमारे शरीर के निचले हिस्से की हड्डियों को सपोर्ट देने वाले सुरक्षात्मक कार्टिलेज और कोमल ऊतकों का किसी कारणवश टूटना शुरू होना है।

रोजाना खाएं अदरक मिलेंगे अनगिनत फायदे

अदरक एक भारतीय मसाला है जो हर घर में रोजाना इस्तेमाल होता है। अदरक में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेटस, आयरन, कैल्शियम जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं, जो हमारे शरीर को स्वस्थ रखने का काम करते हैं। अदरक खाने से कई फायदे होते हैं। आज हम उन्हीं फायदों के बारे में बताएंगे। चलिए जानते है एक टुकड़ा अदरक रोजाना खाने से शरीर को किस प्रकार फायदा मिलता है।

अदरक में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेटस, आयरन, कैल्शियम जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं, जो हमारे शरीर को स्वस्थ रखने का काम करते हैं। अदरक खाने से कई फायदे होते हैं।

जी मिचलाना

जी मिचलना और उल्टी की समस्या को रोकने के लिए अदरक औषधि की तरह का काम करता है। 1 चम्मच अदरक के जूस में 1 चम्मच नींबू का रस मिलाएं। इसको हर दो घंटे बाद पीएं। जल्द ही राहत मिलेगी।

गठिया दर्द में राहत

अदरक में एंटी-इन्फ्लॉमेट्री प्रॉपर्टीज होती है जो जोड़ों के दर्द को खत्म करने में सहायक है। अदरक को खाने से या इसका लेप लगाने से भी दर्द खत्म होता है। इसका लेप बनाने के लिए अदरक को अच्छे से पीस लें। उसमें हल्दी मिला लें। इस पेस्ट को दिन में दो बार लगाएं। कुछ ही दिनों में फर्क दिखाई देने लगेगा।

मासिक धर्म में फायदेमंद

कुछ महिलाओं को मासिक धर्म के दौरान बहुत दर्द होती है। ऐसे में अदरक की चाय काफी फायदा पहुंचाती है। इसलिए दिन में 2 बार अदरक की चाय पीएं। इससे दर्द कम होगा।

सर्दी- जुकाम और फ्लू

सर्दी-जुकाम और फ्लू जैसी समस्या से बचने के लिए नियमित रूप से अदरक का सेवन करें। यह शरीर को गर्म रखता है जिससे पसीना अधिक आता है और शरीर गर्म बना रहता है।

माइग्रेन का इलाज

जिन लोगों को माइग्रेन की समस्या है उनके लिए अदरक रामबाण है। जब भी माइग्रेन का अटैक आए, तब अदरक की चाय बना कर पीएं। इसको पीने से माइग्रेन में होने वाले दर्द और उल्टी से काफी हद तक राहत मिलेगी।

दिल को रखता है स्वस्थ

अदरक कोलेस्ट्रॉल लेवल को कम करने, ब्लड प्रेशर को ठीक रखने, खून को जमने से रोकने का काम करता है। इससे दिल संबंधित बीमारियां भी नहीं होती है। इसलिए अपनी डाइट में अदरक को शामिल करें।

पाचन तंत्र मजबूत

अदरक पेट फूलने, कब्ज, गैस, एसीडिटी जैसी समस्याओं को ठीक रखने में भी सहायक है। जिन लोगों को पेट से संबंधित समस्याएं रहती है वह रोजान सुबह खाली पेट अदरक का सेवन करें।

मोर्निंग सिकनेस

मोर्निंग सिकनेस की समस्या अधिकतर गर्भवती महिलाओं को होती है। रोजाना सुबह अदरक के 1 टुकड़े को चबा कर खाएं। कुछ दिनों तक अदरक खाने से मोर्निंग सिकनेस की समस्या दूर हो जाएगी।

ऊर्जा करें प्रदान

अदरक खाने से शरीर गर्म तो रहता ही है साथ ही उसे एनर्जी भी मिलती है। रोजाना सुबह अदरक वाली चाय पीने से शरीर में चुस्ती- फुर्ती बनी रहेगी।

अनुलोम विलोम से स्वच्छ व निरोग रहती हैं नाड़ियां

अनुलोम का अर्थ होता है सीधा और विलोम का अर्थ है उल्टा। यहां पर सीधा का अर्थ है नासिका या नाक का दाहिना छिद्र और उल्टा का अर्थ है- नाक का बायां छिद्र। अर्थात अनुलोम-विलोम प्राणायाम में नाक के दाएं छिद्र से सांस खींचते हैं, तो बायीं नाक के छिद्र से सांस बाहर निकालते है।

यदि नाक के बाएं छिद्र से सांस खींचते है, तो नाक के दाहिने छिद्र से सांस को बाहर निकालते हैं। अनुलोम-विलोम प्राणायाम को कुछ योगीगण 'नाड़ी शोधक प्राणायाम' भी कहते हैं। उनके अनुसार इसके नियमित अभ्यास से शरीर की समस्त नाड़ियों का शोधन होता है यानी वे स्वच्छ व निरोग बनी रहती हैं। इस प्राणायाम के अभ्यासी को वृद्धावस्था में भी गठिया, जोड़ों का दर्द व सूजन आदि शिकायतें नहीं होतीं।

प्राणायाम की विधि

- अपनी सुविधानुसार पद्मासन, सिद्धासन, स्वस्तिकासन अथवा सुखासन में बैठ जाएं। दाहिने हाथ के अंगूठे से नासिका के दाएं छिद्र को बंद कर लें और नासिका के बाएं छिद्र से 4 तक की गिनती में सांस को भरें और फिर बायीं नासिका को अंगूठे के बगल वाली दो अंगुलियों से बंद कर दें। तत्पश्चात दाहिनी नासिका से अंगूठे को हटा दें और दायीं नासिका से सांस को बाहर निकालें।
- अब दायीं नासिका से ही सांस को 4 की गिनती तक भरे और दायीं नाक को बंद करके बायीं नासिका खोलकर सांस को 8 की गिनती में बाहर निकालें।
- इस प्राणायाम को 5 से 15 मिनट तक कर सकते हैं।

सावधानियां

- कमजोर और एनीमिया से पीड़ित रोगी इस प्राणायाम के दौरान सांस भरने और सांस निकालने (रेचक) की गिनती को क्रमश: चार-चार ही रखें। अर्थात चार गिनती में सांस का भरना तो चार गिनती में ही सांस को बाहर निकालना है।
- स्वस्थ रोगी धीरे-धीरे यथाशक्ति पूरक-रेचक की संख्या बढ़ा सकते हैं।
- कुछ लोग समयाभाव के कारण सांस भरने और सांस निकालने का अनुपात 1-2 नहीं रखते। वे बहुत तेजी से और जल्दी-जल्दी सांस भरते और निकालते हैं। इससे वातावरण में व्याप्त धूल, धुआं, जीवाणु और वायरस, सांस नली में पहुंचकर अनेक प्रकार के संक्रमण को पैदा कर सकते हैं।
- अनुलोम-विलोम प्राणायाम करते समय यदि नासिका के सामने आटे जैसी महीन वस्तु रख दी जाए, तो पूरक व रेचक करते समय वह न अंदर जाए और न अपने स्थान से उड़े। अर्थात सांस की गति इतनी सहज होना चाहिए कि इस प्राणायाम को करते समय स्वयं को भी आवाज न सुनाई पड़े।

लाभ

- फेफड़े शक्तिशाली होते हैं।
- सर्दी, जुकाम व दमा की शिकायतों से काफी हद तक बचाव होता है।
- हृदय बलवान होता है। इससे हार्ट अटैक नहीं होता।

एम्ब्लायोपिया स्थाई रूप से धुंधली हो सकती है दृष्टि

जिन बच्चों की आंखों की अश्रु नलिकाएं बचपन से ही अवरुद्ध होती हैं। उनकी दृष्टि धुंधली हो सकती है। यदि जन्म के बाद शुरुआती छह से 10 साल के अंदर इसका इलाज न कराया जाए तो दृष्टि स्थाई रूप से धुंधली हो सकती है। इस बीमारी को एम्ब्लायोपिया या लेजी आई कहते हैं।

तीन साल से कम उम्र के ऐसे बच्चे जिनमें अश्रु नलिकाएं (नैसोलेक्रिमल डक्ट ऑब्सट्रक्शन-एनएलडीओ) अवरुद्ध होती हैं। उनमें एम्ब्लायोपिया बीमारी होने का खतरा बढ़ जाता है। इनमें से छह प्रतिशत मरीज ऐसे होते हैं, जिनमें जन्म से ही यह परेशानी होती है।

रखें सावधानी

पेंसिलवेनिया के लैनकास्टर के फैमेली आई ग्रुप के अध्ययनकर्ता नोएल एस. मैटा व डेविड आई. सिलबर्ट का कहना है कि अध्ययन में शामिल 375 बच्चों में से 22 प्रतिशत बच्चों में एम्ब्लायोपिया के खतरे के कारक थे। सामान्य आबादी में इस बीमारी की आठ गुना की दर से वृद्धि हो रही है।

जन्मजात बीमारी

मैटा का कहना है, हमने एनएलडीओ की जन्मजात परेशानी वाले सभी बच्चों की जांच की बात कही। हमने सावधानीपूर्वक उनमें एम्ब्लायोपिया के खतरे के कारकों की मौजूदगी का अध्ययन किया।

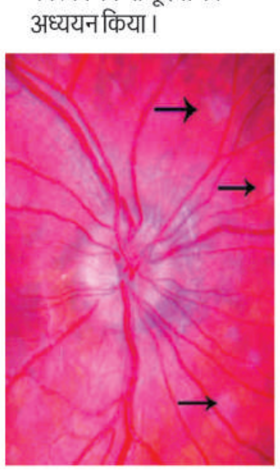

रात के समय कार्बोहाइड्रेड चीजें खाने से बचें

स्वास्थ्य सही है तो शरीर सही है। शरीर सही है तो मन सही है। इसलिए अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। हम आपको बताते हैं, हेल्थ के क्या लेना चाहिए और क्या नहीं।

शाम के पांच बजे के बाद कार्बोहाइड्रेट लेना चाहिए या नहीं? यदि वजन पर नियंत्रण रखना चाहते हैं तो पांच नहीं सात बजे के बाद ऐसी चीजें खाने से बचें, जिनमें कार्बोहाइड्रेड होता है। रात के समय हमेशा ऐसी चीजें ही खाएं, जो आसानी से पच जाएं।

- केला और सेब लौह तत्वों से भरपूर हैं। इसलिए वह कटने के बाद भूरे हो जाते हैं। यह गलतफहमी है। भूरा होने की वजह आयरन नहीं एंजाइम हैं। रंग गहराने के पीछे फलों में मौजूद फिनॉलिक कंपाउंड का ऑक्सीडेशन हैं, ये कंपाउंड हवा में तैरती ऑक्सीजन के संपर्क में आने से रंग बदलते हैं।

लो फैट का दूध लें

- दूध और उससे बने उत्पाद बचपन बीत जाने के बाद उपयोगी नहीं। दूध और दूध से बने उत्पादों में केवल प्रोटीन ही नहीं आवश्यक एमिनो एसिड, फैटी एसिड तथा कैल्शियम के साथ विटामिन ए, डी तथा मैग्नीशियम, फास्फोरस व पोटेशियम भी होता है। दूध अवश्य लें भले ही वह लो फैट हो।
- खाने में डाले गए नमक से ज्यादा नुकसानदेह है, ऊपर से नमक डालना? नमक तैयार खाने में पहले से डाला गया हो या ऊपर से मिलाया गया, उसमें मौजूद सोडियम एक समान होता है।
- आयरन का बेहतर स्रोत होने के कारण पालक ही रक्त की कमी से बचाता है। बहुत सी पत्तेदार सब्जियों में भरपूर आयरन होता है जैसे, ब्रॉक्ली में 40 मि.ग्रा., चौलाई-20 मि.ग्रा., सरसों में 16-3 मि.ग्रा., गाजर की पत्तियों में 18 मि.ग्रा. आयरन होता है, जबकि पालक में 1.1 मि.ग्रा. होता है।
- सूजी अनाज नहीं है? सूजी मैदा का दानेदार रूप है। इसमें पोषक तत्वों की मात्रा पॉलिश चावल और मैदे के समान होती है।

एक अंडा ही रोज खाएं

- शुगर फ्री उत्पाद हेल्दी होते हैं। आमतौर पर लोग अकसर शुगर फ्री उत्पादों को लो कैलोरी मान डायबिटीज और वजन नियंत्रण के लिए उपयोगी समझते हैं, परंतु ये शुगर फ्री उत्पाद अनेक अनदेखे शुगर स्रोतों से युक्त होते हैं। इनका अधिक सेवन स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालता है।
- अंडों में कोलेस्ट्रॉल अधिक होता है, इसलिए इसे नहीं खाना चाहिए। एक अंडे में 215 मि.ग्रा. कोलेस्ट्रॉल होता है, अकेले एक अंडे की जर्दी में 300 मि.ग्रा. कोलेस्ट्रॉल होता है, लेकिन अंडे में अन्य पौष्टिक तत्वों की बहुलता है। हाल ही में हुई रिसर्च से पता चला कि जो लोग एक अंडा प्रतिदिन खाते हैं, उन्हें अंडा न खाने वालों की तुलना में हृदय रोग का खतरा कम होता है।
- उपवास रखने से शरीर के टॉक्सिन बाहर निकलते हैं। उपवास संतुलित भोजन और अधिक कैलोरीज पर नियंत्रण रखता है, लेकिन इस दौरान रिच डाइट, फल, जूस, अधिक मेवे आदि लेने से इसका उलटा भी हो सकता है।

चीनी ज्यादा न खाएं

- चीनी खाने से डायबिटीज होती है। यह सोच कर चीनी न खाने पर डायबिटीज नहीं होगी, गलत है। स्टार्च, फैट, प्रोटीन और चीनी जैसे अधिक कैलोरी वाले खाद्य शरीर में इंसुलिन की मात्रा बढ़ाकर डायबिटीज को जन्म देते हैं। जब शरीर कार्बोहाइड्रेट को पचाने में अक्षम हो, तभी डायबिटीज होती है।
- शहद जैसे प्राकृतिक पदार्थ शुगर का विकल्प हैं। बहुत से लोग सोचते हैं कि ये शुगर फ्री तथा कम कैलोरी वाले प्राकृतिक स्रोत हैं तथा इन्हें रिफाइन भी नहीं किया जाता, इसलिए ये नुकसानदेह नहीं। लेकिन 1 चम्मच शहद में 65 कैलोरी तथा एक चम्मच शुगर में 46 कैलोरी होती है। ग्लाइस्मिक इंडेक्स भी शहद में 87 तथा शुगर में 59 होता है।
- बिना नमक का खाना तेजी से वजन कम करता है। याद रखें कि पहले तो सोडियम के न रहने पर पानी कम होता है न कि फैट। नर्वस सिस्टम सही ढंग से काम करे, इसके लिए भी सोडियम जरूरी होता है। इसका लेवल डिप्रेशन, स्वभाव परिवर्तन और कमजोरी का कारण होता है।
- शुगर मूड को प्रभावित करती है। इंसानी दिमाग ऊर्जा के लिए पूरे तौर पर ब्लड शुगर (ग्लूकोज) पर निर्भर रहता है। इसकी कमी से हाइपोग्लीमिया का दौरा तथा कमजोरी, डिप्रेशन, दिमागी गड़बड़ियां हो सकती हैं।

केला-दूध फायदेमंद

- रात में मेटाबॉलिज्म सिस्टम धीमा होता है। इसलिए भारी नाश्ता करना चाहिए। सुबह का नाश्ता दिन भर की ऊर्जा के लिए बेहद जरूरी है, लेकिन इसके लिए भारी की जरूरत नहीं। आप केले या दूध से भी काम चला सकती हैं।
- मछली खाने के बाद दूध नहीं पीना चाहिए। ऐसा हमेशा नहीं होता। लेकिन कुछ स्थितियों में इसे मान लेना बेहतर होता है।
- बिना शुगर के फलों के जूस प्राकृतिक व शुगर फ्री होते हैं। ये लो कैलोरी जरूर होते हैं, लेकिन इसमें फ्रूकटोस होने के कारण शुगर फ्री नहीं होते।

एशिया कप में आज भारतीय टीम का मुकाबला ओमान से होगा

अबू धाबी (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम शुक्रवार को यहां एशिया कप क्रिकेट टूर्नामेंट के अपने अंतिम लीग मैच में ओमान के खिलाफ बड़ी जीत के इरादे से उतरेगी। सूर्यकुमार यादव की कप्तानी में भारतीय टीम ने अभी तक अपने दोनो मैच आसानी से जीतकर ग्रुप ए से सबसे पहले सुपर फोर में जगह बनायी है। इससे अब ये मैच भारतीय टीम के लिए औपचारिकता भर रह गया है। ऐसे में वह मुख्य तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को इस मैच में आराम दे सकती है। बुमराह की जगह अर्शदीप सिंह हो अवसर मिल सकता है। भारतीय टीम ने पहले मैच में यूएई वहीं दूसरे मैच में पाकिस्तान को एकतरफा मुकाबले में हराया था। जिससे उसका मनोबल बढ़ा हुआ है। भारतीय टीम ओमान के खिलाफ पहले मुकाबले से सुपर फोर के लिए अभ्यास करना चाहेगी। उसका लक्ष्य पूरे 20 ओवर बल्लेबाजी करना रहेगा।

अब तक के मुकाबलों में भारतीय टीम के युवा सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा ने अपेक्षा के अनुरूप तेज़ शुरुआत की है पर उनके जोड़ीदार शुभमन गिल को क्रीज पर कुछ समय बिताने की जरूरत है। कप्तान सूर्यकुमार ने पाकिस्तान के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन किया था पर वह चाहेंगे कि युवा बल्लेबाज तिलक वर्मा को बल्लेबाजी करने का कुछ और समय मिले।

भारतीय टीम को अब अगले एक सप्ताह में फाइनल सहित चार मैच खेलने हैं। इसे देखते हुए टीम प्रबंधन हार्दिक पंड्या, संजू सैमसन, शिवम दुबे और अक्षर पटेल को भी बल्लेबाजी का कुछ अवसर देना चाहेगा। अगर ओमान पहले बल्लेबाजी करता है, तो मैच जल्दी समाप्त होना तय है क्योंकि ओमान टीम भारतीय गेंदबाजों का शायद ही सामना कर पाये। पाकिस्तान और यूएई के खिलाफ भी ओमान की बल्लेबाजी अच्छी नहीं रही। दो मैचों में एक भी बल्लेबाज़ 30 से अधिक रन नहीं बना पाया। हम्माद मिर्जा ने पाकिस्तान के खिलाफ 27 रन जबकि आर्यन बिष्ट ने यूएई के खिलाफ 32 गेंदों पर 24 रन बनाए जो इन मैच में उसकी तरफ से सबसे अधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज रहे।

भारतीय टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव इस मैच में बुमराह को आराम दे सकते हैं। वह भी अगर वह ऐसा करना चाहें। पाकिस्तान के खिलाफ मैच में चार ओवर गेंदबाजी करने और अच्छी तरह से आराम करने के बाद बुमराह ब्रेक लेना चाहेंगे ये तय नहीं है पर अगर वह लेते हैं तो इससे टीम को अर्शदीप को आजमाने का अवसर मिल जाएगा।

वहींटीम प्रबंधन इस मैच में स्पिनर वरुण चक्रवर्ती और कुलदीप यादव में से किसी एक को आराम देकर हर्षित राणा को भी अवसर दे सकता है। इस मैच में बल्लेबाजी क्रम में भी थोड़ा बदलाव हो सकता है। भारतीय टीम ने इस मैदान पर अब तक नहीं खेला है जिससे उसे लय हासिल करने समय लग सकता है। वहीं ओमान की टीम इस मैच में भारतीय बल्लेबाजों और गेंदबाजों के साथ खेलकर अनुभवी हासिल करना चाहेगी।

दोनो ही टीमें इस प्रकार हैं

भारत = सूर्यकुमार यादव (कप्तान), शुभमन गिल, अभिषेक शर्मा, तिलक वर्मा, हार्दिक पंड्या, शिवम दुबे, जितेश शर्मा, अक्षर पटेल, जसप्रित बुमरा, वरुण चक्रवर्ती, अर्शदीप सिंह, कुलदीप यादव, संजू सैमसन, हर्षित राणा, रिंकू सिंह।

ओमान = जतिंदर सिंह (कप्तान), हम्माद मिर्जा, विनायक शुक्ला, सुफियान यूसुफ, आशीष ओडेडेरा, आमिर कलीम, मोहम्मद नदीम, सुफियान महमूद, आर्यन बिष्ट, करण सोनावले, जिक्रिया इस्लाम, हसनैन अली शाह, फैसल शाह, मोहम्मद इमरान, नदीम खान, शकील अहमद, समय श्रीवास्तव।

विश्व चैंपियनशिप फाइनल में नीरज असफल रहे, सचिन यादव ने चौथा स्थान हासिल किया

टोक्यो (एजेंसी)। भारत के स्टार भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा विश्व चैंपियनशिप फाइनल में असफल रहे और आठवें स्थान पर रहे। वहीं भारत के ही सचिन यादव ने अपने करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए चौथा स्थान हासिल किया। इस टूर्नामेंट में कोई भी अन्य भारतीय एथलीट एथलीट 90 मीटर से आगे नहीं बढ़ पाया, चोपड़ा पांचवें और अंतिम दौर के बाद 84.03 मीटर के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ बाहर हो गए।

वहीं सचिन ने 86.27 मीटर का सर्वश्रेष्ठ थ्रो पहले ही प्रयास में किया। ये उनका व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था और उन्होंने नीरज ही नहीं बल्कि जर्मनी के जूलियन वेबर (86.11 मीटर) और ओलंपिक चैंपियन अरशद नदीम (82.75 मीटर) को भी पीछे छोड़ दिया। स्पर्धा का स्वर्ण पदक त्रिनिदाद और टोबैगो के केशोर्न वालकॉट ने (88.16 मीटर) भाल फेंककर जीता। वहीं ग्रेनेडा के एंडरसन पीटर्स ने 87.38 मीटर और कर्टिस थॉम्पसन ने 86.67 मीटर के साथ ही दूसरा और तीसरा स्थान हासिल किया। वहीं पाकिस्तान के अरशद नदीम भी चौथे दौर में ही बाहर हो गये। चोपड़ा ने 83.65 मीटर से शुरुआत की जिससे वह पांचवें स्थान पर रहे और 84.03 मीटर के साथ इसमें सुधार किया लेकिन तीसरे थ्रो में फाउल कर बैठे।

पूर्व पाकिस्तानी क्रिकेटर ने पीसीबी अध्यक्ष मोहसिन नकवी पर लगाया भ्रष्टाचार का आरोप

स्पोर्ट्स डेस्क । पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड को एक नया झटका लगा है क्योंकि अध्यक्ष मोहसिन नकवी पर पाकिस्तान की एशिया कप जर्सी को लेकर भ्रष्टाचार का आरोप लगा है। पूर्व पाकिस्तानी क्रिकेटर अतीक-उज-जमान ने पीसीबी अध्यक्ष पर मेन इन ग्रीन के लिए घटिया जर्सी को मंजूरी देने का आरोप लगाया है।

अतीक-उज-जमान ने ट्विटर पर लिखा कि PCB द्वारा ड्राई-फिट किट देने का वादा करने के बावजूद पाकिस्तानी खिलाड़ी अपने मैचों के दौरान खूब पसीना बहा रहे थे। उन्होंने पाकिस्तानी खिलाड़ियों की तुलना दूसरी टीमों से भी की, जिनकी शर्ट पर उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों के कारण पसीने की एक बूंद भी नहीं थी। पूर्व क्रिकेटर ने अपने ट्विटर अकाउंट पर लिखा, 'पाकिस्तानी खिलाड़ी घटिया किट पहनकर पसीना बहा रहे हैं जबकि दूसरे खिलाड़ी सही ड्राई-फिट किट पहनते हैं। ऐसा तब होता है जब टेंडर पेशेवरों को नहीं, बल्कि दोस्तों को मिलते हैं। पसीने से ज्यादा भ्रष्टाचार टपक रहा है।'

गौर हो कि अतीक-उज-जमान 2000 में पाकिस्तान के लिए एक टेस्ट मैच और तीन एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच खेल चुके हैं।उनका घरेलू करियर काफी लंबा रहा जिसमें उन्होंने पाकिस्तान कस्टम्स, हबीब बैंक लिमिटेड, कराची ब्लूज़, कराची व्हाइट्स, खान रिसर्च लैबोरेटरीज जैसी टीमों का प्रतिनिधित्व किया। अतीक-उज-जमान ने कोचिंग की ओर रुख किया और फरवरी 2023 तक उन्हें जर्मनी की राष्ट्रीय क्रिकेट टीम का मुख्य कोच नियुक्त किया गया। उन्होंने लंकाशायर के सेंट एन्स क्रिकेट क्लब के लिए इंग्लैंड में क्लब क्रिकेट भी खेला।

ध्रुव जुरेल ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ ठोका नाबाद शतक, 10 चौके और 4 छक्कों की मदद से बनाए 130 से ज्यादा रन

लखनऊ (एजेंसी)। विकेटकीपर बल्लेबाज ध्रुव जुरेल के नाबाद 113 रनों की बदौलत भारत 'ए' ने गुरुवार को यहां ऑस्ट्रेलिया 'ए' के खिलाफ अनौपचारिक टेस्ट के तीसरे दिन चार विकेट पर 403 रन बनाए। जुरेल के 132 गेंदों में खेली गई पारी (10 चौके और 4 छक्के) के अलावा भारत को कल के बल्लेबाज एन जगदीशन (64), बी साई सुदर्शन (73) के अर्धशतकों और देवदत्त पडिक्कल के नाबाद 86 रनों से भी मजबूती मिली। हालांकि श्रेयस अय्यर (8) अपनी छाप नहीं छोड़ पाए।

भारत 'ए' 129 रनों से पिछड़ रहा था और मुकाबला ड्रॉ की ओर बढ़ रहा था। इससे पहले सैम कोंस्टास (109) के तेज शतक और जोश फिलिप के नाबाद 123 रनों की बदौलत ऑस्ट्रेलिया ए टीम ने 6 विकेट पर 532 रन बनाकर पारी घोषित कर दी थी। दोनों टीमें 23-26 सितंबर तक इकाना स्टेडियम में दूसरे चार दिवसीय अनौपचारिक टेस्ट के लिए आमने-सामने होंगी, जिसके बाद वे तीन मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला के लिए कानपुर रवाना होंगी।

दिन का खेल भारत ए के एक विकेट पर 116 रन से आगे खेलने के साथ शुरू हुआ। जगदीशन और सुदर्शन की कल की जोड़ी ने साझेदारी बनाने की कोशिश की, लेकिन वे ऐसा नहीं कर सके। जगदीशन, जिन्हें पिछले महीने इंग्लैंड में टेस्ट टीम में शामिल किया गया था, 113 गेंदों पर 64 रन (7 चौके, 1 छक्का) बनाकर जेवियर बार्टलेट की गेंद पर फिलिप के हाथों कैच आउट हुए।

मेजबान टीम ने सुदर्शन और पडिक्कल की जोड़ी के साथ 76 रनों की साझेदारी करके पारी को सुचारू रूप से आगे बढ़ाया। ज्यादातर रन तमिलनाडु के बाएं हाथ के बल्लेबाज सुदर्शन ने बनाए जिन्होंने इंग्लैंड में अपना पहला टेस्ट मैच खेला था, लेकिन पारी के 59वें ओवर में कॉनॉली ने उन्हें पगबाधा आउट कर दिया। भारत ए के कप्तान अय्यर के पास हाल ही में राष्ट्रीय टीम से मिली अनदेखी और अगले महीने की शुरुआत में वेस्टइंडीज के खिलाफ दो टेस्ट मैचों की सीरीज के लिए भारतीय टीम का चयन होने के बाद अपनी बात साबित करने का एक अच्छा मौका था। अय्यर 62वें ओवर में सिर्फ 8 रन बनाकर वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया के स्पिनर कोरी रोचिचियोली का शिकार बन गए, जिससे भारत ए को थोड़ी परेशानी हुई। यहीं पर जुरेल और पडिक्कल ने मिलकर पारी को संभाला और स्टंप तक दोनों एक-दूसरे से अलग नहीं हुए। जुरेल और पडिक्कल की पांचवें विकेट के लिए नाबाद 181 रनों की साझेदारी ने भारत ए को खेल खत्म होने तक बढ़त दिला दी, क्योंकि उन्होंने लगभग 4 ओवर प्रति ओवर की अच्छी रन रेट से रन बनाए। पडिक्कल 178 गेंदों पर 8 चौकों की मदद से नाबाद 86 रन बनाकर बल्लेबाजी कर रहे थे।

सिंधू ने अपना विजय अभियान जारी रखा, चाइना मास्टर्स के क्वार्टर फाइनल में पहुंची

शेनझेन (चीन) ।भारत की स्टार खिलाड़ी पीवी सिंधू ने अपना विजय अभियान जारी रखते हुए गुरुवार को यहां थाईलैंड की छठी वरीयता प्राप्त पोर्नपावी चोचुवोंग पर सीधे गेम में जीत के साथ चाइना मास्टर्स बैडमिंटन टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। दो बार की ओलंपिक पदक विजेता सिंधू ने अपनी थाई प्रतिद्वंद्वी को 21-15, 21-15 से हराने में सिर्फ 41 मिनट का समय लिया। इस जीत के साथ विश्व बैंकिंग में 14वें स्थान पर काबिज सिंधू ने थाई शटलर के खिलाफ अपना रिकॉर्ड 6-5 का कर लिया है। क्वार्टर फाइनल में सिंधू का मुकाबला कोरिया की शीर्ष वरीयता प्राप्त एन से यंग और डेनमार्क की मिया ब्लिचफेल्ट के बीच होने वाले मैच की विजेता से होगा। हाल में हांगकांग ओपन के पहले दौर में बाहर होने वाली सिंधू सीधे गेम में मिली जीत से खुश थीं और उन्होंने कहा कि वह अपनी थाई प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ शुरू से ही सतर्क थीं। मैच के बाद भारतीय खिलाड़ी ने कहा, ''मैं जीत से खुश हूं और मेरे लिए शुरुआत से ही सतर्क रहना और अपना शत-प्रतिशत देना बेहद ज़रूरी था। वह (चोचुवोंग) एक शीर्ष खिलाड़ी है। मैं इंडोनेशिया ओपन में उसके खिलाफ खेली थी और उस बार भी मुकाबला कड़ा था। पहला गेम जीतने के बाद मैं दूसरे गेम में ज़्यादा सतर्क थी। मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया और मुझे खुशी है कि मैं जीत हासिल करने में सफल रही।' उन्होंने कहा, 'मुझे अब कल के लिए तैयारी करनी होगी। यह अच्छी बात है कि अगर आप पहला गेम जीत जाते हैं तो दूसरे गेम में उसे खत्म कर देते हैं। सीधे गेम में जीत हमेशा आपको आत्मविश्वास देती है। लेकिन आपको लंबे मैचों के लिए भी तैयार रहना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि आप तेज़ी से आगे बढ़ें।'

विश्व चैंपियनशिप में शीर्ष पर पहुंचना है लक्ष्य : मीराबाई चानू

अहमदाबाद ।ओलंपिक रजद पदक विजेता भारोत्तोलक मीराबाई चानू का लक्ष्य अब अक्टूबर में होने वाली विश्व चैंपियनशिप में शीर्ष पर पहुंचना है। चानू ने इसके लिए अभ्यास भी शुरु कर दिया है। पिछले कुछ समय से फिट नहीं होने के कारण वह खेल से दूर थीं। हाल के वर्षों में चोटों से जूझती रहीं चानू पिछली बार पेरिस ओलंपिक में खेली थीं। चानू ने 2028 लॉस एंजिल्स खेलों के लिए नए ओलंपिक भार वर्ग लागू होने के बाद 49 किग्रा से 48 किग्रा में जाने का फैसला किया है। वह इस 48 किग्रा भार वर्ग में अपना विश्व चैंपियनशिप खिताब और दो राष्ट्रमंडल खेलों के पदक जीत चुकी हैं लेकिन 2018 के बाद से इसमें प्रतिस्पर्धा नहीं की है। चानू अब अपनी तकनीक बेहतर बनाने में लगी हैं। जिससे वह स्नैच में 90 किलोग्राम का वजन उठा सकें। चानू ने कहा कि वह राष्ट्रमंडल चैंपियनशिप में पूरी ताकत नहीं लगाएंगी जो अगले साल ग्लासगो में होने वाले राष्ट्रमंडल खेलों के लिए क्वालीफाइंग टूर्नामेंटों में से एक है। उन्होंने कहा, 'मैं विश्व चैंपियनशिप की तैयारी कर रही हूं। मेरा सबसे बड़ा लक्ष्य एशियाई खेल हैं जहां मेरा लक्ष्य विश्व रिकॉर्ड तोड़ना और पदक जीतना है क्योंकि मैंने अभी तक वहां कोई रिकॉर्ड नहीं बनाया है। चानू के अलावा अन्य प्रतियोगियों से भी देश को बेहतर प्रदर्शन की उम्मीदें हैं।

एशिया कप का बॉयकॉट करने से क्यों पीछे हटा पाकिस्तान? पीसीबी प्रमुख ने तोड़ी चुप्पी

नई दिल्ली (एजेंसी)। खेलों में भी सियासत पीछे नहीं रही है। हाल ही में पाकिस्तान ने एशिया कप 2025 में यूएई के खिलाफ मैच से पहले खूब ड्रॉमा किया। भारत के खिलाफ 14 सितंबर को हुए हैंडशेक विवाद के बाद पाकिस्तान लगातार आईसीसी से मैच रेफरी एंडी पाइक्रॉफ्ट को हटाने की अपील कर रहा था। यूएई के खिलाफ मैच के दिन भी पाकिस्तान इस बात पर अड़ा रहा, हालांकि उनकी कोई मांग पूरी नहीं हुई और पाकिस्तान की टीम एक घंटे की देरी के साथ मैच खेलने मैदान पर पहुंची। इस दौरान पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के चीफ मोहसिन नकवी ने नजम सेठी और रमीज राजा के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस की।

नकवी ने कहा कि बहिष्कार एक बहुत बड़ा फैसला था और स्थिति पर नजर रखी जा रही है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और अन्य प्रमुख सरकारी अधिकारियों के समर्थन के बाद, यह निर्णय लिया गया है कि टीम टूर्नामेंट में बनी रहेगी और यूएई के खिलाफ खेलेगी।

मोहसिन नकवी ने कहा, जैसा कि आप सभी जानते हैं, 14 सितंबर से एक संकट चल रहा है। हमें मैच रेफरी (एंडी पाइक्रॉफ्ट) की भूमिका पर आपत्ति थी। कुछ देर पहले ही मैच रेफरी ने टीम के कोच, कप्तान और मैनेजर से बात की थी। उन्होंने कहा कि यह घटना (हाथ न मिलाने की घटना) नहीं होनी चाहिए थी। हमने पहले भी आईसीसी से मैच के दौरान हुए आचार संहिता उल्लंघन की जांच कराने का अनुरोध किया था। हमारा मानना है कि राजनीति और खेल साथ-साथ नहीं चल सकते। यह खेल है, और इसे खेल ही रहने देना चाहिए। क्रिकेट को इन सबसे अलग होना चाहिए।

रमीज राजा ने कहा, यह एक गंभीर स्थिति बन गई थी जहां भावनाएं बहुत ज्यादा भड़क रही थीं। मुझे खुशी है कि हमने कोई भावनात्मक फैसला नहीं लिया जिससे क्रिकेट को नुकसान पहुंच सकता था। यह बहुत जरूरी था। अब इस क्रिकेट टीम को जो भी कहना चाहिए, उन्हें इस कहानी को आगे बढ़ाना चाहिए। आपने जो भी भावनाएं महसूस की हैं, उन्हें मैदान पर दिखाएं, दिखाएं कि हम कितने महान क्रिकेट राष्ट्र हैं। मेरी सबसे बड़ी आपत्ति मैच के बाद के प्रेजेंटेशन (भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव द्वारा) में कही गई बातों पर थी। वह संपादकीय ही सबसे महत्वपूर्ण बिंदु था।

अगर (मैच रेफरी की ओर से) माफी माँगी गई है और आई है, तो यह अच्छा है क्योंकि क्रिकेट को क्रिकेट ही रहना चाहिए, वरना इसका कोई अंत नहीं है। जैसा कि मोहसिन साहब ने कहा, जांच होगी ताकि ऐसी घटनाएं दोबारा न हों। दिलचस्प बात यह है कि एंडी पाइक्रॉफ्ट भारत के पसंदीदा मैच रेफरी हैं। जब भी मैं कोई मैच करता हूं (कमेंटेटर के रूप में और टॉस के समय), मुझे लगता है कि पाइक्रॉफ्ट (भारत के मैचों में) एक स्थायी सदस्य हैं। वह 90 बार भारत के मैचों में मैच रेफरी रह चुके हैं। मुझे यह एकतरफा लगता है।

नीदरलैंड के अनीश गिरि नें जीता फीडे ग्रांड स्विस कैंडिडैट में बनाई जगह

समरकंद, उज्बेकिस्तान ।फीडे ग्रांड स्विस 2025 में पुरुष वर्ग का खिताब नीदरलैंड के अनीश गिरि नें अपने नाम कर लिया है साथ ही उन्होने फीडे कैंडिडैट में अपना स्थान पक्का कर लिया है ।अनीश नें रोमांचक मुक़ाबले में यूएसए के नीमन हंस मोके को पराजित करते हुए 8 अंक बनाकर खिताब अपने नाम कर लिया वहीं 7.5 अंको पर बेहतर टाईब्रेक के आधार पर जर्मनी के माथियस ब्लूबम नें दूसरा स्थान हासिल किया और फीडे कैंडिडैट में जगह बना ली वहीं 7.5 अंक बनाने वाले फ्रांस के अलीरेजा तीसरे स्थान पर रहे पर कैंडिडैट में जगह बनाने से चूक गए ।भारतीय खिलाड़ियों में तीसरे बोर्ड पर भारत के अर्जुन एरीगैसी और जर्मनी के विंसनेट केमर के बीच, पांचवें बोर्ड पर निहाल सरीन और फ्रांस के मकसीम लागरेव के बीच और सातवें बोर्ड पर विदित गुजराती और यूएसए के अभिमन्यु मिश्रा के बीच बाजी बेनतीजा रही और भारतीय खिलाड़ियों में से कोई भी इस बार कैंडिडैट में ग्रांड स्विस के जरिये जगह नहीं बना पाया ।अंक तालिका में 7 अंक बनाकर अर्जुन छ्ठे निहाल नौवे और विदित 15वें स्थान पर रहे ।प्रज्ञानन्दा अपना आखिरी मैच ड्रॉ खेलकर 35वें स्थान पर रहे ।वहीं बेहद खराब लय से जूझने के बाद विश्व चैम्पियन डी गुकेश अपने आखिरी मैच में जीतकर 6 अंक बनाकर 41वें स्थान पर रहे । पुरुष वर्ग में फीडे कैंडिडैट में अब तक यूएसए के फबियानों करूआना , अनीश और ब्लूबम पहुँच गए है जबकि तीन स्थान अगले माह भारत में होने जा रहे विश्व कप से , एक स्थान फीडे की सर्वश्रेष्ठ रेटिंग से और एक फीडे सर्किट 2025 के विजेता से भरा जाएगा ।

गांगुली दूसरी बार बनेंगे कैब अध्यक्ष

कोलकाता ।भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली का एक बार फिर बंगाल क्रिकेट बोर्ड (कैब) का अध्यक्ष बनना तय है ।गांगुली कैब अध्यक्ष पद के लिए नामांकन दाखिल करने वाले एकमात्र उम्मीदवार है ।ऐसे में उनका निर्विरोध चुना जाना तय है ।वह दूसरी बार ये पद संभालेंगे ।इससे पहले वह 2015 से 2019 तक इस पद पर रहे हैं ।कैब के चुनाव 22 सितंबर को होने वाले हैं ।इसमें गांगुली के साथ-साथ उनके पैनल के दूसरे सदस्यों का भी निर्विरोध चुना जाना तय है ।उनके पैनल में उपाध्यक्ष के लिए नितीश रंजन दत्ता, सेक्रेटरी के लिए बबलू कोले, जॉइंट सेक्रेटरी के लिए मदन घोष और कोषाध्यक्ष के लिए संजय दास का नाम शामिल है । गांगुली अपने बड़े भाई स्नेहाशीष गांगुली की कैब अध्यक्ष पद संभालेंगे ।जो 2019 से इस पद पर थे ।गांगुली 2019 से 2022 तक बीसीसीआई के अध्यक्ष भी रहे हैं ।बीसीसीआई के आगामी चुनावों के लिए भी अध्यक्ष के तौर पर भी उनका नाम आ रहा है ।इसका कारण है कि बंगाल बोर्ड ने उन्हें अपना प्रतिनिधि बनाया है ।

फीफा विश्व रैंकिंग: स्पेन 2014 के बाद पहली बार शीर्ष स्थान पर

नयी दिल्ली (एजेंसी)। जून और जुलाई में पहले फीफा क्लब विश्व कप की शानदार सफलता के बाद एक अंतराल के बाद, पुरुषों की अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल प्रतियोगिता इस महीने की शुरुआत में अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका में फीफा विश्व कप 26 क्वालीफायर की एक श्रृंखला के रूप में वैश्विक मंच पर धमाकेदार वापसी कर रही है।

फीफा/कोका-कोला पुरुष विश्व रैंकिंग के अंतिम बार अपडेट होने के बाद से, दुनिया भर में 200 से ज्यादा प्रासंगिक राष्ट्रीय टीमों के मैच खेले जा चुके हैं, जिनका रैंकिंग पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। सबसे बड़ा बदलाव शीर्ष पर हुआ है, जहां यूईएफए यूरो 2024 विजेता स्पेन एक स्थान ऊपर चढ़कर पहले स्थान पर पहुंच गया है, यह एक ऐसा स्थान है जो उन्होंने जून 2014 के बाद से पुरुष वर्ग में हासिल नहीं किया था।

इस प्रक्रिया में उन्होंने लंबे समय से शीर्ष पर चल रहे अर्जेंटीना (तीसरे, 2 स्थान नीचे) को हटा दिया है, जो अप्रैल 2023 से इस स्थान पर था। मौजूदा विश्व चैंपियन को पछाड़ने में ऊंचे स्थान पर चल रहे स्पेन के साथ, वह टीम भी शामिल है जिसे अर्जेंटीना ने फीफा विश्व कप 2022 के फाइनल में हराया था, फ्रांस (दूसरे, 1 स्थान ऊपर)। थोड़ा और नीचे, पुर्तगाल, क्रोएशिया और इटली सभी एक स्थान ऊपर चढ़कर क्रमशः 5वें, 9वें और 10वें स्थान पर पहुंच गए हैं, जिससे ब्राजील (छठे, 1 स्थान नीचे) और जर्मनी (12वें, 3 स्थान नीचे) को हुए नुकसान का पूरा फायदा उठाया जा रहा है।

जर्मनी के लिए, फीफा विश्व कप 26 के अपने पहले क्वालीफायर में स्लोवाकिया से मिली हार से नुकसान हुआ है और अक्टूबर 2024 के बाद पहली बार वे शीर्ष 10 से बाहर हैं। मोरक्को (11वें स्थान पर, 1 अंक ऊपर) अब शीर्ष 10 से बाहर पीछा करने वाली टीमों में सबसे आगे है, जिसने जुलाई में रैंकिंग के पिछले संस्करण के बाद से अपने नौ में से आठ मैचों में जीत हासिल की है। कुल मिलाकर सबसे ज्यादा चढ़कर स्लोवाकिया (42वें स्थान पर, 10 स्थान ऊपर) रहा है, जिसने अपने विश्व कप क्वालीफाइंग अभियान की शुरुआत लगातार दो जीतों से की थी - जिसमें जर्मनी को हराने वाली जीत भी शामिल है - और उसे शीर्ष 50 में वापस स्थान मिला है।

सभी टीमें कम से कम पांच स्थान ऊपर पहुंची हैं, गाम्बिया (115वें स्थान पर, 8 स्थान ऊपर), मेडागास्कर (108वें स्थान पर, 7 स्थान ऊपर), पैराग्वे (37वें स्थान पर, 6 स्थान ऊपर), युगांडा (82वें स्थान पर, 6 स्थान ऊपर), लीबिया (112वें स्थान पर, 5 स्थान ऊपर), सूरीनाम (131वें स्थान पर, 5 स्थान ऊपर) और फरो आइलैंड्स (136वें स्थान पर, 5 स्थान ऊपर) अन्य प्रमुख टीमें हैं।

फ़ीफ़ा विश्व कप 26 के सह-मेजबान कनाडा (26वें स्थान पर, 2 स्थान ऊपर) और यूईएफए के उभरते हुए कोसोवो (91वें स्थान पर, 4 स्थान ऊपर) ने भी दो और उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। रैंकिंग के पिछले संस्करणों में सर्वकालिक उच्चतम स्तर हासिल करने के बाद, दोनों टीमें लगातार नई उपलब्धियां हासिल कर रही हैं।

एशिया कप के ड्रामे के बीच एसीसी ने अधूरी वार्षिक आम बैठक फिर से बुलाई

दुबई : पिछले कुछ दिनों में दुबई और लाहौर में मैदान के अंदर और बाहर खेला गया एशिया कप का नाटकीय घटनाक्रम अब इस महीने के अंत में एशियाई क्रिकेट परिषद (ष्टष्ट) की बैठक के दौरान बोडरूम में स्थानांतरित हो सकता है। एसीसी की वार्षिक आम बैठक , जिसे कुछ महीने पहले ढाका में अचानक स्थगित कर दिया गया था, अब 30 सितंबर को दुबई में पुनर्निर्धारित की गईहै। एशिया कप फाइनल के दो दिन बाद होने वाली इस बैठक में, जिसकी अध्यक्षता पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के प्रमुख मोहसिन नकवी करेंगे, जोरदार हंगामा होने की उम्मीद है - मौजूदा चैंपियनशिप से जुड़े मुद्दों और ढाका में 24 जुलाई को होने वाली बैठक में अधूरे रह गए कार्यों को लेकर। एजीएम का एजेंडा अभी जारी नहीं किया गया है, लेकिन एशिया कप ने पहले ही कई मुद्दे सामने ला दिए हैं - हाथ मिलाने का विवाद, मैच रेफ़री विवाद और पाकिस्तान के हटने की धमकी - जिन पर विचार-विमर्श किया जाना है। एक और विवाद भी छिड़ सकता है, जो इस बात पर निर्भर करेगा कि एशिया कप कौन जीतता है, ट्रॉफ़ी कौन प्रदान करता है, और समारोह का आयोजन कैसे होता है। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड से कौन भाग लेगा, यह भी एक कारक हो सकता है। महिला वनडे विश्व कप उसी दिन गुवाहाटी में शुरू हो रहा है, और बीसीसीआई सदस्यों के उद्घाटन समारोह में व्यस्त रहने की उम्मीद है। बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करेगा कि एसीसी बैठक में बोर्ड का प्रतिनिधित्व करने के लिए किसे नामित किया जाता है। यह निर्णय दो दिन पहले, 28 सितंबर को मुंबई में बीसीसीआई की अपनी वार्षिक आम बैठक (एजीएम) में लिया जाएगा। वर्तमान में, राजीव शुक्ला और आशीष शेलार एसीसी में बीसीसीआई के नामित प्रतिनिधि हैं। दोनों ने ढाका बैठक में वर्चुअल माध्यम से भाग लिया था। 30 सितंबर के एजेंडे में सबसे महत्वपूर्ण विषय एसीसी उपाध्यक्ष का चुनाव होगा।

गुजरात में मकान तोड़ने गए बुलडोजर को लोगों ने गुस्से में पलट दिया

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात के गांधीनगर में भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच सरकारी जमीन पर बने 700 से अधिक मकान और अन्य ढांचों को तोड़ा गया है। इसी बीच पेटापुर में बुलडोजर ऐक्शन के विरोध में बड़ी संख्या में लोग एकत्रित हो गए। भारी सुरक्षा के बावजूद लोग जोरदार विरोध प्रदर्शन करने लगे। माहौल तनावपूर्ण हो गया। इस बीच अफरा-तफरी में एक बुलडोजर भी पलट गया। गनीमत है कि इसकी जद में कोई नहीं आया। पुलिसकर्मियों ने किसी तरह लोगों को काबू किया। गुजरात के गांधीनगर में एक बार फिर बड़ा बुलडोजर ऐक्शन लिया गया है। गांधीनगर जिला प्रशासन के मुताबिक साबरमती नदी के किनारे जीईबी, पेथापुर, चारेदी इलाकों में सरकारी जमीनों पर अतिमक्रमण किया गया था। कई बार इन्हें जगह खाली करने की चेतावनी दी गई थी। गुरुवार सुबह भारी सुरक्षा इंतजाम के बीच तोड़फोड़ दस्तों ने बुलडोजर अभियान की शुरुआत की। एक साथ दर्जनों बुलडोजर मकानों को तोड़ते नजर आए।

सुप्रीम कोर्ट का आदेश... सीबीआई वकील के शैक्षिक प्रमाणपत्रों की प्रामाणिकता की जांच करेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार के मगध यूनिवर्सिटी द्वारा एक वकील के शैक्षिक प्रमाणपत्रों के जाली होने का दावा करने के बाद, सुप्रीम कोर्ट ने केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) को उसकी डिग्री की प्रामाणिकता की जांच करने का आदेश दिया है। यह निर्णय तब लिया गया, जब बिहार की मगध यूनिवर्सिटी ने वकील के शैक्षिक प्रमाणपत्रों को जाली घोषित किया। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस मनोज मिश्रा और जस्टिस उज्ज्वल भुईयां की पीठ बार काउंसिल ऑफ इंडिया की एक अनुशासनात्मक समिति के फैसले के खिलाफ दायर एक अपील पर सुनवाई कर रही थी। मगध यूनिवर्सिटी ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि वकील की मार्कशीट और बीकॉम की डिग्री जाली है और मगध यूनिवर्सिटी ने जारी नहीं किया था। वहीं वकील ने मगध यूनिवर्सिटी से 1991 में बीकॉम की डिग्री प्राप्त करने का दावा कर उसकी फोटोकॉपी प्रस्तुत की। वकील ने कहा कि यूनिवर्सिटी के रिकॉर्ड नष्ट हो गए हैं, जिससे डिग्री की प्रामाणिकता की पुष्टि करना संभव नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने मामले की गंभीरता को देखकर सीबीआई को जांच करने का निर्देश दिया। सीबीआई को पता लगाना है कि वकील द्वारा प्रस्तुत की गई बीकॉम की डिग्री असली है या नकली। सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई को अधिकारी नियुक्त करने और 3 नवंबर तक अपनी रिपोर्ट पेश करने का आदेश दिया है।

खराब मौसम के कारण राहुल गांधी का गुजरात दौरा टला, अब शुक्रवार को जूनागढ़ आएंगे

अहमदाबाद (एजेंसी)। लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी का आज का जूनागढ़ दौरा दिल्ली में खराब मौसम के कारण स्थगित कर दिया गया है। दिल्ली हवाई अड्डे से उनका विमान उड़ान नहीं भर सका, जिसके चलते यह यात्रा कल तक के लिए टाल दी गई है। गुजरात प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अमित चावड़ा ने मीडिया से बातचीत में बताया कि राहुल गांधी कल सुबह करीब 11 बजे जूनागढ़ पहुंचेंगे और प्रशिक्षण वर्ग की पूर्णाहुति बैठक में शामिल होंगे। इस बैठक में वे जिला अध्यक्षों को आगामी आम चुनाव और पार्टी संगठन को मजबूत करने के मुद्दों पर मार्गदर्शन देंगे। अमित चावड़ा ने मीडिया से बातचीत में भाजपा और चुनाव आयोग पर गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी ने वोट चोरी के मुद्दे पर विशेष अभियान शुरू किया है। आज सुबह दिल्ली में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में राहुल गांधी ने भाजपा और चुनाव आयोग की कथित वोट चोरी में संलिप्तता का खुलासा किया। यह अभियान अब गुजरात में भी शुरू हो चुका है। इसका उद्देश्य राज्य के प्रत्येक मतदाता को वोट चोरी के मुद्दे पर जागरूक करना और भाजपा द्वारा की गई कथित वोट चोरी की हकीकत लोगों तक पहुंचाना है। अमित चावड़ा ने दावा किया कि नवसारी लोकसभा क्षेत्र की चोर्यासी विधानसभा सीट में भाजपा नेता सी.आर. पाटिल ने 20,000 से 25,000 फर्जी मतदाताओं को खड़ा कर चुनाव लड़ा था। उन्होंने कहा कि इतनी बड़ी संख्या में हुई वोट चोरी का असर पूरे नवसारी लोकसभा क्षेत्र में कितना हुआ होगा, इसकी कांग्रेस जांच कर रही है। आने वाले दिनों में अन्य विधानसभा और लोकसभा क्षेत्रों में भी वोट चोरी के सबूत इकट्ठे किए जा रहे हैं, जिसमें कांग्रेस को उल्लेखनीय सफलता मिल रही है।

नशामुक्त भारत के लिए गुजरात के 10 शहरों में देश के स्थानों पर नमो युवा रन का आयोजन

अहमदाबाद(एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस को लेकर भाजपा द्वारा सेवा पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है। नशामुक्त भारत के लिए इस नमो युवा रन का आयोजन किया जा रहा है। गुजरात के 10 समेत देश के 100 बड़े शहरों में नमो युवा रन का आयोजन किया गया है7 21 सितंबर को अहमदाबाद के वस्त्रापुर में सुबह 6 बजे नमो युवा रन का आयोजन किया गया है। 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस को लेकर सेवा पखवाड़े की शुरुआत की गई है। इस सेवा पखवाड़े में रक्तदान शिविर, स्वच्छता अभियान, एक पेड़ मां के नाम अभियान, स्वास्थ्य शिविर सहित कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। कल नरेंद्र मोदी स्टेडियम में दुनिया के सबसे बड़े रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया था। राज्य स्तरीय मंत्री जगदीश विश्वकर्मा ने बताया कि 21 सितंबर को देशभर में 100 से अधिक स्थानों पर नमो युवा रन का आयोजन किया जा रहा है। युवाओं को नशामुक्त बनाने और नशामुक्त भारत के संकल्प को साकार करने के लिए इस रन का आयोजन किया गया है। गुजरात में भी अहमदाबाद, सूरत, वडोदरा, राजकोट, भावनगर समेत 10 बड़े नगरों में 21 सितंबर को नमो युवा रन का आयोजन होगा। अहमदाबाद में यह मैराथन सुबह 6 बजे वस्त्रापुर तालाब से शुरू होगी, जिसे मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। इस मैराथन में 10,000 से अधिक युवा शामिल होंगे।

महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य की देखभाल बेहद जरूरी: नड्डा

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जेपी नड्डा ने कहा कि ÷स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान÷ का उद्देश्य महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य की सुरक्षा, जागरूकता और बेहतर देखभाल सुनिश्चित करना है। अभियान की अवधि 17 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025 तक रखी गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75वें जन्मदिवस के अवसर पर बुधवार को ÷स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान÷का शुभारंभ हुआ। रोहतक स्थित महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय परिसर में केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जे पी नड्डा ने प्रदर्शनी का रिबन काटकर शुभारंभ किया।

नारी का स्वास्थ्य - परिवार की शक्ति रही आकर्षण का केंद्र बिंदू प्रदर्शनी में ÷स्वस्थ माँ, सुरक्षित शिशु - मजबूत समाज की नींव÷ जैसे प्रेरक संदेशों के साथ स्वास्थ्य सेवाओं और योजनाओं की झलक दिखाई गई। अवलोकन के बीच मुख्य अतिथि जे पी नड्डा और मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने टीबी मुक्त भारत अभियान की जानकारी ली। निक्षय पोषण योजना पर आधारित पैनलों के माध्यम से लोगों को यह जानकारी दी गई कि टीबी रोगियों को उपचार के दौरान प्रतिमाह 1000 रुपए पोषण सहायता सीधे बैंक खाते में दी जाती है। इसके लिए टीबी आरोग्य साथी ऐप और उमंग ऐप के जरिए सत्यापन और ट्रैकिंग की सुविधा भी समझाई गई। स्टॉलों पर कैंसर स्क्रीनिंग, एनीमिया नियंत्रण, थैलेसीमिया जांच, उच्च रक्तचाप, मधुमेह और क्षय रोग से संबंधित जानकारी विस्तार से दी गई। साथ ही आप से रोशन है पूरे परिवार की खुशी-टीबी उपचार लें और अपनों का साथ निभाएं जैसे संदेशों ने लोगों को आकर्षित किया। प्रदर्शनी के दौरान पोषण अभियान को लेकर पोस्टर लगाए गए, जिनमें बच्चों, किशोरियों और गर्भवती महिलाओं के लिए संतुलित आहार, स्तनपान के महत्व और एनीमिया नियंत्रण जैसे बिंदुओं को शामिल किया गया। प्रदर्शनी में विभिन्न विभागों और योजनाओं से जुड़े जानकारीपूर्ण पोस्टर, बैनर और स्टॉल लगाए गए, जिनमें महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण और जागरूकता से संबंधित विस्तृत जानकारी दी गई। अभियान के अंतर्गत स्वास्थ्य सेवाओं के साथ-साथ सामाजिक भागीदारी पर भी जोर दिया गया। 17 सितंबर को विशाल स्वास्थ्य जांच एवं रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें युवाओं और स्वयंसेवी संस्थाओं ने उत्साहपूर्वक रक्तदान किया। अभियान के तहत 17 से 2 अक्टूबर तक विशेष टीकाकरण शिविर आयोजित किए जाएंगे। इन शिविरों में 0 से 16 वर्ष तक के बच्चों और गर्भवती महिलाओं को शामिल किया जाएगा। सभी का टीकाकरण सुनिश्चित करने के लिए रूटीन इम्यूनाइजेशन पर भी जोर दिया जाएगा।

सीएम धामी ने राज्य आपदा परिचालन केंद्र में भारी बारिश से प्रभावित क्षेत्रों की समीक्षा की

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने आईटी पार्क स्थित राज्य आपदा परिचालन केंद्र में प्रदेशभर में भारी बारिश से प्रभावित क्षेत्रों की समीक्षा की। उन्होंने चमोली जिले के नंदानगर क्षेत्र में बादल फटने से प्रभावित गांवों में बचाव और राहत कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए। चमोली के नंदानगर में बादल फटने से दो गांव, धुर्मा और कुंतरी, बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। घटना में 14 लोग लापता हैं और करीब 35 मकान क्षतिग्रस्त हो गए हैं। मुख्यमंत्री ने गंभीर रूप से घायल लोगों को बेहतर इलाज के लिए एम्स ऋषिकेश एयरलिफ्ट करने का निर्देश दिया है।

मुख्यमंत्री धामी ने अधिकारियों को प्रभावित इलाकों में सड़क, पानी, बिजली और नेटवर्क कनेक्टिविटी बहाल करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने प्रभावित लोगों के लिए आश्रय, भोजन, और स्वच्छ पेयजल की उचित व्यवस्था सुनिश्चित करने को भी कहा है। इसके अलावा, प्रभावित गांवों में पर्याप्त डॉक्टर और दवाओं की उपलब्धता बनाए रखने के निर्देश भी दिए गए हैं ताकि आपात स्थिति में तुरंत मदद मिल सके। मुख्यमंत्री ने प्रत्येक प्रभावित परिवार तक जल्द से जल्द राहत सामग्री पहुंचाने का आदेश दिया है। इसके साथ ही, देहरादून के आपदा प्रभावित गांवों जैसे फुलेत, सरखेत छमरौली, सिल्ला और क्यारा में हेलीकॉप्टर के जरिए 150 किट राशन पहुंचाया गया है। जिलाधिकारी सविन बंसल लगातार इन क्षेत्रों का दौरा कर राहत और बचाव कार्यों की निगरानी कर रहे हैं।

सान्या मल्होत्रा बनीं फ्लाइट की नई ब्रांड एंबेसडर, लॉन्च हुई नई फैशन रेंज

एजेंसी

पटना : त्यौहार और शादी के सीजन में स्टाइल, आत्मविश्वास और अपनी पहचान के साथ आगे बढ़ना अब और भी आसान हो गया है, क्योंकि फ्लाइट ने बॉलीवुड एक्ट्रेस सान्या मल्होत्रा को अपना नया ब्रांड एंबेसडर बनाया है। रिलैक्सो फुटवेयर्स लिमिटेड के मशहूर फैमिली फैशन ब्रांड, फ्लाइट ने इसके साथ ही नई डिजाइन्स की शानदार रेंज भी पेश की है, ताकि हर उम्र और हर अवसर पर लोग अपने अंदाज में आत्मविश्वास के साथ कदम बढ़ा सकें। सान्या अपनी बेबाक अदाओं और युवा जोश के लिए जानी जाती हैं, जो फ्लाइट की सोच सर उठा, कदम बढ़ा से पूरी तरह मेल खाती है। उनके ब्रांड एंबेसडर बनने के साथ ही फ्लाइट ने 360-डिग्री मार्केटिंग कैंपेन भी शुरू किया है, जो आत्मविश्वास और अपनी पहचान के साथ आगे बढ़ने का संदेश देता है। रिलैक्सो फुटवियर्स लिमिटेड के होल टाइम डायरेक्टर गौरव कुमार दुआ ने कहा, हम सान्या मल्होत्रा का फ्लाइट परिवार में बतौर नई ब्रांड एंबेसडर स्वागत करते हैं। इस वर्ष हम एक ऐसा शानदार और युवाओं के अनुकूल कलेक्शन ला रहे हैं, जो सान्या की पर्सनैलिटी से पूरी तरह मेल खाता है। वे आज के भारत, यानि युवा, महत्वाकांक्षी और डिजाइन के प्रति सजग लोगों की भावना का प्रतिनिधित्व करती हैं। फ्लाइट एक ऐसा फैशन फुटवियर ब्रांड है, जो जीवन के हर पड़ाव में लोगों का साथ देता है, साथ ही उन्हें स्टाइल और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने की ताकत देता है। सान्या के ब्रांड एंबेसडर बनने और हमारे नए कैंपेन के साथ, हम 'सर उठा कदम बढ़ा' को एक नए स्तर पर ले जा रहे हैं, ताकि भारत का हर कदम आत्मविश्वास और स्टाइल से भरा हो। सान्या मल्होत्रा ने कहा, मुझे फ्लाइट परिवार का हिस्सा बनकर सचमुच बहुत खुशी हो रही है, क्योंकि यह ब्रांड उन सब बातों को दशार्ता है, जिन पर मैं भरोसा करती हूँ, जैसे कि आत्मविश्वास, आराम और अपनी राह खुद चुनना। ब्रांड की टैगलाइन 'सर उठा कदम बढ़ा' आगे बढ़ने के जज्बे और अपनी पहचान के साथ जीने की बात करता है। यही वो बातें हैं, जो मुंबई आने से लेकर एक्ट्रेस बनने तक की मेरी अपनी यात्रा से गहराई से जुड़ती हैं।

पाक-सऊदी के समझौते पर भारत ने कहा- हम अपने हितों की रक्षा के लिए तैयार

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान और सऊदी अरब ने एक रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए जिसके तहत दोनों में से किसी एक देश पर आक्रमण को दोनों देशों पर हमला माना जाएगा। अब इस समझौते पर भारत ने साफ शब्दों में कहा है कि वह अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए तैयार है और इस समझौते से पड़ने वाले प्रभाव को लेकर अध्ययन किया जाएगा।

विदेश मंत्रालय के आधिकारिक प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने एक मीडिया प्रश्न के जवाब में कहा कि भारत सरकार ने इस समझौते से संबंधित खबरों को देखा है और इसे गंभीरता से ले रही है। जायसवाल ने बताया कि सरकार को इस बात की जानकारी थी कि दोनों देशों के बीच इस तरह का समझौता विचाराधीन था, जो अब औपचारिक रूप ले चुका है। उन्होंने कहा, हम इस घटनाक्रम से भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ-साथ क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करेंगे। प्रवक्ता ने जोर देकर कहा कि भारत सरकार अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा और सभी क्षेत्रों में व्यापक राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इस समझौते के संभावित परिणामों का गहन विश्लेषण किया जाएगा ताकि भारत की सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता पर इसका प्रभाव समझा जा सके। यहां दिलचस्प बात ये है कि भारत को इस समझौते की जानकारी पहले से थी। माना जा रहा है कि या तो खुद सऊदी अरब ने भारत को जानकारी दी या फिर किसी अन्य देश ने बताया है। हालांकि इस संदर्भ में कोई आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है।

रिपोर्ट के अनुसार, प्रधानमंत्री कार्यालय की ओर से एक बयान में कहा गया है कि समझौते पर हस्ताक्षर की घोषणा की गई, जिसमें कहा गया कि दोनों में से किसी एक देश के खिलाफ किसी भी तरह के आक्रमण को दोनों देशों पर हमला माना जाएगा। पाकिस्तान और सऊदी अरब ने बुधवार को एक रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए जिसके तहत दोनों में से किसी एक देश पर आक्रमण को दोनों देशों पर हमला माना जाएगा। इस 'रणनीतिक पारस्परिक रक्षा समझौते' पर पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की रियाद की यात्रा के दौरान हस्ताक्षर किए गए। यहां अल-यममाह पैलेस में क्राउन प्रिंस और प्रधानमंत्री मोहम्मद बिन सलमान ने उनका स्वागत किया। हालांकि, सऊदी अरब और पाकिस्तान के बीच इस रक्षा समझौते की विशिष्ट शर्तों और दायरे के बारे में अभी तक कोई आधिकारिक विवरण सामने नहीं आया है। हस्ताक्षर समारोह के बाद जारी एक संयुक्त

वक्तव्य में कहा गया, लगभग आठ दशकों से चली आ रही साझेदारी को आगे बढ़ाते हुए तथा भाईचारे, इस्लामी एकजुटता और साझा रणनीतिक हितों के बंधनों पर आधारित दोनों पक्षों ने रणनीतिक पारस्परिक रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए। इससे पहले सऊदी राजधानी पहुंचने पर प्रधानमंत्री शरीफ का स्वागत रियाद के उप-गवर्नर मुहम्मद बिन अब्दुलरहमान बिन अब्दुलअजीज ने किया।

9 दिनों में सपा के वरिष्ठ नेता आजम खान को तीसरी बार मिली राहत की खबर

लखनऊ (एजेंसी)। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता और पूर्व मंत्री, आजम खान, को हाल ही में कई कानूनी मामलों में राहत मिली है। उन्हें रामपुर के चर्चित क्वालिटी बार कब्जा केस में इलाहाबाद हाईकोर्ट से जमानत मिल गई है। पिछले 9 दिनों में यह तीसरी बार है जब उन्हें किसी अहम मामले में राहत मिली है। इसके पहले 10 सितंबर को डूंगरपुर मामले में हाई कोर्ट ने जमानत मंजूर की। इसके बाद 16 को छजलैट प्रकरण और रास्ता जाम करने के मामले में रामपुर की अदालत ने बरी किया। और फिर 18 को क्वालिटी बार केस में हाई कोर्ट से जमानत मिली। इस जमानत के साथ, उन पर दर्ज करीब सभी मुकदमों में जमानत मिल चुकी है, जिससे उनके जल्द ही जेल से बाहर आने की संभावना बढ़ी है। बात दें कि क्वालिटी बार केस 2008 का है, जिसमें आजम खान पर रामपुर में एक बार की जमीन पर अवैध कब्जे का आरोप था। मामले में 2019 में एफआईआर दर्ज हुई थी, जिसमें पहले उनकी पत्नी तजीन फातिमा और बेटे अब्दुल्ला आजम को नामजद किया गया था, और बाद में आजम को भी आरोपी बनाया गया। रामपुर की एमपी-एमएलए कोर्ट द्वारा जमानत याचिका खारिज होने के बाद, उन्होंने हाई कोर्ट में अपील की थी, जहाँ उनके वकील ने राजनीतिक बदले की भावना से फंसाए जाने का तर्क दिया। सभी पक्षों को सुनने के बाद, कोर्ट ने यह फैसला सुनाया।

प्राकृतिक आपदा में नदारत रहीं सांसद कंगना बोलीं- पीएम ने दिए 10 हजार करोड़

मंडी (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश में मंडी संसदीय क्षेत्र में आपदा के दौरान नदारद भाजपा सांसद और अभिनेत्री कंगना रनौत ने बड़ा बयान दिया है। पीएम मोदी के जन्मदिन पर मंडी में आयोजित यज्ञ में पहुंची कंगना रनौत ने हिमाचल प्रदेश के अगले सीएम की दावेदारी पर बड़ा बयान दिया है।

मंडी शहर के सिद्धकाली माता मंदिर में महायज्ञ करवाया गया है। इसमें पूर्णाहुति डालने के बाद सांसद कंगना ने कहा कि केंद्र में 2014 से पहले रही सरकारों ने हमेशा हिमाचल को नजर अंदाज किया है, जबकि पीएम मोदी अब तक विभिन्न किस्तों के माध्यम से 10 हजार करोड़ रुपये दे चुकें।

आपदा में सांसद कंगना रनौत की गैर मौजूदगी को लेकर पूछे गए सवाल पर कंगना ने कहा कि हिमाचल में हीन भावना के ग्रस्ति कुछ लोग उनके बारे में ही जनता को भड़काने में लगे हुए हैं। जबकि वह आज दूसरी बार आपदा के दौरान मंडी क्षेत्र की जनता के बीच पहुंची हैं। सांसद कंगना ने पीएम मोदी की ओर से देश हित में किए अनकों कार्यों की भी जमकर सराहना की और कहा कि मोदी है तो ही मुमकिन है। उन्होंने इस अवसर पर केंद्र सरकार की योजना एक पेड़ मां के नाम लगाने की अपने संसदीय क्षेत्र की जनता से आह्वान भी किया। अब गुरुवार को कंगना रनौत मनाली विधानसभा क्षेत्र का दौर करेंगी। हिमाचल प्रदेश में सीएम बनने के सवाल पर सांसद कंगना ने कहा कि अब उन्हें समझ आ गई है कि राजनीति एक समाजसेवा का काम है और इसमें पर्सनल लाभ जैसा कुछ नहीं है और ऐसे में पीएम मोदी के आशीर्वाद से वह किसी भी काम को करने के लिए सक्षम हैं और कंगना अगर किसी काम को करने की ठान ले तो वो उसे करके दिखाती हैं। फिर चाहे बात फिल्मों की ही क्यों ना हो। मंडी में भाजपा के द्वारा पीएम मोदी के जन्म दिवस पर इंदिरा मार्केट में स्थित माता सिद्ध काली माता मंदिर में जहां महायज्ञ का आयोजन किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जन्मदिन पर मंडी में भाजपा के द्वारा पीएम मोदी के जन्म दिवस पर इंदिरा मार्केट में स्थित माता सिद्ध काली माता मंदिर में जहां महायज्ञ का आयोजन किया, वहीं प्राकृतिक आपदाओं से जूझ रहे संसार के लिए विश्व कल्याण की कामना भी की। मंडी में आयोजित इस महायज्ञ को मां त्रिपुर सुंदरी धाम मणिकूट पर्वत ऋषिकेश से आए श्री श्री 1008 श्री हरिओम महाराज व उनके साथ आए अन्य साधु संतों ने संपन्न करवाया। इस महायज्ञ में पूर्व सीएम व नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर, सांसद कंगना रनौत, सर्व देवता समिति अध्यक्ष शिवपाल शर्मा सहित दर्जनों लोगों ने भाग लेकर पूर्णाहुति डाली और विश्व कल्याण की कामना की।

सेल ने मिजोरम बैराबी-सैरांग रेलवे परियोजना के लिए 15,000 टन इस्पात उत्पादों की आपूर्ति की

एजेंसी

नई दिल्ली : सार्वजनिक क्षेत्र की अग्रणी इस्पात उत्पादक और महारत्न कंपनी, स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) ने मिजोरम में 51 किलोमीटर लंबी बैराबी-सैरांग रेलवे परियोजना के लिए लगभग 15,000 मीट्रिक टन उच्च-गुणवत्ता वाले इस्पात उत्पादों की आपूर्ति की है। इस महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचा परियोजना का उद्घाटन भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 13 सितंबर, 2025 को किया था। इस परियोजना के लिए, सेल ने अपने भिलाई इस्पात संयंत्र से लगभग 10,000 मीट्रिक टन उच्च-श्रेणी के आर-260 प्राइम रेल की आपूर्ति की है। इसके अतिरिक्त, सेल ने अपने बोकारो, राउरकेला, भिलाई, दुगार्पुर और बर्नपुर इस्पात संयंत्रों से प्लेट, टीएमटी और स्ट्रक्चरल स्टील सहित लगभग 5,000

मीट्रिक टन अन्य आवश्यक इस्पात उत्पादों की आपूर्ति की है। बैराबी-सैरांग परियोजना, देश में अंतर-क्षेत्रीय संपर्क बढ़ाने की भारत की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। यह व्यापक आपूर्ति राष्ट्र-निर्माण में सेल की विश्वसनीय भागीदारी को रेखांकित करती है, जो महत्वपूर्ण अवसंरचना के लिए आवश्यक मजबूती और गुणवत्ता प्रदान करती है। सेल बुनियादी ढाँचे, रेलवे, बिजली, जलविद्युत परियोजनाओं और सीमा संपर्क जैसे प्रमुख क्षेत्रों के लिए इस्पात की आपूर्ति करके पूर्वोत्तर भारत के विकास में लगातार महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। बैराबी-सैरांग रेलवे परियोजना में कंपनी का योगदान, भारत की ऐतिहासिक बुनियादी ढाँचागत परियोजनाओं - जिनमें चिनाब रेलवे पुल, जिरीबाम-तुपुल-इम्फाल ब्रॉड गेज परियोजना, अटल सुरंग, बांद्रा-वर्ली सी लिंक, और ढोला सादिया एवं बोगीबील पुल आदि शामिल हैं - को सशक्त बनाने में सेल की स्थायी विरासत को और सुदृढ़ करता है।

एकजुट होने में जुटे इस्लामिक देश, बात होती रही उधर एक हो गए पाकिस्तान और सऊदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। हाल ही में 60 इस्लामिक देशों की कतर में बैठक हुई थी। जिसमें मुख्य एजेंडा था एकजुट होने का। इस दौरान पाकिस्तान, तुर्की जैसे मुसलमान देशों ने इस्लामिक नाटो संगठन बनाने का सुझाव दिया था। यह अमेरिका के नेतृत्व वाले नाटो की तर्ज पर था, जिसके तहत यूरोप के कई देश आते हैं और उन्हें सुरक्षा की गारंटी मिली है। इसी तरह मुसलमान देशों को सुरक्षा की गारंटी देने के नाम पर ऐसे संगठन का प्रस्ताव रखा गया। मीटिंग में इस पर कोई ठोस पहल होती नहीं दिखी, लेकिन पाकिस्तान और सऊदी अरब ने इस ओर कदम जरूर बढ़ा दिए हैं।

ऐसे में पाकिस्तान ने सऊदी अरब के साथ सुरक्षा समझौता करके खुद को इस्लामिक देशों के बीच मजबूत करने की कोशिश की है। लंबे समय से पाकिस्तान की यह कोशिश रही है कि कश्मीर के मसले को इस्लाम के नाम पर बढ़ावा दिया जाए और फिर सऊदी अरब, तुर्की, मलयेशिया जैसे देशों को साथ लिया जाए। हालांकि दिलचस्प बात यह है कि सऊदी अरब ने इस समझौते के साथ ही भारत के साथ अपने रिश्तों पर भी बात की है। रिपोर्ट के मुताबिक एक सऊदी अधिकारी ने कहा कि भारत के साथ हमारे रिश्ते बहुत अच्छे हैं। ऐतिहासिक स्तर पर हमारी दोस्ती है। हम क्षेत्रीय शांति और स्थिरता के हित में रिश्ते मजबूत करते रहेंगे। दोनों देशों ने एक सुरक्षा समझौता किया है, जिसके तहत किसी एक देश पर हमले को दोनों पर अटैक माना जाएगा। इस तरह दोनों देशों ने एक दूसरे को सुरक्षा गारंटी दी है और आड़े वक्त में खड़ा रहने का संकल्प जताया है। साफ है कि एक बड़े इस्लामिक नाटो की तरफ कदम नहीं बढ़े हैं, लेकिन उसके ही छोटे संस्करण पर पाकिस्तान और सऊदी अरब ने मुहर लगाई है। भारत के लिए यह खबर मायने रखती है क्योंकि पाकिस्तान उसका चिर प्रतिद्वंद्वी रहा है। मई में ही दोनों देशों के बीच 4 दिन की सैन्य झड़प चली थी। इसके अलावा भी अक्सर तनाव बना रहता है और दोनों देश जंग के मुहाने पर कभी भी रहते हैं। हालांकि पाकिस्तान के पास जो परमाणु हथियार हैं, उनके इस्तेमाल को लेकर इस समझौते में कोई बात नहीं की गई है। बता दें कि 1967 से ही सऊदी अरब और पाकिस्तान के बीच रक्षा करार रहे हैं। पाकिस्तान की सेना ने सऊदी अरब के 8200 सैनिकों को अपने यहां प्रशिक्षित भी किया है। माना जा रहा है कि कुछ और मुसलमान देशों के बीच भी ऐसे करार हो सकते हैं।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित।
संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, कार्यकारी संपादक- भीष्म सिंह, प्रबंध संपादक- पंकज कु. सिंह*, प्रधान संपादक- देवेंद्र सिंह (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह.** 9334331934, 7903538992, 9570107019, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**